# Daily THE PHOTON NEWS

सच के हक में...

Published from Ranchi

Ranchi ● Tuesday, 20 June 2023 ● Year : 01 ● Issue : 154 ● Ranchi Edition ● Page : 12 ● Price : 3 ● www.thephotonnews.com

E-Paper : epaper.thephotonnews.com


**सुविचार**

किसी की सलाह से रास्ते जरूर मिल जाते हैं, लेकिन मंजिल सिर्फ खुद की मेहनत से ही मिलती हैं।

मैं शादी करना चाहती हूं : कंगना

**SHARE**

| | | |
|---|---|---|
| सेंसेक्स | : | 63,168.30 |
| निफ्टी | : | 18,755.45 |

**SARAFA**

| | | |
|---|---|---|
| सोना | : | 5,645 |
| चांदी | : | 79.00 |

(नोट : सोना 22 कैरेट प्रति ग्राम)

**BRIEF NEWS**

### चांद नजर आया, ईद उल अजहा 29 को

**RANCHI :** 29 जीकादह 1444 हिजरी व 19 जून को जिल हिज्जह महीने का चांद देश के विभिन्न क्षेत्रों में नजर आया है। 20 जून को जिल हिज्जह महीने की पहली तारीख है और 29 जून को 10 जिल हिज्जह यानी ईद उल अजहा है। यही फैसला मरकजी दारूल कजा इमारत शरिया फुलवारी शरीफ पटना का है। यह जानकारी दारूल कजा इमारत शरिया रांची के मौलाना अबु दाउद कास्मी ने दी है।

### आईपीएस रवि सिन्हा होंगे नए RAW CHIEF

**NEW DELHI :** भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) के वरिष्ठ अधिकारी रवि सिन्हा को सोमवार को रिसर्च एंड एनालिसिस विंग (रॉ) का प्रमुख बनाया गया है। कैबिनेट की अपॉइंटमेंट कमेटी ने सिन्हा के नाम को मंजूरी दी है। सिन्हा सामंत कुमार गोयल की जगह लेंगे। सामंत का रॉ चीफ का कार्यकाल 30 जून को पूरा हो रहा है। रवि सिन्हा 1988 बैच के छत्तीसगढ़ कैडर के आईपीएस अधिकारी हैं। वह वर्तमान में मंत्रिमंडल सचिवालय में विशेष सचिव के रूप में कार्यरत हैं। केन्द्र सरकार के एक आदेश में कहा गया है कि मंत्रिमंडल की नियुक्ति समिति ने रवि सिन्हा की दो साल के कार्यकाल के लिए रिसर्च एंड एनालिसिस विंग (रॉ) के सचिव के रूप में नियुक्ति को मंजूरी दे दी है। वह 30 जून से अगले दो साल तक के लिए रॉ के चीफ रहेंगे। आईपीएस रवि सिन्हा मूल रूप से बिहार के भोजपुर जिले से आते हैं।

### पति-पत्नी ने डेड बॉडी पार्ट्स बेच करोड़ों कमाए

**NEW DELHI :** अमेरिका की प्रतिष्ठित हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में एक चौंकाने वाला खुलासा हुआ है। यहां कई वर्षों से मुर्दों की खरीद-फरोख्त हो रही थी। इस काम में यहीं का एक स्टाफ कपल शामिल था। पति-पत्नी हार्वर्ड के मेडिकल स्कूल के मुर्दाघर से डेड बॉडीज के अंग चुराकर बेच रहे थे। लेकिन अब उनका भंडाफोड़ हो गया है। दोनों पर मुकदमा चलाया जा रहा है। इसके लिए उन्हें 15 साल की सजा हो सकती है। एजेंसी के मुताबिक सेड्रिक लॉज नाम का शख्स हार्वर्ड मेडिकल स्कूल के मुर्दाघर में मैनेजर था। यहां पूरे अमेरिका से दान किए मुर्दों को लाया जाता था। यहीं पर सेड्रिक अपनी पत्नी डेनिश के साथ मिलकर डेड बॉडीज के पार्ट्स चुरा लेता था। उन बॉडी पार्ट्स को पति-पत्नी ऑनलाइन बेचते थे।

## रथ यात्रा आज, चौतरफा होगी जय जगन्नाथ की गूंज

**RANCHI :** पंद्रह दिनों के एकांतवास के बाद सोमवार को प्रभु जगन्नाथ स्वामी, माता सुभद्रा व बलराम का नेत्रदान किया गया। फूलों से तीनों विग्रहों का भव्य शृंगार किया गया था। वैदिक मंत्रों से अनुष्ठान किया गया। 108 दीपों से आरती की गई। भगवान को भोग लगाया गया। पंद्रह दिनों बाद सैकड़ों भक्तों ने भगवान के दर्शन किए। राज्य की खुशहाली की कामना की। मंगलवार को भव्य रथयात्रा निकाली जाएगी। पेज 3 व 5 भी देखें।

## झारखंड पहुंचा MONSOON, कई जिलों में बारिश

### प्रचंड गर्मी से लोगों को मिली राहत, कई जगहों पर तेज आंधी भी चली

**PHOTON NEWS RANCHI :** झारखंड में सोमवार दोपहर बाद मानसून प्रवेश कर गया। संताल परगना के रास्ते दक्षिण पश्चिम मानसून का राज्य में आगमन हो गया है। मानूसन गोड्डा, साहिबगंज, पाकुड़ और दुमका के कुछ स्थानों में प्रवेश किया। इसके साथ ही मौसम में भी बदलाव दिखना शुरू हो गया। राजधानी रांची समेत अन्य कई जिलों में बूंदा-बांदी से लोगों को भीषण गर्मी से राहत मिली है। वहीं, लातेहार में तेज आंधी के साथ बारिश शुरू हो गयी। तेज आंधी के कारण कई पेड़ गिरे हैं। मौसम केंद्र की मानें, तो 20 जून से राज्य के कई हिस्सों में हवा

और बारिश हो सकती है। वहीं, हवा की गति 40 से 50 किलोमीटर प्रति घंटे भी हो सकती है। बारिश और हवा के कारण अधिकतम तापमान में भी गिरावट आ सकती है। वहीं, मौसम केंद्र ने 20 जून को राज्य में कहीं-कहीं गर्जन और वज्रपात के साथ तेज सतही हवा चलने की संभावना जतायी है। वहीं, 21 जून को राज्य के उत्तर पूर्वी भाग यानी देवघर, धनबाद, दुमका, गिरिडीह, गोड्डा, जामताड़ा, पाकुड़ और साहिबगंज तथा दक्षिण-पूर्वी भागों में कहीं-कहीं भारी बारिश की संभावना है।

### बिपरजॉय से राजस्थान के 4 जिलों में बाढ़

**JAIPUR :** बिपरजॉय तूफान के कारण राजस्थान में भारी बारिश का दौर जारी है। जयपुर मौसम केंद्र ने सोमवार को सवाई माधोपुर, बूंदी जिलों में भारी से अति भारी बारिश होने की आशंका जताते हुए रेड अलर्ट जारी किया है। वहीं कोटा, करौली, बारां, भीलवाड़ा और टोंक के लिए ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। पिछले 24 घंटों में राज्य के कई जिलों में बारिश हुई। कई स्थानों पर 300 मिमी यानी 12 इंच तक बारिश रिकॉर्ड की गई।

# जमीन पर दिखे कुओं का निर्माण, कागज पर नहीं

### समीक्षा बैठक में बोले सीएम हेमंत, लापरवाही बर्दाश्त नहीं

**PHOTON NEWS RANCHI :** मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा कि बिरसा सिंचाई कूप योजना में धरातल में कुआं दिखे, कागजी खेल नहीं। मुख्यमंत्री ने सोमवार को ग्रामीण विकास विभाग के कार्यों की समीक्षा के दौरान ये बात कही। मुख्यमंत्री ने कहा इसमें लापरवाही ठीक नहीं। मालूम हो कि राज्य सरकार एवं मनरेगा के अभिसरण से बिरसा सिंचाई कूप संवर्धन योजना के तहत कुल एक लाख कूपों का निर्माण विभिन्न चरणों में किया जाना है लेकिन मुख्यमंत्री इसके कार्य प्रगति को लेकर खुश नजर नहीं आए और अधिकारियों को जल्द से जल्द योजना का लाभ ग्रामीणों को देने का आदेश दिया है। वर्तमान वित्तीय वर्ष में इस योजना का शुभारंभ किया गया है, ताकि जल संरक्षण को बल मिल सके एवं वाटर हार्वेस्टिंग के प्रति लोगों में जागरूकता का संचार हो सके।

- बिरसा सिंचाई कूप योजना के तहत प्रथम चरण में 30 व द्वितीय चरण में 70 हजार कूप का होगा निर्माण
- 2023-24 में 50 हजार व 15 नवंबर 2024 तक 50 हजार कूप का निर्माण कार्य पूर्ण करेगी सरकार

**दो चरण में कुआं निर्माण का लक्ष्य :** योजना के तहत प्रथम चरण में 30 एवं द्वितीय चरण में 70 हजार कूप का निर्माण किया जाना है। सरकार वित्तीय वर्ष 2023-24 में 50 हजार एवं 15 नवंबर 2024 तक शेष 50 हजार कूप का निर्माण कार्य पूर्ण करेगी। योजना में बिरसा हरित ग्राम, कृषि कार्य से संबंधित लाभुक, बाबा साहेब आंबेडकर आवास योजना के लाभार्थी को प्राथमिकता देने की योजना है। साथ ही, निर्मित कुओं की स्थिरता एवं उपयोगिता बनाए रखने के लिए कुआं के आसपास जल संचयन और जल एवं मृदा संरक्षण के कार्य बड़े पैमाने पर करने का निर्देश है।

### एक लाख कुआं निर्माण का लक्ष्य

प्रथम चरण में अबतक 16936 कुआं की स्वीकृति मिल चुकी है, 3822 कुआं का निर्माण कार्य जारी है। सबसे अधिक गिरिडीह में 8386, रांची में 7314, पलामू के 6460, हजारीबाग में 5973, पश्चिमी सिंहभूम में 5212, दुमका में 5022, बोकारो के 4876, देवघर में 4729, गोड्डा में 4608, पूर्वी सिंहभूम में 4291, साहेबगंज में 3949, गुमला में 3876, धनबाद में 3901, चतरा में 3706, पाकुड़ में 3120, जामताड़ा में 2877, लातेहार में 2804, कोडरमा में 2560, रामगढ़ में 2438, सिमडेगा में 2292 और लोहरदगा में 1606 कुआं निर्माण लक्ष्य 15 नवंबर 2024 तक रखा गया है।

### पश्चिमी सिंहभूम में पांच IED व चार स्पाइक होल मिले

**CHAIBASA :** पश्चिमी सिंहभूम (चाईबासा) जिले के टोन्टो थाना पटातारोब गांव से तुम्बाहाका जाने वाले रास्ते के आस-पास जंगली - पहाड़ी क्षेत्र से पांच आईईडी और चार स्पाइक होल बरामद किया है। बरामद आईईडी दो-दो किलो दो, तीन-तीन किलो का दो, दस किलो का एक आईईडी और चार स्पाइक होल शामिल है। एसपी आशुतोष शेखर ने सोमवार को बताया कि गत 27 जून से एक अभियान टोन्टो थाना क्षेत्र के तुम्बाहाका ,अंजदबेड़ा के सीमावर्ती क्षेत्र और गोईलकेरा थाना के कुईड़ा एवं मारादिरी गांव के सीमावर्ती क्षेत्र में प्रारंभ किया गया है। इसी क्रम में सर्च अभियान के दौरान सुरक्षा बलों को निशाना बनाने के उद्देश्य से लगाए गए पांच आईईडी और चार स्पाइक हॉल बरामद किया। बरामद बम को डिफ्यूज कर दिया गया है। इलाके में सर्च अभियान जारी है।

## छवि रंजन की गिरफ्तारी पर हाईकोर्ट ने मांगा जवाब

### ईडी को नोटिस, अगली सुनवाई 12 जुलाई को

**SPECIAL REPORTER RANCHI :** झारखंड हाई कोर्ट के जस्टिस गौतम कुमार चौधरी की बेंच में सोमवार को बरियातू रोड स्थित सेना के कब्जे वाली 4.55 एकड़ जमीन समेत अन्य जमीनों की अवैध खरीद-बिक्री मामले में निलंबित आईएएस छवि रंजन की ओर से गिरफ्तारी को चुनौती देने वाली याचिका पर सुनवाई हुई। मामले में कोर्ट ने ईडी से जवाब मांगा है। अगली सुनवाई 12 जुलाई को होगी।

सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ता छवि रंजन की ओर से कोर्ट को बताया गया कि इस मामले में उनकी कोई संलिप्तता नहीं है, इसलिए ईडी द्वारा उन्हें गिरफ्तार किया जाना गलत है। उनके खिलाफ दर्ज केस को निरस्त किया जाए। मामले को लेकर बरियातू थाना में कांड संख्या 14/2022 दर्ज किया गया है। ईडी ने भी इस मामले में ईसीआईआर 1/2023 दर्ज कर अनुसंधान शुरू किया है। इस मामले में रांची के पूर्व डीसी छवि रंजन और बड़गाई के राजस्व कर्मचारी सहित 18 लोगों के 22 ठिकानों पर 13 अप्रैल को ईडी ने छापेमारी की थी। इस दौरान बड़ी संख्या में जमीन के फर्जी डीड, मुहर एवं अन्य कागजात ईडी को मिले थे। इसके बाद 14 अप्रैल को ईडी ने सात आरोपितों को गिरफ्तार किया था।

### श्रम मंत्री के डिस्चार्ज पिटीशन पर सुनवाई एक जुलाई को

राज्य के श्रम मंत्री और पूर्व कृषि मंत्री सत्यानंद भोक्ता से जुड़े बीज खरीद घोटाला मामले में एसीबी के विशेष न्यायाधीश प्रकाश झा की अदालत में सोमवार को डिस्चार्ज पिटिशन पर सुनवाई हुई। सत्यानंद भोक्ता की ओर से साक्ष्य के रुप में आरटीआई से प्राप्त दस्तावेज को कोर्ट में प्रस्तुत किया गया। अदालत ने मामले में अगली सुनवाई की तिथि एक जुलाई निर्धारित की है। वर्ष 2004 से 2007 के बीच 46.10 करोड़ रुपये से अधिक का बीज घोटाला हुआ था। इस दौरान कुछ संस्थाओं से गेहूं, चना और दूसरे अनाज के बीज की खरीद के नाम पर कथित तौर पर गबन हुआ था।

## मणिपुर से SOO को वापस कराने की मुहिम

### मंत्रियों, विधायको व सांसदों का दल रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह से मिला

**AGENCY NEW DELHI :** मणिपुर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और नेशनल पीपुल्स पार्टी (एनपीपी) के 30 सदस्यीय मंत्रियों, सांसदों और विधायकों के एक प्रतिनिधिमंडल ने सोमवार को दिल्ली में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह से मुलाकात कर सस्पेंशन ऑफ ऑपरेशंस (एसओओ) को वापस लेने की मांग की। सोमवार दोपहर प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह से मुलाकात की और राज्य के जमीनी नियमों का उल्लंघन करने वाले विद्रोही समूहों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की। इसके अलावा

उन्होंने एसओओ के निलंबन को वापस लेने और उग्रवादियों को उनके निर्धारित शिविर में वापस लाने की व्यवस्था करने का अनुरोध किया। प्रतिनिधिमंडल ने राजनाथ सिंह से मुलाकात के दौरान मणिपुर हिंसा पर काबू पाने के लिए रक्षा मंत्री के सामने कई सूत्र पेश किए। उन्होंने केंद्र से राज्य में जारी हिंसा को रोकने और किसी भी कीमत पर राज्य की क्षेत्रीय अखंडता को बनाए रखते हुए शांतिपूर्ण माहौल बहाल करने की मांग की। केंद्रीय रक्षा मंत्री से मिलने वाले और आज शाम केंद्रीय वित्त मंत्री से मिलने वाले मंत्रियों-सांसदों-विधायकों में मणिपुर विधानसभा अध्यक्ष थोकचम सत्यब्रत सिंह, मंत्री कंथौजम गोविंददास, मंत्री डॉ. सपम रंजन सिंह, मंत्री हेखम डिंगो सिंह, मंत्री थौनाउजम वसंतकुमार सिंह, सांसद महाराज सनजाओबा, विधायक राजकुमार इमो सिंह, एस प्रेमचंद्र सिंह, नलिनी इरेनबाम, सपम कुंजकेश्वर सिंह, के

### जमीन घोटाला मामले में दायर आरोप पत्र पर ईडी कोर्ट ने लिया संज्ञान

**RANCHI :** बरियातू रोड स्थित सेना के कब्जे वाली 4.55 एकड़ जमीन सहित अन्य जमीन की खरीद बिक्री में फजीर्वाड़ा मामले ने ईडी द्वारा रांची के पूर्व डीसी सहित 10 के खिलाफ दायर चार्जशीट पर ईडी कोर्ट ने संज्ञान लिया है। अब मामले में आरोपियों के खिलाफ ईडी कोर्ट में मुकदमा चलेगा अगली सुनवाई 1 जुलाई को होगी। ईडी ने 12 जून को मामले में रांची के पूर्व डीसी छवि रंजन समेत 10 आरोपियों के खिलाफ आरोप पत्र दाखिल किया है। मामले में छवि रंजन, कोलकाता व्यवसायी अमित अग्रवाल एवं दिलीप घोष समेत 10 लोगों को ईडी गिरफ्तार किया था।

## रिम्स में EYE कैंसर का सफल ऑपरेशन

### डेढ़ साल से था ट्यूमर, चली गई थी आंख की रौशनी

**PHOTON NEWS RANCHI :** रिम्स के कैंसर सर्जरी विभाग ने नेत्र कैंसर का सफल ऑपरेशन कर नया कीर्तिमान स्थापित किया है। चतरा निवासी रोगी कपिल भुइयां को पिछले डेढ़ वर्ष से दायीं आंख में ट्यूमर था। जिसका आकार बढ़ता जा रहा था, हालत ऐसी हो गई थी कि अनेक डॉक्टरों से परामर्श लेने के बाद भी कोई सुधार नहीं हुआ। इन सब के बीच आंख की रोशनी भी चली गई, निराश होकर रिम्स के कैंसर विशेषज्ञ डॉ अजीत कुमार कुशवाहा और डॉ रोहित कुमार झा की देखरेख में उसे रिम्स के कैंसर विभाग में भर्ती किया गया। सोमवार को मरीज का सफल ऑपरेशन कर दांयी आंख का ट्यूमर निकाला गया। इस जटिल आपरेशन में कैंसर सर्जरी टीम से डॉ रोहित कुमार झा ने योगदान दिया। मालूम हो कि रिम्स का कैंसर सर्जरी विभाग इस तरह के जटिल आपरेशन पहले भी किया है। ब्लैक फंगस के मरीजों की भी सर्जरी की गई है। रिम्स अधीक्षक डॉ हीरेंद्र बिरुआ ने कहा है कि चार वर्ष पहले स्थापित हुए इस विभाग ने अनेक कैंसर पीड़ितों को अपने प्रदेश में आशा की एक नयी किरण प्रदान की है, जिनके पास पहले अच्छे इलाज की खोज में राज्य से पलायन करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।

### टीम इंडिया के स्टार क्रिकेटर की इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट से कमाई 8.9 करोड़

## कोहली की NETWORTH ₹1000 करोड़ के पार

**PHOTON NEWS DESK :** टीम इंडिया के स्टार बैटर विराट कोहली की नेटवर्थ 1000 करोड़ रुपए के पार पहुंच गई है। 34 साल के कोहली की नेटवर्थ को लेकर यह खुलासा स्टॉक ग्रो कंपनी ने किया है। रिपोर्ट के मुताबिक, इंस्टाग्राम पर 253 मिलियन (25 करोड़ 30 लाख) फॉलोअर्स वाले कोहली की नेटवर्थ 1050 करोड़ रुपए हो गई है।

**बीसीसीआई की कॉन्ट्रैक्ट लिस्ट में 'ए+' कैटेगरी में**

पूर्व भारतीय कप्तान कोहली को भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने अपनी कॉन्ट्रैक्ट लिस्ट में 'ए+' कैटेगरी में जगह दी है। कोहली को बीसीसीआई से सालाना 7 करोड़ रुपए कॉन्ट्रैक्ट के तहत मिलते हैं। इसके अलावा बीसीसीआई उन्हें एक टेस्ट के लिए 15 लाख, एक वनडे के लिए छह लाख और एक टी-20 मैच खेलने के लिए तीन लाख रुपए देता है।

**कोहली 114 करोड़ के दो घरों और 31 करोड़ रुपए की कारों के मालिक**

कोहली इंडियन प्रीमियर लीग टीम रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु टीम का हिस्सा हैं। आरसीबी उन्हें सालाना 15 करोड़ रुपए भुगतान करता है। कोहली का मुंबई और गुरुग्राम में घर हैं। मुंबई वाले घर की कीमत 34 करोड़ और गुरुग्राम वाले घर की कीमत 80 करोड़ रुपए है। कोहली के पास 31 करोड़ रुपए की लग्जरी कारों का कलेक्शन है।

**ट्विटर पर प्रति पोस्ट 2.5 करोड़ रुपए करते हैं चार्ज**

सोशल मीडिया की बात करें तो इंस्टाग्राम पर कोहली एक पोस्ट के लिए 8.9 करोड़ रुपए चार्ज करते हैं। वहीं, ट्विटर पर वे प्रति पोस्ट 2.5 करोड़ रुपए लेते हैं। कोहली के इंस्टाग्राम अकाउंट पर 25 करोड़ से ज्यादा (253 मिलियन) फॉलोअर्स हैं। वे इंस्टाग्राम अकाउंट पर इतने ज्यादा फॉलोअर्स वाले पहले एशियाई भी हैं।

**18 से अधिक ब्रांड्स का करते हैं विज्ञापन**

कोहली ब्रांड एंडोर्समेंट से सालाना करोड़ों रुपए कमाते हैं। कोहली जितनी कमाई क्रिकेट से करते हैं, उससे चार गुना ज्यादा ऐड, ब्रांड एंडोर्समेंट और स्टार्टअप्स से कर रहे हैं। उन्होंने सात स्टार्टअप में निवेश किया है, जिसमें ब्लू ट्राइब, यूनिवर्सल स्पोर्ट्सबिज, एमपीएल और स्पोर्ट्स कॉन्वो शामिल हैं।

### इंडिगो ने 500 एयरबस ए320 एयरक्राफ्ट का दिया ऑर्डर

**NEW DELHI :** इंडिगो ने सोमवार को 500 एयरबस ए320 फैमिली एयरक्राफ्ट खरीदने का ऐलान किया है। इसके साथ ही इंडिगो एक बार में इतना बड़ा ऑर्डर देने वाली पहली भारतीय एयरलाइन बन गई है। इन एयरक्राफ्ट्स की डिलीवरी 2030 से 2035 के बीच होने की उम्मीद है। कॉमर्शियल एविएशन हिस्ट्री का यह अब तक का सबसे बड़ा ऑर्डर है। इंडिगो से पहले यह रिकॉर्ड एअर इंडिया के नाम था। बताया जा रहा है कि 500 एयरबस ए320 फैमिली एयरक्राफ्ट खरीदने के लिए इंडिगो 50 अरब डॉलर यानी 4.09 लाख करोड़ रुपए खर्च करेगी।

## भारत ने वियतनाम को दिया स्वदेशी मिसाइल

### रक्षा मंत्री ने किया उपहार देने का ऐलान

**AGENCY NEW DELHI :** भारत ने वियतनाम पीपुल्स नेवी को स्वदेश निर्मित मिसाइल कार्वेट आईएनएस कृपाण उपहार में देने की घोषणा की है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने सोमवार को नई दिल्ली में वियतनाम के राष्ट्रीय रक्षा मंत्री जनरल फान वान गैंग के साथ द्विपक्षीय बातचीत के बाद यह ऐलान किया। वियतनाम को उपहार में दिया गया युद्धपोत आईएनएस कृपाण मिसाइल जलपोत के खुखरी वर्ग का तीसरा जहाज है। वियतनाम को उपहार में दिया गया युद्धपोत आईएनएस कृपाण मिसाइल जलपोत के खुखरी वर्ग का तीसरा जहाज है और इसका निर्माण गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स ने किया था। मध्यम आकार के इस युद्धपोत के शस्त्रागार में सतह से सतह पर मार करने वाली मिसाइलें, एक मध्यम दूरी की बंदूक, एंटी एयरक्राफ्ट शोल्डर-लॉन्च मिसाइल और क्लोज इन वेपन सिस्टम शामिल हैं। यह सतह और हवाई निगरानी राडार के साथ-साथ बंदूकों के लिए अग्नि नियंत्रण राडार से लैस है। इसमें लगी मिसाइल 85 किमी. तक के लक्ष्य को भेद सकती है, जबकि इसकी एंटी-एयरक्राफ्ट गन 15 किमी. की रेंज में प्रति मिनट 5000 राउंड फायर कर सकती है।

# सीएम हेमंत सोरेन ने की पंचायत स्तरीय योजना की शुरूआत

PHOTON NEWS CHATRA

चतरा जिले से झारखंड सरकार के ड्रीम प्रोजेक्ट पंचायत स्तर दवा दुकान योजना की सौगात मिली है। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने सोमवार को ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षित युवाओं को पंचायतों में दवा दुकान संचालित करने का लाइसेंस सौंप कर इस योजना का शुभारंभ किया। इस मौके पर सीएम ने करीब तीन अरब 78 करोड़ रुपये की 219 योजनाओं का उद्घाटन एवं शिलान्यास किया। वहीं, लाभुकों के बीच दो करोड़ 81 लाख रुपये की परिसंपत्ति का वितरण भी किया। उन्होंने कहा कि अब गांव-गांव में भी दवा दुकान खोले जाएंगे। यहां जरूरी और अनिवार्य दवाएं उपलब्ध होंगी, ताकि रिमोट और दूरदराज में रहने वाले ग्रामीणों को दवा के लिए प्रखंड और जिले की दौड़ नहीं लगानी पड़ेगी।

राज्य को बेहतर और जिम्मेदार व्यवस्था देने का प्रयास

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य को एक बेहतर और जिम्मेदार व्यवस्था देने का प्रयास जारी है, ताकि सरकार की नजरें और योजनाएं सुदूर ग्रामीण इलाकों तक पहुंच सके। इस सिलसिले में सरकार आपके द्वार में कार्यक्रम के माध्यम से आपकी समस्याओं का निष्पादन किया गया। इस तरह की योजना फिर से शुरू की जाएगी, ताकि जनता के साथ सरकार का जुड़ाव बना रहे।

उन्होंने कहा कि हमारी सरकार एयर कंडीशनर कमरे में बैठकर नहीं, बल्कि जाड़ा, गर्मी और बरसात, कोई भी मौसम हो, फील्ड में काम कर रही है, ताकि लोगों की परेशानियां और समस्याओं को हम समझ सकें। इतना ही नहीं

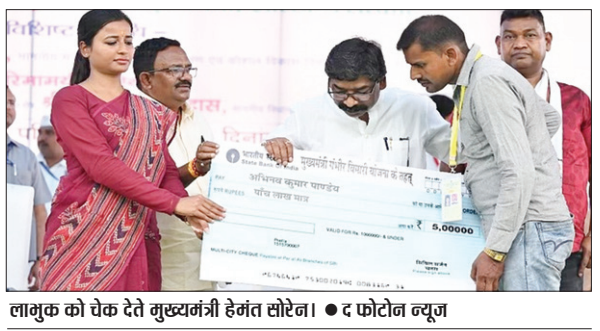

लाभुक को चेक देते मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन। ● द फोटोन न्यूज

योजनाएं धरातल पर उतरे जा रही है। सभी वरीय अधिकारियों को निर्देश दिया है कि वे भ्रमण कर योजनाओं की जमीनी हकीकत की जानकारी लें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि देश तभी मजबूत होगा जब राज्य मजबूत होगा और राज्य तभी मजबूत होगा जब ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत बनेगी। इसी बात को ध्यान में रखकर हमारी सरकार ग्रामीण अर्थव्यवस्था मुख्य केंद्र में रखकर योजनाएं बना रही हैं। किसान और मजदूरों के हित में सरकार काम कर रही है। ग्रामीणों को स्वावलंबी बनाने, उनकी आय में वृद्धि करने, बेहतर शिक्षा, रोजगार उपलब्ध कराने, स्वरोजगार के मौके देने समेत कई सेक्टर में विशेष तौर पर काम कर रही है, ताकि राज्य और राज्य वासियों को खुशहाल बना सकें।

सीएम ने कहा कि इसी महीने की 15 और 16 तारीख को राज्य के सीनियर अधिकारियों और सभी जिलों के डीसी और एसपी के साथ विकास और विधि व्यवस्था को लेकर लंबी चर्चा की। इस दौरान अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिया गया कि वे सरकार की योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाएं और विधि व्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए सभी समुचित कदम उठाएं। जनता का हित सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है।

उन्होंने कहा कि कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं के लिए जमीन अधिग्रहण की प्रक्रिया चल रही है। इस सिलसिले में ग्रामीणों से कुछ शिकायतें भी मिली। कहा कि भूमि अधिग्रहण से प्रभावित होने वालों को आश्वस्त करना चाहता हूं कि उनके साथ कोई अन्याय नहीं होगा। उनको उनका हक और अधिकार हर हाल में मिलेगा। इसको लेकर सरकार पूरी तरह संवेदनशील है।

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर तीन अरब 64 करोड़ 34 लाख 68 हजार 925 रुपये की लागत वाली 177 योजनाओं की नींव रखी, जबकि 14 करोड़ 6 लाख 741 रुपये की 42 योजनाओं का उद्घाटन किया। वहीं, लाभुकों के बीच दो करोड़ 81 लाख 15 हजार 446 रुपये की परिसंपत्तियां बांटी। इस कार्यक्रम में 11 नवनियुक्तों को मुख्यमंत्री ने नियुक्ति पत्र प्रदान किया। इस अवसर पर श्रम मंत्री सत्यानंद भोक्ता, विधायक किशुन कुमार दास, अंबा प्रसाद, जिला परिषद अध्यक्ष ममता कुमारी, मुख्यमंत्री के सचिव विनय कुमार चौबे और चतरा जिले के उपायुक्त एवं पुलिस अधीक्षक समेत कई पदाधिकारी मौजूद थे।

## BRIEF NEWS

### सौर ऊर्जा से संचालित जल मीनार एवं छठ घाट निर्माण कार्य का विधायक अंबा प्रसाद ने किया शिलान्यास

शिलान्यास के मौके पर मौजूद विधायक व अन्य। ● द फोटोन न्यूज

RAMGARH : पतरातू बस्ती तालाब में छठ घाट निर्माण एवं रेल श्रमिक उच्च विद्यालय में सौर ऊर्जा द्वारा संचालित पानी टंकी का सोमवार को विधायक अंबा प्रसाद ने शिलान्यास किया। बताया गया कि उक्त दोनों योजनाओं का क्रियान्वयन 15वें वित्त आयोग से होगा। जिसका विधायक अंबा प्रसाद द्वारा शिलापट अनावरण एवं नारियल फोड़कर किया गया। इससे पूर्व शिलान्यास कार्यक्रम में पहुंचने पर स्थानीय ग्रामीणों ने ढ़ोल-नगाड़ों के बीच फूल माला पहना विधायक अंबा प्रसाद का स्वागत करते हुए कार्यक्रम स्थल तक पहुंचाया। इस अवसर पर विधायक अंबा प्रसाद ने कहा कि आम जनमानस की समस्याओं का समाधान एवं पूरे विधानसभा क्षेत्र का चहुंमुखी विकास करना ही मेरी पहली प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस जात की नहीं जमात की राजनीति करता है, इसमें सभी वर्गों के हितों का ख्याल रखा जाता है। मौके पर विधायक प्रतिनिधि कृष्णा सिंह, मुखिया गिरिजेश कुमार, पंचायत समिति सदस्य ज्योति गुप्ता, उप मुखिया पूजा देवी, सुषमा सिंह, शकुंतला देवी, सुमन देवी, भूषण गिरी, अवधेश सिंह, धनंजय सिंह, प्रकाश सिंह, थालेश्वर सिंह, संजना पाठक, पुष्पा देवी, प्रमिला देवी, द्रोपति देवी, सरिता देवी, पूनम देवी, गुड़िया देवी, बसंती देवी सहित दर्जनो ग्रामीण मौजूद थें।

### भाकपा ने की सभी विपक्षी पार्टियों से एकजुट होने की अपील

बैठक में शामिल विभिन्न दलों के लोग। ● द फोटोन न्यूज

RANCHI : भाकपा के राष्ट्रीय महासचिव डी राजा ने कहा कि देश में संप्रदायिक दंगे को भड़का कर देश में विभाजन कर राजनीति रोटी सेकने वाले केन्द्र को देश की जनता उखाड़ फेंकेगी । क्योंकि देश में महंगाई, बेकारी,लाचारी और तबाही से जीने के लिए सरकार ने मजबूर कर दिया है। राजा सोमवार को अल्बर्ट एक्का चौक स्थित पार्टी कार्यालय में प्रेस वार्ता में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि देश के तमाम विपक्षी पार्टियों को ईडी और सीबीआई के एजेंसियों से डराया जा रहा है । देश में महिला पहलवानों के साथ जो हरकत हुआ पूरे दुनिया देखा। संसद के उद्घाटन में जिस तरह से राष्ट्रपति को दरकिनार कर संसद का उद्घाटन किया गया। पूरे दुनिया ने देखा देश में तानाशाह की तरह मोदी की सरकार काम कर रही है। उन्होंने कहा कि आज झारखंड मुक्ति मोर्चा के नेता हेमंत सोरेन ने भी स्पष्ट किया है कि हम विपक्षी एकता बनाने के लिए प्रयासरत हैं । 23 जून को पटना में तमाम विपक्षी पार्टियों के समागम 2024 की तैयारी के लिए किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि भाकपा ने नारा दिया है, भाजपा हटाओ देश बचाओ, भाजपा हटाओ लोकतंत्र बचाओ, भाजपा हटाओ संविधान बचाओ। प्रेस वार्ता में राष्ट्रीय सचिव के नारायणा एवं डॉ भालचंद्र कांगो, पूर्व सांसद भुवनेश्वर प्रसाद मेहता, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के राज्य सचिव महेंद्र पाठक ,जिला सचिव अजय कुमार सिंह, अधिवक्ता एके रसीदी, धर्मवीर सिंह मौजूद थे।

### राहुल गांधी के जन्मदिन पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने किया फलों का वितरण

मरीज को फल देते कांग्रेस कार्यकर्ता। ● द फोटोन न्यूज

KHUNTI : कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी के जन्मदिन पर जिला कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने जिलाध्यक्ष रवि मिश्रा के नेतृत्व में सोमवार को सदर अस्पताल के मरीजों के बीच फलों का वितरण किया और उनसे मिलकर उनका हालचाल जाना। इस अवसर पर जिला कांग्रेस कमेटी और प्रखंड कमेटी के सदस्य मौजूद थे। इस अवसर पर विल्सन तोपनो, रविकांत मिश्रा, नरेश तिर्की, मीनाक्षी सिंह तोपनो, मरियम आईंद, पौलुस पूर्ति, एडवर्ड हंस, अनमोल होरो सहित अन्य कार्यकर्ता उपस्थित थे।

### प्रदेश कांग्रेस ने राहुल गांधी का जन्मदिन मनाया

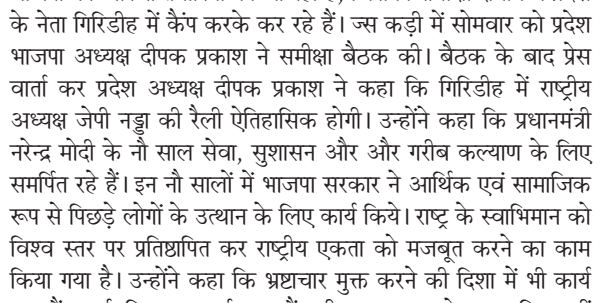

गरीबों को भोजन कराते प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर व अन्य। ● द फोटोन न्यूज

RANCHI : प्रदेश कांग्रेस ने सोमवार को पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी का जन्म दिवस पार्टी कार्यालय में हर्षोल्लास के साथ मनाया। इस अवसर पर कांग्रेस नेताओं ने केक काटकर राहुल गांधी को जन्मदिन की बधाई दी तथा उनकी लंबी उम्र की कामना की। इस मौके पर प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में गरीबों के बीच प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर की ओर से खाना का वितरण किया गया। राजेश ठाकुर ने राहुल गांधी को जन्मदिन की बधाई ते हुए कहा कि संवैधानिक मूल्यों के प्रति अटूट प्रतिबद्धता और विपरीत परिस्थितियों में आपका आदम्य साहस सराहनीय है। आप दया और सद्भाव का संदेश फैलाते हुए सच बोलना जारी रखें और करोड़ों भारतीय की आवाज बनें। उन्होंने कहा कि नफरतों के बीच मोहब्बत की बात, भय के बीच निडर होने की बात, तार-तार होते राजनीतिक सुचिता के बीच मूल्यों की बात, विपरीत धाराओं के बीच खडे.होकर उनका रुख मोड़ना, ये राहुल गांधी होने का प्रमाण है।

### गिरिडीह में राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा की रैली ऐतिहासिक होगी: दीपक प्रकाश

GIRIDIH : भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा की 22 जून को गिरिडीह के झंडा मैदान में जनसभा प्रस्तावित है। इसको लेकर प्रदेश भाजपा की ओर से तैयारियां की जा रही हैं, जिसकी समीक्षा क्षेत्रीय व प्रदेश के नेता गिरिडीह में कैंप करके कर रहे हैं। ज्स कड़ी में सोमवार को प्रदेश भाजपा अध्यक्ष दीपक प्रकाश ने समीक्षा बैठक की। बैठक के बाद प्रेस वार्ता कर प्रदेश अध्यक्ष दीपक प्रकाश ने कहा कि गिरिडीह में राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा की रैली ऐतिहासिक होगी। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नौ साल सेवा, सुशासन और और गरीब कल्याण के लिए समर्पित रहे हैं। इन नौ सालों में भाजपा सरकार ने आर्थिक एवं सामाजिक रूप से पिछड़े लोगों के उत्थान के लिए कार्य किये। राष्ट्र के स्वाभिमान को विश्व स्तर पर प्रतिष्ठापित कर राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने का काम किया गया है। उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार मुक्त करने की दिशा में भी कार्य हुए हैं। कई विकास कार्य हुए हैं। दीपक प्रकाश ने कहा कि इन्हीं उपलब्धियों को लेकर पार्टी कार्यकर्ता झारखंड के सभी जिलों में घर-घर जाकर 2024 के लिए जनसमर्थन मांगने के अभियान में जुटे हैं। उन्होंने कहा कि हेमंत सोरेन सरकार को हटाने के लिए हर कार्यकर्ता को सक्रिय होने की जरूरत है।

## राज्यपाल पहुंचे SARAIKELA, छात्र-छात्राओं से हुए रूबरू, कहा-

# पौष्टिक आहार से होगा बच्चों का विकास

PHOTON NEWS SARAIKELA

झारखंड के राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन अपनी कोल्हान यात्रा के तीसरे चरण में सरायकेला खरसावां पहुंचे। इस दौरान उन्होंने छात्र-छात्राओं के साथ सीधा संवाद किया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि बच्चों के समग्र विकास के लिए पौष्टिक भोजन अनिवार्य शर्त है। इस दिशा में पहल करते हुए वह कक्षा 9 से ऊपर के बच्चों को एक अंडा और दूध उपलब्ध कराने के लिए राज्य सरकार से बात करेंगे। बच्चों को संतुलित आहार मिलने से ही तभी बच्चों का विकास होगा।

उन्होंने कहा कि छात्रों को अपना लक्ष्य निर्धारित कर पढ़ाई करनी चाहिए। पढ़ाई के समय पढ़ाई और खेल के समय खेल। मनोरंजन के समय मनोरंजन। इन सभी में संतुलन से ही विद्यार्थी अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं।

कार्यक्रम में राज्यपाल को पौधा देकर स्वागत करती छात्रा व उपस्थित अन्य। ● द फोटोन न्यूज

उन्होंने जिले में नक्सल गतिविधियों पर रोक लगाने के लिए जिला प्रशासन और पुलिस प्रशासन को बधाई दी। कहा कि इस दिशा में स्थानीय प्रशासन ने अच्छा काम किया है। इससे युवाओं को बेहतर माहौल मिला है। उन्होंने कहा कि मौजूदा समय में बच्चे खुशनसीब हैं,जो इतनी कम उम्र से कंप्यूटर पर पढ़ाई कर रहे हैं। अपना निजी अनुभव साझा करते हुए उन्होंने कहा कि मैं एक सरकारी स्कूल में पढ़ा हूं, मेरा विद्यालय ऐसा हुआ करता था इसमें खिड़की दरवाजे तक टूटे हुए थे। बारिश के मौसम में किताबें तक भींग जाती थीं। राज्यपाल ने अनुसूचित जनजाति आवासीय विद्यालय के बच्चों का उत्साहवर्धन किया। इसके बाद राज्यपाल ने पौधारोपण किया। बच्चों के बीच खेल सामग्री वितरण का वितरण किया। चॉकलेट भी बांटे। कार्यक्रम में सरायकेला खरसावां के उपायुक्त अरवा राजकमल मौजूद थे। राज्यपाल ने इससे पहले रविवार को चाईबासा का दौरा किया था। बंद खदानों में हो रहे मछली पालन का जायजा लिया था।

### झारखंड में विकास ने पकड़ी रफ्तार : राज्यपाल

राज्यपाल ने अपने संबोधन में कहा कि झारखंड में विकास की गति ने रफ्तार पकड़ ली है। तेजी से झारखंड का विकास हो रहा है। आने वाले पांच वर्षों में विकास के क्षेत्र में एक या दूसरे नंबर पर झारखंड का नाम आएगा। कुमार विजय प्रताप सिंहदेव राज्य संपोषित बालिका उच्च विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में हिस्सा लेते हुए उन्होंने कहा कि राज्य से जल्द ही नक्सल गतिविधियां समाप्त हो जाएगी। स्कूलों में लगातार सुधार हो रहे हैं। यहां आदिवासी समुदाय के बच्चे ज्यादा हैं। बच्चों में काफी जोश भरा हुआ है। बच्चे मेहनत से पढ़ेंगे तो समाज को इसका लाभ मिलेगा। अगर बच्चे किसी चीज को नहीं जानते हैं तो उसे स्वीकार करें और उस चीज को सीखने की कोशिश भी करें।

राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन सरायकेला स्थित संजय ग्राम स्थित अनुसूचित जनजाति आवासीय विद्यालय में स्कूली छात्र छात्राओं के साथ संवाद कार्यक्रम में शामिल हुए। मौके पर स्थानीय लोगों के जन समस्याओं से भी राज्यपाल अवगत हुए। वहीं राज्यपाल ईटाकुदर पंचायत भवन में आयोजित कार्यक्रम में जनता -संवाद कार्यक्रम में शामिल होकर लोगों से संवाद स्थापित किया। इस दौरान ईटाकुदर पंचायत अंतर्गत काशीडीह टोला में भीषण पेयजल संकट से जूझ रहे ग्रामीणों ने राज्यपाल को समस्या से अवगत कराया। जनसंवाद कार्यक्रम में ग्रामीण प्रीति कुमारी गोप ने कहा कि टोला में ब्रिटिश काल के बने कुआं से आज भी ग्रामीण पेयजल के लिए निर्भर हैं। गर्मी के इस मौसम में कुआं सूख जाने के चलते ग्रामीणों को पेयजल के लिए भटकना पड़ता है।

## किशोरियों के लिए एक दिवसीय कैरियर कॉउंसलिंग सह सिकल सेल कार्यशाला का आयोजन

# स्वास्थ्य हमारे भविष्य का है अहम मानक : अर्जुन मुंडा

PHOTON NEWS KHUNTI

बिरसा कॉलेज खूंटी के बहुद्देशीय भवन में सोमवार को जिले के विभिन्न प्रखंडों की किशोरियों के लिए एक दिवसीय कैरियर कॉउंसलिंग सह सिकल सेल कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से जनजातीय मामलों के केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा उपस्थित हुए।

सिकल सेल एनीमिया के संबंध में जागरूक करने एवं किशोरियों की सिकल सेल स्क्रीनिंग के उद्देश्य से आयोजित कार्यक्रम में हजारों की संख्या में किशोरियों की स्क्रीनिंग की गई। साथ ही प्रशिक्षित स्वास्थ्य कर्मियों ने काउंसलिंग भी की। मौके पर केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा ने कहा कि स्वास्थ्य हमारे भविष्य का अहम मानक है।

उन्होंने कहा कि खूंटी जिले के साथ - साथ पूरे देश में थैलेसिमिया सिकल सेल एनीमिया को लेकर हर

कार्यशाला में बोलते अर्जुन मुंडा। ● द फोटोन न्यूज

स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं। आज के इस कार्यक्रम में ऑनलाइन माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों से विशेषज्ञ जुड़े हैं। इसी प्रकार की पहल से वृहद स्तर पर स्क्रीनिंग कर प्रभावित लोगों को उचित उपचार मुहैया कराने की दिशा में कार्य किए जायेंगे। उन्होंने आगे कहा कि स्वास्थ्य हमारे भविष्य का अहम मानक है, जिसके उत्तरोत्तर सुधार के लिए हमें अग्रसर रहना है। तेजस्विनी की किशोरियों को इस संबंध में जागरूक करने का प्रयास सराहनीय है। यह एक नया आयाम कायम कर रही है।

उन्होंने कहा कि सभी को अपने स्तर पर जागरूक होने की भी आवश्यकता है। सभी हेल्पलाइन नंबर की जानकारी रखें। साथ ही अपने क्षेत्र के लोगों को भी जागरूक करने में अपनी भूमिका निभाएं। अपने संबोधन में केंद्रीय मंत्री ने किशोरियों को संकल्प दिलाया कि सिकल सेल मुक्ति के इस राष्ट्रव्यापी अभियान में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करेंगें। उन्होंने किशोरियों से कहा कि पैनल चर्चा सत्र में विशिष्ट वक्ताओं की उपस्थिति से बहुत नई बातें सीख सकते हैं। साथ ही आपकी जिज्ञासाओं का सही उत्तर भी मिल पाएगा।

उपायुक्त शशि रंजन ने कहा कि सिकल सेल एक बहुत ही गंभीर स्वास्थ्य समस्या है। इसे लेकर जागरूकता बढाने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। इसके लिए प्रत्येक ग्राम में जांच अभियान चलाने का लक्ष्य रखा गया है। उन्होंने कहा कि जनजातीय मंत्रालय के उन्मुक्त कार्यक्रम के तहत पीरामेल संस्था के सहयोग से जिले के विभिन्न पंचायत में शिविर लगाकर सिकल सेल की जांच की जा रही है। छात्राओं का हौसला बढ़ाते हुए उपायुक्त ने कहा कि सुविधाओं के अभाव में भी बिना किसी भय के हम सफल हो सकते हैं। संघर्ष सबके जीवन में है उन्हीं संघर्षों के बीच से अपनी राह बनानी है।

# झामुमो ने पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास पर जमकर निशाना साधा

PHOTON NEWS RANCHI

झारखंड मुक्ति मोर्चा( झामुमो) के वरिष्ठ नेता सुप्रियो भट्टाचार्य ने भाजपा के पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि रघुवर दास का विकास तीर्थ भ्रमण हो रहा है। ये विकास तीर्थ भ्रमण शब्दों का एक ऐसा जाल है, जिसमें विनाश की पटकथा बहुत आसानी से लिखा जा रहा है। कई संस्थानों को कब्जे में करकर जो लोगों के मुद्दे है, उससे लोगों को भटकाया जा रहा है। भट्टाचार्य सोमवार को पार्टी कार्यालय में प्रेस वर्ता में बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष को राज्य के लोगों ने सिर्फ नाकारा नहीं है, उनकी विधायकी ही छीन ली है। आज भी वह स्वप्न लोक में जीते है और खुद को आज भी मुख्यमंत्री-मुख्यमंत्री भाव दिखाते है। अपने शासन काल में जिन

संबोधित करते सुप्रियो भट्टाचार्य। ● द फोटोन न्यूज

विफलताओं के साथ लोगों ने आगे बढ़ने का काम किया। वह जो सफल क्रियान्वयन है, उसको कैसे अपने से जोड़ा जाये। इसकी चाल चली जा रही है। उन्होंने कहा कि आप राष्ट्रीय नेता है, तो जो राज्य मणिपुर आज जल रहा है। वहां एक केंद्रीय मंत्री का घर फूंका दिया गया है। आपकों वहां जाना चाहिए। आपके राष्ट्रीय अध्यक्ष रैली करते है, उस दिन 19 लोग मणिपुर गोली से मारे जाते है। आपके समय में जो 27 हजार एमओयू हुआ था, उस समय सांप क्यो सूंघ जाता है।

## गोला में संपन्न हुआ विधानसभा स्तरीय लाभुक सम्मेलन, सांसद जयंत सिन्हा हुए उपस्थित

# JAYANT SINHA ने लाभुकों को अंगवस्त्र देकर किया सम्मानित

PHOTON NEWS RAMGARH

सोमवार को रामगढ़ के गोला स्थित स्वर्ण बनिक धर्मशाला में मंडल में भारतीय जनता पार्टी की ओर से चलाए जा रहे महा जनसंपर्क अभियान के निमित्त विधानसभा स्तरीय लाभुक सम्मेलन आयोजित हुई जिसमे मुख्य अतिथि के रूप में हजारीबाग लोकसभा सांसद जयंत सिन्हा उपस्थित हुए और उनके नेतृत्व में जिलाध्यक्ष प्रवीण मेहता, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य प्रकाश मिश्रा,प्रदेश कार्यसमिति सदस्य सह पूर्व रामगढ़ विधानसभा प्रत्यासी रणंजय कुमार उर्फ कुंटू बाबू,वरिष्ट उपाध्यक्ष सह अभियान संयोजक राजू चतुवेर्दी, महामंत्री प्रो. खिरोधर साहू, छोटन सिंह इत्यादि ने महापुरुषों की तश्वीर पर माल्यार्पण एवं राष्ट्रगान के बाद जिलाध्यक्ष प्रवीण मेहता की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम का मंच संचालन जितेंद्र साहू ने एवं धन्यवाद ज्ञापन उपाध्यक्ष स्नेहलता चौधरी ने दिया।

कार्यक्रम में उपस्थित लाभुकों को

कार्यक्रम में संबोधित करते जयंत सिन्हा। ● द फोटोन न्यूज

अंगवस्त्र देकर सम्मानित करते हुए जयंत सिन्हा ने कहा की जिस प्रकार करोना महामारी के समय पूरी दुनियां ठहर सी गई थी और सारे लोग भयभीत थे उस समय हमारे देश का नेतृत्व करने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने न सिर्फ अपने देश के अस्सी करोड़ गरीब नागरिकों को बिना भेदभाव के मुफ्त अनाज मुहैया करवाकर उनकी भूख मिटाई बल्कि अन्य जरूरतों की पूर्ति हेतु जनधन खाता के माध्यम से सीधे उनके अकाउंट में पैसे भी भेजे जिसकी तारीफ दुनियां भर के सभी शक्तिशाली देश करते हैं।

उन्होंने आगे कहा की आजादी के बाद भी इतने सालों तक देश के ज्यादातर गावों में सड़कें, बिजली, पानी, शौचालय सहित अन्य मूलभूत सुविधाओं का न होना हमारे प्रधानमंत्री मोदी जी को बहुत खला क्योंकि वो खुद एक गरीब परिवार से आते थे। इसी कारण उन्होंने अपने कार्यकाल में गरीब परिवारों की जरूरतों का ख्याल रखते हुए शुरूआत प्रधानमंत्री आवास, शौचालय और प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना से किया जिसके कारण आज देश के किसी भी सुदूरवर्ती गावों में आप जाएं तो वहां पक्की सड़कें मिलेंगी और अब हर गरीब परिवार का प्रधानमंत्री आवास के तहत मिला पक्का मकान और घर की महिलाओं को शौचालय के रूप में इज्जत घर बिल्कुल मुफ्त दिया।

इतना हीं नहीं महिलाओं को चूल्हे से निकलने वाले धुएं से बचाने को उनको उज्ज्वला योजना के तहत फ्री गैस चूल्हा,सौभाग्य योजना के तहत फ्री बिजली मुहैया करवाने का काम कर रहें है साथ हीं जिला खनिज मद से हर घर नल हर घर जल जैसी योजना को कार्यान्वित करते हुए सभी गांवों में सौ घरों हेतु एक जलमीनार बनवाकर पानी मुहैया करवाया जिसकी आज सभी सराहना करते हैं।

वहीं कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे जिलाध्यक्ष प्रवीण मेहता ने कहा की एक तरफ इस त्रासदी के से गुजर रहा अमेरिका,जापान और चीन सहित दुनिया भर के सभी देशों की अर्थव्यवस्था चौपट हो रही थी वहां मजबूत इच्छाशक्ति वाले प्रधानमंत्री मोदी ने देशवासियों को भारत की अर्थव्यवस्था पांच ट्रिलियन तक पहुंचाने का भरोसा दिया यह और आज स्टार्टअप इंडिया और युवाशक्ति की बदौलत हम उस आंकड़े के करीब पहुंच रहें हैं जो भाजपा की ईमानदार और विकासशील सरकार का परिचायक है।

कार्यक्रम संपन्न होंने के पश्चात गंभीर बीमारी से ग्रसित गोला निवासी खाद आपूर्ति विभाग के सांसद प्रतिनिधि डोमन साव के आवास पर सांसद जयंत सिन्हा सहित अन्य उपस्थित नेताओं ने उनका कुशलक्षेम जाना और उचित इलाज जी जिम्मेवारी सांसद ने अपने प्रतिनिधि के रूप में वहां उपस्थित कुंटू बाबू को इसकी जिम्मेवारी सौंपी।

इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से जिला मीडिया प्रभारी सत्यजीत चौधरी,गोला मंडल अध्यक्ष बबलू साव,सांसद प्रतिनिधि,महामंत्री जितेंद्र साव,सांसद प्रतिनिधि विजय ओझा,पंचम चौधरी,सूरज वर्मा,मणिशंकर ठाकुर,धीरज साहू,सुधा देवी इत्यादि सैकड़ों लोग उपस्थित हुए।

# HC में शपथ पत्र दायर कर जमशेदपुर डीसी ने जमीन का कब्जा दिलाने की दी जानकारी

## AXIS BANK से नीलामी में खरीदार को जमीन का दखल नहीं दिलाने का मामला

### हाईकोर्ट ने याचिका की निष्पादित

झारखंड हाईकोर्ट

SPECIAL REPORTER RANCHI : पूर्वी सिंहभूम, परगना धालभूम मानगो स्थित 3 कट्ठा से अधिक गिरवी पर रखी जमीन को एक्सिस बैंक द्वारा उसके नीलामी खरीददार को जमीन का दखल नहीं दिलाने मामले में मकसूद आलम व अन्य की याचिका की सुनवाई झारखंड हाईकोर्ट में सोमवार को हुई। मामले में जमशेदपुर डीसी की ओर से शपथ पत्र दाखिल कर बताया गया कि नीलामी जमीन का कब्जा बैंक को दिला दिया गया है। बैंक ने विधिवत रूप से जमीन का कब्जा 17 जून को नीलामी खरीदार को कर दिया गया है, जिसके बाद डीसी जमशेदपुर के जवाब पर संतुष्टि जताते हुए कोर्ट ने याचिका निष्पादित कर दी। इससे पूर्व डीसी की ओर से कोर्ट से उपस्थिति से छूट का आग्रह करते हुए कोर्ट को बताया गया था कि वह बीमार है और अपने ऑपरेशन के लिए झारखंड से बाहर हैं, जिस पर कोर्ट ने उनकी उपस्थिति से छूट प्रदान की। सुनवाई के दौरान इंचार्ज डीसी मनीष कुमार कोर्ट में सशरीर उपस्थित हुए।

बता दें कि पिछली सुनवाई के दौरान कोर्ट के आदेश के आलोक में एडीएम (लॉ एंड ऑर्डर) जमशेदपुर एवं एसएसपी जमशेदपुर हाई कोर्ट में हुए सशरीर उपस्थित हुए थे। वही जमशेदपुर डीसी ने प्रशासनिक कारणों का हवाला देते हुए उपस्थिति से छूट का आग्रह किया गया था। इस पर कोर्ट ने 19 जून को जमशेदपुर डीसी को सशरीर उपस्थित होने का निर्देश दिया था। न्यायमूर्ति सुजीत नारायण प्रसाद की कोर्ट ने मामले की सुनवाई की। दरअसल, कोर्ट ने बीते गुरुवार को मामले की सुनवाई करते हुए जमशेदपुर उपायुक्त एवं एसएसपी जमशेदपुर को शुक्रवार को कोर्ट में सशरीर उपस्थित होने का निर्देश दिया था।

**क्या है मामला**

मोहम्मद शाहिद खुशीर्दी ने एक्सिस बैंक लिमिटेड, शताब्दी टावर, सेंड लाइन रोड , जमशेदपुर से 47 लाख रुपए लोन लिया था। इसके बदले उसने पूर्वी सिंहभूम , परगना धालभूम, मानगो स्थित 3 कट्ठा से अधिक की एक जमीन को बैंक के पास गिरवी रखा था। शाहिद खुशीर्दी द्वारा लोन की राशि नहीं चुकाए जाने पर बैंक ने सरफैसी एक्ट के तहत इस पर कब्जा के लिए नोटिस जारी किया। साथ ही उपायुक्त, जमशेदपुर से गिरवी पर रखी गई इस जमीन पर कब्जा दिलाने के लिए आवेदन दिया। उपायुक्त जमशेदपुर ने इस आवेदन को स्वीकार कर पुलिस को इस जमीन पर बैंक का दखल कब्जा दिलाने को कहा। इसी बीच शाहिद खुशीर्दी ने ऋण वसूली अधिकरण में केस दायर कर दिया। इसी दौरान गिरवी पर रखी गई यह प्रॉपर्टी मोहम्मद मकसूद द्वारा करीब 68 लाख रुपए में खरीद ली गई। बैंक की ओर से उसे उस जमीन का सेल सर्टिफिकेट भी जारी कर दिया गया। इसी दौरान मोहम्मद शाहिद द्वारा ऋण वसूली अधिकरण में दाखिल किया गया केस खारिज हो गया। जिसके बाद एक माह के अंदर बैंक को गिरवी पर रखी गई इस जमीन का दखल कब्जा लेकर इसे खरीददार मकसूद को दिया जाना था। लेकिन अभी तक बैंक ने मकसूद को उनके द्वारा खरीदी गई उक्त जमीन पर दखल कब्जा नहीं दिलाया है। जिसके बाद मकसूद की ओर से हाईकोर्ट में रिट याचिका दाखिल कर इस जमीन पर कब्जा दिलवाने का आग्रह किया गया है।

## प्रेम प्रकाश की याचिका पर ED से जवाब-तलब

### ईडी कोर्ट में डिस्चार्ज पिटीशन खारिज और आरोप गठित किए जाने के मामला

RANCHI : 1000 करोड़ रुपये के मनी लाउंड्रिंग मामले में जेल में बंद चर्चित व्यवसायी प्रेम प्रकाश की ओर से दाखिल क्रिमिनल रिवीजन की सुनवाई सोमवार को झारखंड हाईकोर्ट में हुई। न्यायमूर्ति गौतम कुमार चौधरी की कोर्ट ने ईडी को मामले में जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया है। मामले को लेकर ईडी ने ईसीआईआर 4/ 2022 दर्ज किया है। अगली सुनवाई 10 जुलाई को होगी। बता दें कि विशेष जज पी के शर्मा की ईडी कोर्ट ने प्रेम प्रकाश के डिस्चार्ज पिटीशन को खारिज कर दिया था साथ ही उनके खिलाफ अदालत ने आरोप भी गठित कर दिया है जबकि प्रेम प्रकाश ने खुद को निर्दोष बताते हुए ईडी कोर्ट द्वारा उनके डिस्चार्ज पिटीशन खारिज किए जाने एवं उन पर आरोप गठित किए जाने को हाईकोर्ट में चुनौती दी है। प्रेम प्रकाश, पंकज मिश्रा और बच्चू यादव के खिलाफ ईडी ने मनी लॉन्ड्रिंग मामले में आरोप पत्र पूर्व में ही दाखिल कर दिया है।

### पिछले वर्ष 25 अगस्त को ईडी ने प्रेम प्रकाश को किया था गिरफ्तार

ईडी ने अवैध खनन के मामले में प्रेम प्रकाश के 16 ठिकानों पर पहले छापेमारी की थी और बाद में 25 अगस्त 2022 को ईडी ने प्रेम प्रकाश को गिरफ्तार किया था। ईडी की टीम ने प्रेम प्रकाश के ठिकानों पर हुई छापेमारी के दौरान अरगोड़ा स्थित आवास से दो एके-47 और 60 गोलियां बरामद की थी। इसके अलावा कई अवैध संपत्तियों व को?ला कारोबार से जुड़े दस्तावेज बरामद किए थे।

## नक्सली प्रशांत बोस की जमानत पर हुई सुनवाई

झारखंड हाईकोर्ट में आज सोमवार को शीर्ष नक्सली नेता प्रशांत बोस की जमानत याचिका पर सुनवाई हुई। सुनवाई के दौरान अदालत ने प्रशांत बोस से जुड़े अन्य मामलों को एक साथ सूचीबद्ध कर 27 जून को सुनवाई की तिथि निर्धारित की है। झारखंड हाईकोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस एस चंद्रशेखर और जस्टिस रत्नाकर भेंगरा की कोर्ट ने प्रशांत बोस की जमानत अर्जी पर सुनवाई की। राज्य सरकार की ओर से अधिवक्ता सतीश प्रसाद ने कोर्ट में अपना पक्ष रखा। वहीं प्रशांत बोस की ओर से अधिवक्ता जितेंद्र सिंह ने अपना पक्ष रखा।

**साल 2021 में झारखंड पुलिस ने प्रशांत बोस को किया था गिरफ्तार**

बता दें कि झारखंड पुलिस ने वर्ष 2021 में भाकपा माओवादी के शीर्ष पोलित ब्यूरो सदस्य प्रशांत बोस उर्फ किशन दा, उनकी पत्नी शीला मरांडी और चार माओवादियों को गिरफ्तार किया था। तब से वह न्यायिक हिरासत में हैं। प्रशांत बोस और उनकी पत्नी शीला मरांडी के पास

नक्सली नेता प्रशांत बोस

से 4 मोबाइल, दो एसएसडी एक पेन ड्राइव और 1.51 लाख नकद बरामद किये गये थे। इसे लेकर सरायकेला जिले के कांड्रा थाने में प्राथमिकी दर्ज की गयी है।

### तारा शाहदेव प्रकरण: एयरटेल के अधिकारी ने दी गवाही, बताया

## रंजीत सिंह कोहली के नाम पर रजिस्टर्ड था टेलीफोन NUMBER

RANCHI : नेशनल राइफल शूटर तारा शाहदेव के धर्म परिवर्तन, यौन उत्पीड़न व दहेज प्रताड़ना से संबंधित मामले में मुख्य आरोपी रंजीत सिंह कोहली उर्फ रकीबुल की ओर से बनाए गए गवाह एयरटेल के अधिकारी ने सोमवार को सीबीआई कोर्ट में गवाही दी। कोहली की ओर से एक टेलीफोन नंबर दिया गया था, जिसके बारे में सूचना मांगी गई थी। एयरटेल अधिकारी ने गवाही में बताया कि तारा शाहदेव प्रताड़ना के जिस घटना का जिक्र किया जा रहा है, उस दौरान यह टेलीफोन नंबर रंजीत सिंह कोहली के नाम पर था। एयरटेल के अधिकारी की ओर से इससे संबंधित दस्तावेज भी कोर्ट में प्रस्तुत किए गए। मामले में अगली गवाही 23 जून को होगी। बता दें कि रंजीत कोहली द्वारा सीएम हेमंत सोरेन को भी गवाह बनाया गया था। पिछली सुनवाई में सीएम के अधिकृत व्यक्ति मुस्ताक आलम ने गवाही दी थी। सीबीआई के विशेष न्यायाधीश पीके शर्मा की अदालत में मामले की सुनवाई चल रही है।

बता दें कि मामले में मुख्य आरोपी रंजीत सिंह कोहली उर्फ रकीबुल के अलावा हाईकोर्ट के पूर्व रजिस्ट्रार(विजिलेंस) बर्खास्त मुश्ताक अहमद एवं कोहली की मां कौशल रानी ट्रायल फेस कर रहा है। आरोपियों के खिलाफ दो जुलाई 2018 को आरोप गठित किया गया था। सीबीआई ने 2015 में केस टेक ओवर किया था। रंजीत कोहली एवं तारा शाहदेव की शादी 7 जुलाई 2014 को हुई थी। लेकिन शादी के कुछ माह बाद उसे धर्म परिवर्तन करने प्रताड़ित किया गया।

## BRIEF NEWS

### गैस सिलेंडर फटने से युवक घायल, अस्पताल में भर्ती

RANCHI : डोरंडा थाना क्षेत्र स्थित एक रेस्टोरेंट में अचानक गैस सिलेंडर फटने से युवक घायल हो गया है। घायल युवक को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। बताया जाता है कि आग लगने से भगदड़ की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। रेस्टोरेंट का कारीगर किचन में खाना बना रहा था। इसी बीच एलपीजी गैस सिलेंडर में रिसाव के कारण आग पकड़ लिया था, जिसके बाद जोरदार आवाज के साथ गैस सिलेंडर फट गया। किचन में रखे सारा समान तहस नहस हो गया । हालांकि स्थानीय लोगों की तत्परता से आग पर काबू पा लिया गया। मामले की जानकारी मिलने के बाद डोरंडा थाना पुलिस घटनास्थल पर पहुंचे और छानबीन की।

### नालियों की नहीं हो रही सफाई तो 9431104429 नंबर पर करें शिकायत

RANCHI : रांची नगर निगम के द्वारा मॉनसून से पहले रांची के सभी 53 वार्डों में नालियों की सफाई के लिए विशेष अभियान सफाई तो होकर रहेगी 310 चलाया जा रहा है। इस सफाई अभियान के तहत शहर के सभी छोटी-बड़ी नालियों को साफ किया जा रहा है। इसके साथ खुले और बड़ी नालियों को स्लैब से ढंका जा रहा है। लेकिन इतने प्रयास के बाद भी कई मुहल्लों में नालियों के सफाई में खानापूर्ति की जा रही है। मैनुअल सफाई करने वाले सफाईकर्मी नाली में जमी गंदगी को पूरी तरह से नहीं निकाल रहे हैं। इसे देखते हुए नगर निगम प्रशासक ने आम लोगों से अपील की है। उन्होंने कहा की अगर किसी के मुहल्ले में अबतक नालियों की सफाई नहीं हुई है, तो वह निगम के हेल्पलाइन नंबर 9431104429 पर शिकायत कर सकते हैं। शिकायत करने के 24 घंटे के अंदर नालियों की सफाई कराई जाएगी।

### 34763 शिकायत निष्पादन के लिए लंबित, 21 को समीक्षा बैठक

RANCHI : झारखंड पुलिस मुख्यालय में 34763 शिकायत निष्पादन के लिए लंबित हैं। इसको लेकर 21 जून को आईजी मुख्यालय के द्वारा जिले के एसएसपी और एसपी के साथ समीक्षा बैठक की जाएगी। इस संबंध में जिले एसएसपी और एसपी को पत्र लिखा गया है। लिखे पत्र में कहा गया है कि झारखंड पुलिस मुख्यालय के अंतर्गत (1) पीजी-01 (2) पीजी-02 और (3) पीजी पोर्टल प्रशाखा में साल 2015 से साल 2023 (माह मई तक) लंबित 34763 शिकायत पाई गई है। लंबित शिकायतों के त्वरित निष्पादन में काफी कमी देखी गयी है। इसके निष्पादन में तेजी के लाने के लिए वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से समीक्षा बैठक की जाएगी।

### विवाहिता की हत्या के मामले में पुलिस ने शुरू की जांच

RANCHI : सुखदेव नगर थाना क्षेत्र स्थित अलकपुरी इलाके में रहने वाली सुनीता देवी की मौत के मामले में भाई वैजनाथ ने अपने बहनोई शंभु पर हत्या का केस दर्ज कराया है। पुलिस ने इस मामले की जांच शुरू कर दिया है। भाई का आरोप है कि पांच लाख रुपये के लिए उसकी बहन की हत्या हुई है। शादी के बाद से उसकी बहन को प्रताड़ित किया जा रहा था। वहीं विवाहिता के पति ने पुलिस को बताया बीमारी की वजह से पत्नी परेशान रहती थी। विवाहिता ने परेशान होकर खुदकशी कर ली। विवाहिता के भाई के बयान पर पुलिस ने जांच शुरू कर दी है।

atomy
ATOMY
INDIA
RANCHI TEAM
WARRIOR CENTRE
4th Floor, Shop No. 22, 23, 24
Roshpa Roshpa Tower,
Main Road, Ranchi - 834001
Mob. 9334495776

## JAC 11वीं के RESULT से असंतुष्ट छात्रों ने किया विरोध-प्रदर्शन, पुलिस ने भांजी लाठियां

CRIME REPORTER RANCHI : जैक 11वीं के रिजल्ट से असंतुष्ट छात्र सोमवार को जैक ऑफिस पहुंचे। इस दौरान जैक अध्यक्ष अनिल कुमार महतो से मिलने की मांग करते हुए अध्यक्ष के कार्यालय के बाहर बैठे, वहीं कुछ छात्र कैंपस के बाहर खड़े थे। छात्रों को जब जैक अध्यक्ष से मिलने नहीं दिया गया, तो विरोध स्वरूप सभी छात्र प्रदर्शन करने लगे। इसे रोकने के लिए पुलिस को लाठीचार्ज करना पड़ा। इस दौरान कुछ छात्र-छात्राओं को हिरासत में लिया गया है। दूसरी ओर, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् का एक प्रतिनिधिमंडल जैक अध्यक्ष से मिलकर समाधान की मांग की। इस पर जैक अध्यक्ष ने जल्द ही छात्र हित में फैसला लेने की बात कही। सोमवार को

जैक ऑफिस के बाहर जुटे छात्र ● फोटोन न्यूज

जैक ऑफिस पहुंचे असंतुष्ट छात्रों के इस आंदोलन को छात्र संगठन एआईडीएसओ द्वारा नेतृत्व किया जा रहा था। छात्रों का आरोप है कि जब आंदोलन के नेतृत्व करते हुए छात्र जैक अध्यक्ष से मिलने पहुंचे, तो उनके साथ दुर्व्यवहार किया गया और जबरन ऑफिस से बाहर निकाल दिया गया। इसके बाद गेट का ताला लगा दिया गया। इस दौरान छात्रों के विरोध करने पर पुलिस ने लाठीचार्ज किया। वहीं, कुछ छात्रों को हिरासत में लिया गया।

**असंतुष्ट छात्रों को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् का भी मिला समर्थन**

दूसरी ओर, असंतुष्ट छात्रों को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् का समर्थन मिला। छात्रों की समस्या के समाधान के लिए छात्र नेता सौरव बोस एवं रोहित शेखर ने जैक अध्यक्ष अनिल कुमार महतो से भेंट की। इस दौरान छात्रों की हो रही परेशानी को बताया। इस पर जैक अध्यक्ष ने जल्द समाधान की बात कही।

**जैक अध्यक्ष ने समाधान की कही बात**

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के छात्र नेताओं के मुताबिक, जैक अध्यक्ष ने जल्द छात्र हित के बारे में फैसला करने की बात कही। साथ ही कहा कि अगर किसी छात्र को अंक से समस्या हो, तो परीक्षा पत्र स्क्रूटनी के लिए जांच शुल्क 50 रुपये जमा करने के साथ छात्र अपनी परीक्षा पत्र की जांच करा सकते हैं।

## 13वीं झारखंड स्टेट सीनियर स्विमिंग चैंपियनशिप में रांची से 23 खिलाड़ी लेंगे हिस्सा, टीम का हुआ गठन

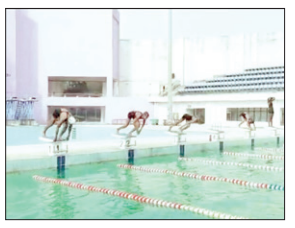

PHOTON NEWS RANCHI : जमशेदपुर के जेआरडी खेल परिसर में 23 जून को 13वीं झारखंड स्टेट सीनियर स्विमिंग चैंपियनशिप का आयोजित किया जा रहा है। इसमें हिस्सा लेने के लिए रांची की 25 सदस्यीय टीम का गठन कर लिया गया है। रांची जिला तैराकी संघ के उपेंद्र तिवारी के अनुसार टीम में 14 लड़के और 9 लड़कियों को शामिल किया गया है। शिविर में रांची के 125 तैराकों ने विभिन्न स्पधाओं में भाग लिया। इसके बाद उत्कृष्ट प्रदर्शन के आधार पर तैराकों का चयन तय हुआ।

### इन खिलाड़ियों और टीम सदस्यों का हुआ है चयन

- आरती कच्छप - 100 मी. फ्री स्टाइल, 50 मी. ब्रेस्ट स्ट्रोक
- आरती कुमारी - 50 मी. फ्री स्टाइल
- गायत्री कुमारी - 200 मी. फ्री स्टाइल, . 50मी. 100 मी, 200 मी. बैकस्ट्रोक
- प्रिया उरांव - महिला 50 और 100 मी. ब्रेस्ट स्ट्रोक, 400 मी. फ्री स्टाइल
- कुमारी रिष्टी राज - 200 मी., 400 मी. फ्री स्टाइल
- प्रश्मी सिंह सरदार - 50 मी फ्री स्टाइल
- श्वेता लकड़ा - 50 मी. और 100 मी. बैकस्ट्रोक
- अंशु कुजूर - 100 मी. ब्रेस्ट स्ट्रोक
- मोनिका कुमारी - 100 मी. बटरफ्लाई
- अभिषेक कुमार महतो - 50 मी. फ्री स्टाइल, 50 मी. और 100 मी ब्रेस्ट स्ट्रोक, 450 मी. फ्री रिले, 450 मी. मिडले रिले.
- अनुप मुंडा - 50 मी. फ्री स्टाइल, 50 मी. बैक स्ट्रोक, 450 मी. फ्री रिले, 4*50 मी. मिडले रिले.
- अपूर्व कुमार तिवारी - पुरुष 400 मी. फ्री स्टाइल, 50 मी. और 100 मी. बटर फ्लाई
- आयुश पलवल तिवारी - 100 मी. फ्री स्टाइल, 50 मी. और 100 मी. बैक स्ट्रोक, 450 मी. मिडले रिले
- दीपक कुमार महतो - 200 मी. ब्रेस्ट स्ट्रोक
- हेमंत कुमार महतो - 50 मी. ब्रेस्ट स्ट्रोक, 450 मी. फ्री रिले (सुरक्षित)
- राहुल नायक - 200 मी. और 400 मी. फ्री स्टाइल
- सतीश भगत - 100 मी. बैक स्ट्रोक
- प्रकाश महतो - 100 मी. ब्रेस्ट स्ट्रोक
- जितेन्द्र कुमार मुंडा - 200 मी. ब्रेस्ट स्ट्रोक
- अमन कुमार जयसवाल - 100 मी. और 200 मी. फ्री स्टाइल, 50 मी. बटर फ्लाई, 450मी फ्री रिले, 450 मी. मिडले रिले
- साहिल नायक - 100 मी. बटरफ्लाई, 200 मी. मिडल रिले, 4 ७ 50 मी. फ्री रिले
- लखिन्द्र सिंह मुंडा - 200 मी. मिडले रिले
- धनंजय नाथ साहदेव - 800 मी. फ्री स्टाइल
- बलमदीना तिग्गा - जेएसएसपीएस महिला टीम प्रबंधक महिला
- उमेश कुमार पासवान - जेएसएसपीएस पुरुष टीम प्रबंधक सह प्रशिक्षक पुरुष एवं महिला

## कांके में हाइवा जलाने वाला उग्रवादी गया जेल

CRIME REPORTER RANCHI : कांके थानी की पुलिस ने सोमवार को टीपीसी के उग्रवादी अताउल्लाह अंसारी उर्फ रॉकी उर्फ समीर उर्फ गुजरा को जेल भेज दिया। आरोपी को पुलिस ने दो दिन पहले पकड़ा था। पूछताछ में आरोपी ने बताया कि कांके थाना क्षेत्र के आईटीबीपी कैंप के पास स्थित बिनोद सिंह के क्रशर में 11 जनवरी को देर रात अपने पांच सहयोगियों के साथ जाकर गोलीबारी की थी। साथ ही एक हाईवा में आग लगा दिया था। हाइवा को पूरी तरह से जलने से बचा लिया गया था। उग्रवादियों ने गार्ड का मोबाइल भी छीन लिया था। इस पूरी घटना को टीपीसी के कमांडर मुरारी के निर्देश पर किया गया था। इनका उद्देश्य क्षेत्र के व्यवसायियों में डर उत्पन्न कर उनसे लेवी वसूलने का था। आगजनी और गोलीबारी के मामले में दर्ज कांके कांड संख्या 14/23 की जांच सब इंस्पेक्टर मोहित कुमार कर रहे हैं। इसके पहले भी इस केस में संलिप्त एक टीपीसी सदस्य वारिस अंसारी को गिरफ्तार कर पुलिस ने जेल भेजा था। छापेमारी दल में कांके इंस्पेक्टर आभास कुमार, सब इंस्पेक्टर सह जांच पदाधिकारी मोहित कुमार, सब इंस्पेक्टर संजय नायक, एसएसपी क्यूआरटी प्रभारी प्रवीण तिवारी, बुढ़मू प्रभारी कमलेश राय आदि शामिल थे। अताउल्लाह अंसारी उर्फ राकी उर्फ समीर उर्फ गुजरा पर पहले से ही कई मामले दर्ज हैं तथा वह पहले भी जेल जा चुका है। पुलिस का कहना है कि बुढमू इलाके में टीपीसी के उग्रवादी सक्रिय हैं।

### 700 पुलिस जवान तैनात, 16 बैरिकेडिंग, 40 से अधिक सीसीटीवी कैमरे लगाए गए

## रथ यात्रा के दौरान चप्पे-चप्पे पर होगी पुलिस

RANCHI : राजधानी में मंगलवार को शुरू होनेवाले जगन्नाथपुर रथ मेले की तैयारी अंतिम चरण में है। मेला परिसर में सुरक्षा व्यवस्था संभालने के 700 पुलिस के जवानों की तैनाती की गई है। एसएसपी किशोर कौशल ने कहा कि मेला परिसर में सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। जगह-जगह सीसीटीवी लगाए गए हैं। असामाजिक तत्वों पर कड़ी नजर रखी जा रही है। आयोजन के पूर्व तैयारी को देखने और सुरक्षा एवं अन्य व्यवस्थाओं के मद्देनजर दिशा- निर्देश देने एसएसपी समेत जिला प्रशासन के अधिकारी मेला स्थल पहुंचे। मेला परिसर का मुआयना किया। मेले में सुरक्षा को देखते हुए कुल 16 बैरिकेडिंग

### जगन्नाथपुर मेला की ओर जाने वाले कई सड़कों पर प्रवेश रहेगा वर्जित

- बिरसा चौक से मेला जाने वाले वाहन शहीद मैदान में पार्किंग करेंगे।
- तुपुदाना एवं हटिया से मेला जाने वाले वाहन प्रभात तारा मैदान में पार्किंग करेंगे।
- धुर्वा से मेला जाने वाले वाहन प्रभात तारा मैदान में पार्किंग करेंगे।
- रिंग रोड से मेला और शहर की ओर आने वाले भारी वाहन एवं हल्का वाहन तिरिल मोड, जेएससीए नार्थ गेट, प्रभात तारा मैदान से शालीमार बाजार होते हुए जायेंगे तथा तिरिल मोड़ के पास हैलीपेड में पार्किंग करेंगे।
- बिरसा चौक से रिंग रोड (नया सराय) जाने वाले वाहन शालीमार बाजार व धुर्वा गोलचक्कर प्रभात तारा मैदान, नार्थ गेट तिरिल मोड़, नया सराय से रिंग रोड होते हुए जायेंगे तथा तिरिल मोड़ के पास हैलीपैड में पार्किंग करेंगे।- धुर्वा से रिंग रोड जाने वाले वाहन, प्रभात तारा मैदान नार्थ गेट, तिरिल मोड़ होते हुए नया सराय से रिंग रोड जायेंगे।
- तिरिल मोड, शहीद मैदान से मौसी बाडी गोलचक्कर तक कार, ऑटो, बाइक का प्रवेश बंद रहेगा।
- प्रभात तारा तीन मुहानी से जगरनाथपुर बाजार तक कार, बाइक और ऑटो का प्रवेश निषेध है।
- एचइसी, विधानसभा की ओर से आने वाले वाहन जिन्हें मौसीबाड़ी जगरनाथपुर मंदिर होते हुए रिंग रोड जाना हो वैसे वाहन शहीद मैदान से शालीमार बाजार प्रभात तारा मैदान, जेएससीए स्टेडियम से दाहिने मुड़ कर तिरिल मोड होते हुए अपने गंतव्य की ओर जायेगें।
- रिंग रोड की तरफ से आने वाले वाहन जिन्हें शहर की ओर आना हो वैसे वाहन तिरील मोड, जेएससीए स्टेडियम, प्रभात तारा, शालीमार बाजार होते हुए शहर की ओर आयेगें।
- पुराना विधान सभा की तरफ से जिन्हें मेला जाना हो वैसे बड़ी वाहन, मिनीडोर को शहीद मैदान के पास ही बने पार्किंग स्थल पर पार्क करेंगे।

# मेडिकल व इंजीनियरिंग कोचिंग परियोजना का विधायक एवं उपायुक्त ने किया शुभारंभ

PHOTON NEWS RAMGARH

रामगढ़ जिले के मेधावी एवं जरूरतमंद बच्चों को राष्ट्रीय स्तर के शैक्षणिक संस्थानों में प्रवेश हेतु प्रशिक्षण एवं पैसे के अभाव में इन सुविधाओं से वंचित रह जाने वाले बच्चों पर संज्ञान लेते हुए उपायुक्त, रामगढ़ सुश्री माधवी मिश्रा की पहल पर जिला प्रशासन रामगढ़ द्वारा आधुनिक सुविधाओं के साथ एवं अनुभवी शिक्षकों के द्वारा बच्चों को राष्ट्रीय स्तर के शैक्षणिक संस्थानों में प्रवेश हेतु प्रशिक्षण उपलब्ध कराने के उद्देश्य से मेडिकल व इंजीनियरिंग प्रशिक्षण की व्यवस्था डीएमएफटी के माध्यम से की गई है। सोमवार को माननीय विधायक रामगढ़ श्रीमती सुनीता चौधरी एवं उपायुक्त, रामगढ़ सुश्री माधवी मिश्रा के द्वारा रामगढ़ प्रखंड परिसर के समीप कोचिंग सेंटर का शुभारंभ किया गया।

मौके पर उपायुक्त ने रामगढ़ जिले के विभिन्न सरकारी स्कूलों से चयनित 50 मेडिकल एवं 50 इंजीनियरिंग के बच्चों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि जिला प्रशासन का यह प्रयास है कि आप में जो भी प्रतिभा है उसका इस्तेमाल करते हुए आप ना केवल अपना बल्कि पूरे रामगढ़ जिले का नाम देश भर में रोशन करें। इस तरह की पहल आप सभी के लिए इसलिए खास है क्योंकि अब प्रतिभा होने के बावजूद पैसे के अभाव में आपको देश के सर्वोच्च शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षा प्राप्त करने से कोई नहीं रोक सकता है। आप सभी मन लगाकर पढ़े एवं जिला प्रशासन द्वारा शुरू की गई इस सेवा का पूरा पूरा लाभ ले वही अपनी किसी भी प्रकार की दुविधा को बिना झिझक के त्वरित रूप से प्रशिक्षण के दौरान ही दूर करें।

दीप जलाकर कार्यक्रम का उद्घाटन करती उपायुक्त। ● द फोटोन न्यूज

कार्यक्रम के दौरान उपायुक्त ने कहा कि कोई बच्चा किसी से कम नहीं है अगर आप सभी अपनी क्षमता के अनुसार ईमानदारी से प्रयास कर अपना शत प्रतिशत देंगे तो आपको सफलता जरूर मिलेगी। साथ ही उपायुक्त ने सभी को राष्ट्रीय स्तर की प्रवेश परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर अन्य बच्चों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बनने के लिए शुभकामनाएं दी।

कार्यक्रम के दौरान माननीय विधायक रामगढ़ श्रीमती सुनीता चौधरी ने जिला प्रशासन द्वारा जिले के प्रतिभावान बच्चों के लिए शुरू की गई मेडिकल व आईआईटी कोचिंग की सराहना करते हुए मन लगाकर बच्चों को पढ़ने एवं जीवन में सफल होने के लिए शुभकामनाएं दी वही अध्यक्ष जिला परिषद श्रीमती सुधा देवी, उप विकास आयुक्त श्री रोबिन टोप्पो, जिला शिक्षा पदाधिकारी श्रीमती कुमारी नीलम, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी श्रीमती कनक तिर्की, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी डॉ असीम कुमार, जिला खेल पदाधिकारी श्रीमती रूपा रानी तिर्की, अनुमंडल शिक्षा पदाधिकारी सहित अन्य ने भी बच्चों को कोचिंग सेंटर का पूरा लाभ लेने एवं जीवन में सफल होने के लिए शुभकामनाएं देने सहित अन्य महत्वपूर्ण जानकारियां दी।

माननीय विधायक एवं उपायुक्त द्वारा कोचिंग सेंटर का शुभारंभ करने के उपरांत मंगलवार से बच्चों के लिए सातों दिन कक्षाएं संचालित होंगी वहीं अवकाश के दिनों में बच्चों के लिए विशेष योजना के तहत दुविधाओं को दूर करने एवं पूरे हफ्ते जो भी चीजें उन्होंने सीखी हैं उनके आकलन हेतु परीक्षाओं का आयोजन किया जाएगा। कोचिंग सेंटर के सभी क्लासेस ऑफलाइन होंगे लेकिन बच्चों को शिक्षकों द्वारा पढ़ाए गए वीडियोस की रिकॉर्डिंग कॉपी क्लास पूरी होने के उपरांत उपलब्ध कराया जाएगा वही बच्चे 24 घंटे सातों दिन शिक्षकों के संपर्क में रहकर किसी भी समय अपनी किसी भी दुविधा को दूर कर सकेंगे।

कोचिंग परियोजना का शुभारंभ होने के उपरांत चयनित बच्चों में काफी उत्साह दिखाई दिया जहां उन्होंने उपायुक्त सुश्री माधवी मिश्रा एवं जिला प्रशासन रामगढ़ द्वारा किए गए इस पहल की सराहना की वहीं उन्होंने कहा कि अब पैसे का अभाव होने के बाद भी हमें अपने जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में काफी आसानी होगी। कोचिंग सेंटर में उपस्थित सभी बच्चों ने पूरे विश्वास के साथ कहा कि वे अपना शत-प्रतिशत देंगे और रामगढ़ जिला का नाम देश और दुनिया भर में रोशन करेंगे। मौके पर सभी ने उपायुक्त एवं जिला प्रशासन रामगढ़ का हृदय से धन्यवाद किया।

## उपायुक्त ने किया नवनिर्मित ईवीएम वेयरहाउस का निरीक्षण

RAMGARH : सोमवार को उपायुक्त रामगढ़ सुश्री माधवी मिश्रा ने छत्तरमांडू स्थित नवनिर्मित, ईवीएम वेयरहाउस का निरीक्षण कर सुरक्षा व्यवस्थाओं का जायजा लिया।

मौके पर कार्यपालक दंडाधिकारी सह जिला उप निर्वाचन पदाधिकारी श्री विशाल कुमार ने उपायुक्त को ईवीएम वेयरहाउस के सुरक्षा प्रोटोकॉल के संबंध में विस्तार पूर्वक जानकारी दी। इस दौरान उपायुक्त ने वेयरहाउस में मौजूद सीसीटीवी कैमरें, अग्निशमन व्यवस्था, कुल कंट्रोल एवं बैलट यूनिट आदि के संबंध में जानकारी लेते हुए महत्वपूर्ण निर्देश दिए। मौके पर जिला जनसंपर्क पदाधिकारी, सहायक अभियंता भवन प्रमंडल, एसएमपीओ सहित अन्य उपस्थित थे।

# भुरकुंडा रेलवे साईडिंग के कोयले में लगी आग पर पूरी तरह से काबू

## प्रदूषण नियंत्रण के लिए सभी मापदंडो का रखा जाता है पूरा ख्याल : धनंजय यादव

PHOTON NEWS RAMGARH

भुरकुंडा रेलवे साईडिंग के कोल स्टॉक में लगी आग पर पूरी तरह से काबू पा लिया गया है। आग को फैलने से शत प्रतिशत रोक दिया गया है। लगभग 80 प्रतिशत कोयले के आग पर काबू पा लिया गया है। बाकी में भी आग बुझाने का कार्य निरंतर जारी है। उक्त बातें सोमवार को भुरकुंडा साईडिंग परिसर में आयोजित प्रेस कांफ्रेंस में साईडिंग संचालक धनंजय यादव ने कही।

उन्होंने कहा कि जिस कोयले में आग नहीं लगा था, उस कोयले को दूसरे स्थान पर स्थानांतरित किया गया है। जिससे कोयले की आग का फैलाव रूक गया है। जले हुए कोयले को उसी स्थान पर फैला कर प्रशासन द्वारा उपलब्ध कराए गए दमकल के माध्यम से आग बुझाने का कार्य जारी है।

प्रेस कांफ्रेंस करते साईडिंग संचालक। ● द फोटोन न्यूज

धनंजय यादव ने कहा कि भुरकुंडा रेलवे साईडिंग में आग लगने कर मुख्य कारण साईडिंग के बगल में रेलवे के जमीन पर अवैध रूप से कर रह रहे लोग हैं। इन लोगों द्वारा निरंतर कोयले की चोरी की जाती है। साथ ही कुछ असमाजिक तत्वों द्वारा निजी स्वार्थ के लिए साईडिंग संचालको पर बे-वजह दबाव बनाया जाता है। कोयले में आग लगने से कुछ दिन पहले भी अवेध रूप से रहने वाले कुछ असामाजिक तत्वों के साथ हम लोगों का वाद-विवाद भी हुआ था। जिसकी शिकायत भदानीनगर ओपी में की गई थी। वैसे गर्मी के दिनों में कोल स्टॉक में आग लग जाती है। लेकिन इतने बड़े स्तर पर यहां आग लगना साजिश का हिस्सा था। हमलोगों को पूर्ण विश्वास है कि कार्य में विघ्न डालने के उद्देश्य से इन्हीं असामाजिक तत्वों द्वारा कोयला में आग लगाई गई होगी।

उन्होंने कहा कि प्रदूषण के सभी मापदंडो का इस साईडिंग में पूर्ण रूप से पालन होता है। सभी अर्हताओं को पूरा करने के कारण ही प्रदूषण विभाग से साईडिंग संचालन की अनुमति मिली है। प्रेस कांफ्रेंस में हरिलाल बेदिया, रईस अंसारी, भोला यादव, किशोर यादव, राजेश आदि मौजूद थे।

# गरसुल्ला में धूमधाम से मना मंडा पूजा, छऊ नृत्य रहा आकर्षण का केंद्र

## दहकते अंगारों पर चल शिवभक्तों ने दिया आस्था का परिचय

PHOTON NEWS RAMGARH

बड़कागांव प्रखंड अंतर्गत गरसुल्ला शिव मंदिर में रविवार-सोमवार की रात्रि आस्था का पर्व मंडल पूजा धूमधाम से मनाया गया। पाहन द्वारा पूरे विधि-विधान से पूजा-अर्चना कर क्षेत्र की हरियाली-खुशहाली की कामना की गई। मंडा पूजा में मच्छर गोथा, फुलकुंदी, बनस झूला सहित धार्मिक अनुष्ठान संपन्न हुए। इस दौरान 101 भोक्ता व 120 सोक्ताइनों ने दहकते अंगारो पर चल अपनी अस्था का परिचय दिया। इससे पूर्व मंडा पूजा का उद्घाटन मुख्य अतिथि झामुमो के केंद्रीय सचिव संजीव बेदिया ने फीता काटकर किया। मौके पर संजीव बेदिया ने कहा कि मंडा पूजा में झारखंड की सभ्यता व संस्कृति झलकती है। संजीव बेदिया ने शिव मंदिर में अपनी ओर से टायल्स व मार्बल लगाने की बात कही। बताया गया पूर्व में भी संजीव बेदिया ने देवी मंडप निर्माण में 50 हजार की राशि उलब्ध कराई थी। मंडा पूजा में बंगाल के दो छऊ टीमों ने उपस्थित दर्शको का भरपूर मनोरंजन किया। मौके पर सांसद प्रतिनिधि बिजय ओझा, विंध्याचल बेदिया, समिति के नंद किशोर बेदिया, भुनेश्वर बेदिया, संटू बेदिया, राजेंद्र बेदिया, लालबहादुर मांझी, बिरसा मांझी, खगेश्वर मांझी, राजेश मांझी, ओम प्रकाश सिंह, राजकुमार सिंह, भरजीत कुमार, हरेंद्र बेदिया, बसंत सिंह, संजय मुंडा, नरेश बेदिया, पवन बेदिया, निर्मल बेदिया, प्रेम बेदिया, अनिल कमार्ली, राजू बेदिया, लखन बेदिया, दशरथ बेदिया, निरंजन सिंह आदि मौजूद थें।

दहकते अंगारो पर चलते शिवभक्त। ● द फोटोन न्यूज

# मुआवजा राशि के विवाद में अधेड़ महिला की हत्या

PHOTON NEWS SAHIBGANJ

तीनपहाड़ थाना क्षेत्र के सावलापुर सड़क टोला में जमीन के मुआवजा के रूप में मिली राशि के बंटबारे के विवाद में रविवार की रात 65 वर्षीय रनधावन टुडू की धारदार हथियार से वार कर हत्या कर दी गई। मृतका के पति शिवलाल सोरेन ने बताया कि रविवार की रात उसकी पत्नी घर के आंगन में अपने नाती के साथ सोई हुई थी। कुछ ही दूरी पर वह भी सोया था। रात लगभग 12.30 बजे उसने पत्नी के चीखने की आवाज सुनी। वह उठकर दौड़ा। देख कि गांव का ही सिरिल सोरेन धारदार हथियार से लगातार उसके पत्नी के गले पर वार कर रहा है। हल्ला करने पर वह उसे भी खदेड़ा। वह डर के मारे छिप गया। सुबह में उसने गांव के लोगों को जानकारी दी। इसके बाद गांव वालों ने पुलिस को सूचना दी।

घटना की जानकारी मिलते थाना प्रभारी चिंतामन रजक घटना स्थल पर पहुंचे तथा मामले की जांच पड़ताल शुरू की। शव को पोस्टमार्टम के लिए राजमहल अनुमंडल अस्पताल भेज दिया। शिवलाल सोरेन ने बताया कि उसकी और उसके उसके गोतिया की जमीन महाराजपुर-शर्मापुर पीडब्ल्यूडी रोड में गई थी। इसके एवज में सरकार द्वारा हाल में मुआवजा राशि दी गई है। इस राशि के बंटवारे को लेकर गोतिया के साथ उसका विवाद लगभग तीन माह से चल रहा था।

उसने बताया कि उसकी ज्यादा जमीन सड़क में गई थी जिस वजह से उसे ज्यादा राशि मिलनी चाहिए लेकिन राशि चार बराबर भाग में बांट दिया गया। वह अपना हिस्सा मांग रहा था। इसी वजह से उसकी पत्नी की हत्या कर दी गई। कुछ माह पूर्व विवाद को लेकर गांव में पंचायत भी हुई थी। मृतक की तीन बेटी है। सभी की शादी हो चुकी है। उसे कोई पुत्र नहीं है। नाती साथ रहता है। घटना के बाद गांव में मातम का माहौल है।

उधर, घटना को अंजाम देने के बाद सिरिल सोरेन वहां से फरार हो गया। इस मामले में शिवलाल सोरेन के बयान पर मामला दर्ज करने की तैयारी चल रही है। पुलिस आरोपित की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी भी कर रही है।

# धनबाद के छोटे और सीमांत किसानों को मिलेगा जोड़ा बैल, पशुपालन विभाग ने मांगे आवेदन

PHOTON NEWS DHANBAD

धनबाद के छोटे और सीमांत किसानों के लिए कृषि एवं पशुपालन विभाग की ओर से जोड़ा बैल योजना की शुरूआत की गई। इस योजना के तहत किसानों को 90 प्रतिशत अनुदान पर जोड़ा बैल दिया जाएगा। धनबाद में ऐसे किसानों के लिए आवेदन शुरू कर दिए गए हैं। किसानों के पास अपनी जमीन होनी चाहिए, जहां पर वह पारंपरिक खेती करते हैं। जिला पशुपालन पदाधिकारी डॉ प्रवीण कुमार ने बताया कि पहले चरण के तहत धनबाद में कुल 28 किसान को जोड़ा बैल दिए जाएंगे। इसके लिए तैयारी शुरू कर दी गई है।

कृषि विभाग ने जोड़ा बैल वितरण स्कीम के तहत अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति, आदिम जनजाति के बीपीएल श्रेणी के लाभुकों को प्राथमिकता के आधार पर इसका लाभ देने को जिलों से कहा है। इसके लिए ग्राम सभा का गठन किया जाएगा। ग्राम सभा में ही लाभुकों का चयन करने करने का इंतजाम किया गया है। ग्राम सभा के अनुशंसा के बाद लाभुक के नाम को संबंधित प्रखंड कार्यालय भेजा जाएगा। यहां से इस नाम को जिला पशुपालन अधिकारी के पास भेजा जाएगा। इसके बाद उपायुक्त के स्तर से पास किया जाएगा। ऐसे लाभुक के चयन पर विशेष ध्यान दिया जाना है, जो पशुधन की गतिविधियों से जुड़े होंगे।

लाभुक को सबसे पहले ग्राम सभा में आवेदन करना है। इसके लिए अपने किसी भी सरकारी पहचान पत्र दिखाना होगा। अनुसूचित जाति अथवा अनुसूचित जनजाति के लिए भी प्रमाण पत्र दिखाना है।

धनबाद के ग्रामीण इलाके में बड़े पैमाने पर धान की खेती होती है। कई सक्षम किसान के पास ट्रैक्टर से जुताई के साधन होते हैं। लेकिन छोटे और सीमांत किसान के पास ऐसी पूरी व्यवस्था नहीं होती है। अब ऐसे किसानों को सरकार की ओर से बैल मिलने पर उन्हें काफी सहूलियत होगी।

## झारखंड शिक्षा परियोजना के तत्वावधान में जिलास्तरीय स्कूल रूआर पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

# बच्चों में पढ़ाई के प्रति दिलचस्पी जगाएं : उपायुक्त

PHOTON NEWS HAZARIBAGH

हजारीबाग नगर भवन में सोमवार को झारखंड शिक्षा परियोजना के तत्वावधान में आयोजित जिलास्तरीय स्कूल रूआर पर3 एक दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ किया गया। मौके पर मुख्य अतिथि उपायुक्त नैंसी सहाय ने कहा कि शिक्षक बच्चों में पढ़ाई के प्रति दिलचस्पी जगाएं और उन्हें प्रेरित करें। 22 जून से 15 जुलाई तक चलनेवाले बैक टू स्कूल कैंपेन के दौरान घर-घर जाकर छूटे या ड्रॉपआउट बच्चों का विद्यालयों में नामांकन कराएं।

सबसे बड़ी चुनौती बच्चों के स्कूलों में ठहराव की है। इसके लिए विभिन्न शिक्षाप्रद, संदेशपरक और मनोरंजक गतिविधियों से उन्हें स्कूलों से जोड़े रखें। इसके लिए आमजन से लेकर

कार्यशाला में उपस्थित उपायुक्त व अन्य। ● द फोटोन न्यूज

जनप्रतिनिधियों और सामाजिक कार्यकताओं व संस्थाओं के प्रतिनिधियों से सहयोग लें। इस अभियान में शिक्षक और शिक्षा से जुड़े सभी कर्मियों व पदाधिकारियों की अहम भूमिका है। अभिभावकों को भी प्रेरित करने की जरूरत है कि वह बच्चों को पढ़ाएं और स्कूल जरूर भेजें। इस क्षेत्र की बेहतरी के लिए जिला प्रशासन पूरा सहयोग करेगा। इसमें सामाजिक सहभागिता की आवश्यकता है। इस अभियान को प्लान बनाकर सफलतापूर्वक अंजाम देने की आवश्यकता है, उन्होंने मैट्रिक-इंटर नतीजे में हजारीबाग के राज्य में बेहतर मुकाम हासिल करने पर शिक्षकों और शिक्षा पदाधिकारियों को बधाई दी।

बतौर विशिष्ट अतिथि प्रशिक्षु आईएएस शताब्दी मजूमदार ने कहा कि बच्चों के नामांकन से ज्यादा जिम्मेवारी उनके स्कूलों में ठहराव की है. विभिन्न प्रतियोगिताओं और कार्यक्रमों के जरिए बच्चों में विद्यालय और पढ़ाई के प्रति जज्बा जगाया जा सकता है. इसमें समाज के हर वर्ग के लोगों की सहभागिता की जरूरत है। इससे पहले विषय प्रवेश कराते हुए डीइओ उपेंद्र नारायण ने कहा कि अभियान चलाकर ड्रॉपआउट और अनामांकित बच्चों को स्कूल से जोड़ा जाएगा। इसके लिए शिक्षा विभाग ने प्लान तैयार कराया है. इससे पहले बैक टू स्कूल कैंपेन का विजुअल पर्दे पर दिखाया गया. इससे पहले पदमा कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय की छात्राओं ने स्वागत गान प्रस्तुत किया. मंच संचालन झारखंड शिक्षा परियोजना के संजय तिवारी और इचाक की बीपीओ वंदना श्रीवास्तव ने किया. मौके पर बतौर विशिष्ट अतिथि जिला कोषागार पदाधिकारी उज्ज्वल कुमार चौरसिया, बरकट्ठा विधायक के प्रतिनिधि आजाद जी, शिक्षाप्रेमी बटेश्वर प्रसाद मेहता, झाशिप के एडीपीओ सुनीला लकड़ा, एआरपी लालिमा ज्योत्सना लकड़ा, एओ रवि कुमार सिन्हा, अखिल झारखंड प्राथमिक शिक्षक संघ के जिलाध्यक्ष प्रवीण कुमार, अख्तरी खातून, मधुसूदन, जय नारायण दास, अनुपमा रानी, बीइइओ, बीपीओ, बीआरपी-सीआरपी और झारखंड शिक्षा परियोजना के पदाधिकारी और कर्मी मौजूद थे।

## BRIEF NEWS

### डीसी की अध्यक्षता में हुई जिला अनुकंपा समिति की बैठक

RAMGARH : सोमवार को उपायुक्त रामगढ़ सुश्री माधवी मिश्रा की अध्यक्षता में उनके कार्यालय कक्ष में जिला अनुकंपा समिति की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक के दौरान समिति के समक्ष कुल 3 मामलों को रखा गया। इस दौरान समिति द्वारा आवेदनवार प्राप्त दस्तावेजों की समीक्षा कर महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। इस दौरान उप विकास आयुक्त, अपर समाहर्ता, जिला कल्याण पदाधिकारी, कार्यपालक दंडाधिकारी सह स्थापना उप समाहर्ता, जिला शिक्षा पदाधिकारी, एसएमपीओ सहित अन्य उपस्थित थे।

### प्रतिभा सम्मान सह विदाई समारोह का किया गया आयोजन

RANCHI : रामटहल चौधरी उच्च विद्यालय तुरमुली में शनिवार को प्रतिभा सम्मान सह विदाई समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उदघाटन मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद खीरु महतो,पूर्व सांसद रामटहल चौधरी, जिप सदस्य मनोज वाजपेयी, पूर्व जिप उपाध्यक्ष पार्वती देवी,मुखिया कुशेन्द्र पाहन ने किया। मौके पर राज्यसभा सांसद खीरु महतो ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र में उक्त विद्यालय शिक्षा का अलख जगा रहा है। साथ ही उन्होंने अपने कोष से स्कूल का चहारदीवारी बनवाने की बात कही। कार्यक्रम में अतिथियों ने वर्ष 2023 के इंटर तथा मैट्रिक परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों को सम्मानित भी किया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में पंसस गौरव कुमार, कृष्णा महतो,हीरालाल महतो,संजय पटेल की सराहनीय भूमिका रही।

### श्री चैती दुर्गा मंदिर में किया गया भोग का वितरण

RANCHI : श्री चैती दुर्गा मंदिर, भुतहा तलाब में प्रत्येक शनिवार की तरह इस शनिवार को भी भोग वितरण किया गया। मंदिर के पुजारी सुभाष मिश्रा जी के द्वारा भोग लगाया गया। प्रत्येक शनिवार की भांति भोग का वितरण भक्त जनों के बीच किया गया। इसमें खिचड़ी, अचार, चिप्स आदि प्रमुख रूप से थे। कल चैती दुर्गा मंदिर भुतहा तलाब के प्रांगण में भोले की फौज के द्वारा सामूहिक भजन का कार्यक्रम किया जाएगा साथ ही प्रसाद वितरण किया जाएगा। इसमें मुख्य रूप से उपस्थित महासमिति के मुख्य संरक्षक श्री किशोर साहू, श्री रमेश सिंह, श्री विशाल कृष्णा, श्री दिलीप गुप्ता, श्री जयकांत चौधरी, श्री संजय सिंह (लल्लू सिंह), श्री टुन्ना सिंह,श्री राहुल सिंह, श्री नमन भारतीय, श्री राहुल रजक, श्री संजय तिवारी, श्री करण सिंह, मोहित रजक, आकाश रजक, अर्जुन सिंह, रोहन सिंह, आशीष रजक, प्रियांशु वर्मा, सौरभ रजक, शेखर रजक, आयुष वर्मा, यश वर्मा, समीर नायक आदि उपस्थित थे।

### विधानसभा स्तरीय लाभार्थी सम्मेलन का आयोजन

RANCHI : केंद्र की भाजपा सरकार पिछले 9 वर्षों से सभी लोगों का सर्वांगीण विकास कर रही है। केंद्र के विभिन्न योजनाओं का लाभ सीधे तौर पर मिल है। कांग्रेस के शासनकाल में घोटालों का रिकॉर्ड टूट गया था। उक्त बातें भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष प्रो यदुनाथ पांडेय ने सोमवार को उरुगुट्टू बाजारटांड़ में भाजपा द्वारा आयोजित विधानसभा स्तरीय लाभार्थी सम्मेलन में बतौर मुख्य अतिथि कही। साथ ही उन्होंने कहा कि हेमंत सरकार भ्रष्टाचार की पराकाष्ठा में डूबी हुई है। हेमंत सरकार तुष्टिकरण के तहत राज्य को जला रही है। वहीं विधायक समरीलाल ने कहा कि केंद्र सरकार बिना भेदभाव के सभी लोगों को विभिन्न योजनाओं का लाभ मिल रहा है। सम्मेलन को वरीय नेता कमलेश राम,अनिल टाइगर, सीताराम रवि,पूर्व विधायक जितुचरण राम,जिप सदस्य मनोज वाजपेयी, सुषमा देवी,नसीबलाल महतो आदि ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम में खलारी,बुढ़मू,कांके प्रखंड के सैकड़ों लाभार्थी शामिल हुए। कार्यक्रम के सफल आयोजन में गोपाल महतो,उतपल शाहदेव,रणविजय शाहदेव, अर्जुन महतो,जलेश्वर महतो,सुरेश महतो,बालगोविंद मुंडा आदि की सराहनीय भूमिका रही।

### रामगढ़ के साहित्यकारों को मिला गिरिडीह में सम्मान, अपनी गीत, गजलों से लोगों का जीता दिल

RAMGARH : जोहार कलमकार मंच झारखंड गिरिडीह के वार्षिक समारोह में रामगढ़ के कवि, साहित्यकारों को सम्मानित किया गया। रामगढ़ के सरोज झा झारखण्डी, राकेश श्रीवास्तव नाजुक, सुदीप अग्रवाल संकल्प, शैलजा कुमारी को मोंगिया सरिया के एमडी गुणवंत सिंह मोंगिया, प्रो. राममोहन पाठक, संस्था की अध्यक्षा ममता बनर्जी ने अंग वस्त्र और प्रतीक चिन्ह देकर सबों को सम्मानित किया। रामगढ़ के कवियों ने अपनी रचनाओं से सभागार में उपस्थित लोगों का मन जीत लिया। इस मौके पर राष्ट्रीय कवि संगम के प्रांतीय अध्यक्ष विजय कुमार मेवाड़, उत्तम सिन्हा, विक्रांत कुमार, मनोज कुमार, अमित कुमार, ललन जी सहित दर्जनों लोगों ने बधाई दी।

### जीएम ऑफिस को बीटीटीआई में शिफ्ट करने की पहल का कोल फील्ड मजदूर यूनियन ने किया स्वागत

RAMGARH : कोल फिल्ड मजदूर यूनियन की बैठक सोमवार को भुरकुंडा थाना के पीछ प्रधान कार्यालय में हुई। इसकी अध्यक्षता यूनियन के महामंत्री सुरेंद्र पाठक व संचालक वरीय उपाध्यक्ष विजय कुमार मिश्र ने किया। बैठक में बरका-सयाल प्रबंधन द्वारा जीएम ऑफिस स्मॉल हॉल टाउन का निर्माण बीटीटीआई भुरकुंडा में करने की पहल का स्वागत करते हुए प्रबंधन को धन्यवाद दिया गया। मौके पर सुरेंद्र पाठक ने बताया कि वर्ष 1992 में जीएम ऑफिस को बरकाकाना से सयाल लाया गया था। जिसका नाम बरका-सयाल रखा गया था। जिसका हमारी यूनियन ने पूरजोर विरोध किया था। वहीं विजय कुमार मिश्र ने कहा कि जीएम ऑफिस को भुरकुंडा में लाने के लिए जीएम अजय कुमार सिंह व भुरकुंडा पीओ मनोज पाठक की सराहनीय भूमिका है। बैठक में राजनाथ यादव, केपी मेहता, रीता कुजूर, योगेंद्र कुमार आदि मौजूद थें।

### उपायुक्त की अध्यक्षता में बैठक, पुलिस प्रशासन की टीम को अतिरिक्त सतर्कता के दिए निर्देश

HAZARIBAGH : उपायुक्त की अध्यक्षता में बैठक कर पर्व त्यौहार के दौरान असामाजिक तत्वों की हरकतों, सामाजिक सौहार्द को बिगाड़ने के प्रयासों की संभावित खतरों के प्रति आगाह करते हुए उपायुक्त नैन्सी सहाय एवं पुलिस अधीक्षक चोथे मनोज रतन ने पुलिस व प्रशासनिक अधिकारियों को अतिरिक्त सतर्कता, सावधानी बरतने सहित सूचना तंत्र को मजबूत करने को कहा। साथ ही धार्मिक परिसरों के आसपास सीसीटीवी कैमरे का अधिष्ठापन सुनिश्चित करने के लिए संबंधित ट्रस्ट को निर्देशित देने एवं निर्देश का अपने अपने इलाकों में अनुपालन कराने को कहा। अधिकारियों को संवेदनशीलता एवं तत्परता से सूचना पर कारवाई करने को कहा गया।

### स्वास्थ्य समृद्धि वाहन परियोजना के तहत पतरातू प्रखंड में हुआ शिविर का आयोजन

RAMGARH : रामगढ़ जिला अंतर्गत सुदूर ग्रामीण क्षेत्र के कुपोषित बच्चों के पोषण स्थिति में सुधार के मद्देनजर जिला प्रशासन रामगढ़ की पहल के अंतर्गत संचालित स्वास्थ्य समृद्धि वाहन परियोजना के तहत सोमवार को पतरातू प्रखंड अंतर्गत पतरातू पंचायत दुर्गा मंडप के समीप स्थित आंगनबाड़ी केंद्र में शिविर का आयोजन किया गया। राजकुमारी फाउंडेशन के सहयोग से क्रियान्वित स्वास्थ्य समृद्धि वाहन परियोजना के तहत पतरातू प्रखंड अंतर्गत पतरातू पंचायत के चार अन्य केंद्रों को भी शिविर में शामिल किया गया है जिसके माध्यम से पतरातू बस्ती, पतरातू भुईयां टोली, शांति मोहल्ला एवं ब्लॉक मोड़ पतरातु के निवासी शिविर में जाकर अपने बच्चों की स्वास्थ्य जांच करवा सकते हैं। शिविर के दौरान राजकुमारी फाउंडेशन द्वारा चिन्हित कुपोषित बच्चों के पोषण स्तर में सुधार हेतु 15 दिनों तक कुपोषित बच्चों को आहार विशेषज्ञ की निगरानी में विशेष भोजन उपलब्ध कराया जाएगा। साथ ही अभिभावकों की काउंसलिंग भी की जाएगी। शिविर के दौरान कुल 80 बच्चों की कुपोषण जांच की गई।

# RATHYATRA आज, भगवान जगन्नाथ भाई बलभद्र व बहन सुभद्रा संग भक्तों को देंगे दर्शन

## सोमवार को प्रभु के नव यौवन रूप का हुआ दर्शन, जमशेदपुर के 10 से अधिक जगहों से निकलेगी रथयात्रा, तैयारी पूरी

**PHOTON NEWS JAMSHEDPUR:** शहर में रथयात्रा की तैयारी अंतिम चरण में है। 20 जून को शहर के अलग अलग क्षेत्रों से अलग अलग संगठनों की ओर से रथयात्रा निकाली जाएगी। इस दौरान भगवान जगन्नाथ भाई बलभद्र जी और बहन सुभद्रा जी के साथ रथ पर सवार होकर अपने भक्तों को दर्शन देते हुए मौसीबाड़ी जाएंगे। नेत्र उत्सव के बाद भगवान अपने भक्तों को पहली बार सार्वजनिक दर्शन देंगे। शहर में आयोजित होने वाली रथ यात्रा में हजारों की संख्या में लोग शामिल होंगे। यात्रा सभी जगहों से दोपहर बाद निकलेगी।


रथ यात्रा को सजधज कर तैयार भगवान जगन्नाथ का रथ ● फोटोन न्यूज

रथ यात्रा का आयोजन पूरे शहर भर में धूमधाम से निकाली जायेगी। रथयात्रा को लेकर पूजा समितियां अपने स्वयं सेवक के साथ पूरी तरह से तैयार है, ताकि यात्रा के दौरान किसी तरह के दिक्कत न हो सके। शहर भर में लगभग आधे दर्जन से ज्यादा मंदिरों से इस बार भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा निकलेगी। जिसमें मुख्य रूप से इस्कॉन की ओर से बिष्टुपुर राम मंदिर, उत्कल एसोसिएशन साकची, बड़ा हनुमान मंदिर मानगो, बेल्डीह नागा मंदिर, खासमहल जगन्नाथ मंदिर, नामदा बस्ती काली मंदिर, रथ गली जुगसलाई, गांधी आश्रम बाराद्वारी में निकलने वाली यात्रा प्रमुख है। रथ यात्रा को लेकर प्रशासन के सुरक्षा कर्मी शहर के हर कोने पर तैनात रहेंगे।

रथ यात्रा को यादगार बनाने के लिए शहर के भक्त इस बार भगवान जगन्नाथ के रथ के आगे फूल से स्वागत करेंगे। साथ ही फूलों की वर्षा के साथ भगवान का जयघोष करते हुए रथ को खींचेंगे। रथ यात्रा को लेकर इस्कॉन मंदिर जमशेदपुर द्वारा इस बार खास तैयारी किया गया है। इस्कॉन मंदिर जमशेदपुर द्वारा इस बार प्रभु जगन्नाथ की रथ यात्रा बिष्टुपुर राम मंदिर से निकाली जाएगी। यात्रा के दौरान इस्कॉन भक्तों के साथ साथ शहर के विभिन्न धार्मिक संगठनों एवम भक्तो की कीर्तन मंडली, हरे कृष्णा -हरे रामा के महामंत्र की धुन पर अपने प्रभु जगन्नाथ, मां सुभद्रा एवं बलभद्र जी के रथ को मौसी बाड़ी तक ले जाएंगे। इसकी जानकारी इस्कॉन मंदिर जमशेदपुर के प्रमुख स्वामी पद्मनाभ जगन्नाथ दास ने दी। उन्होंने बताया कि रथ यात्रा की तैयारी पिछले एक महीने से चल रही है। उन्होंने कहा कि रथ यात्रा के लिए तीन रथ तैयार किए गए हैं , जिस पर प्रभु जगन्नाथ, बहन सुभद्रा और बड़े भैया बलभद्र जी विराजमान हो कर अपने भक्तो के साथ नगर भ्रमण करेंगे । उन्होंने बताया कि इस आयोजन में शहर एवं आसपास के इलाकों से हजारों की संख्या में भक्त शामिल होंगे।

### पमुख जगहों से यात्रा निकलने का समय

| | | |
|---|---|---|
| उत्कल ऐसासिएशन | : | दोपहर 2.30 बजे |
| बेल्डीह नागा मंदिर | : | शाम 3 बजे |
| गांधी आश्रम बाराद्वारी | : | 3.30 बजे |
| बड़ा हनुमान मंदिर मानगो | : | दोपहर 3 बजे |

**विभिन्न संगठनों के 750 स्वयंसेवक रथ यात्रा की उठाएंगे जिम्मेदारी :** स्वामी पद्मनाभ जगन्नाथ दास ने बताया कि रथ यात्रा में लगभग 750 की संख्या में विभिन्न संगठनों के स्वयंसेवक तीनो रथों की अलग-अलग जिम्मेदारी निभाएंगे।

ये सभी रथ यात्रा की पूरी प्रक्रिया, संचालन, यात्रा के मार्ग में आने वाली रुकावटें को दूर करने क काम करेंगे। साथ हि यात्रा में शामिल भक्तो को असामाजिक तत्वों से सुरक्षा करेंगे।

यात्रा में शामिल होने वाले संगठनों में मुख्य रूप से अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद जमशेदपुर एवं सैन्य मातृ शक्ति , क्रीड़ा भारती , द वॉइस ऑफ ह्यूमैनिटी , रॉयल योगा, रोबिन हुड आर्मी, साईं वाटिका, श्री बाल गणपति विलास, ग्रीन कैप्स फाउंडेशन , प्रभु प्रेमी संघ, बिरसा मुंडा जन कल्याण समिति, जय हिंद क्लब एग्रिको, साइलेंट टेल्स एनजीओ, सहित दर्जनों छोटे बड़े संगठन शामिल होंगे।

उन्होंने कहा कि रथयात्रा दोपहर 2:30 बजे बिष्टुपुर आंध्र भक्त श्री राम मंदिर से आरंभ हो कर, गोपाल मैदान जुस्को गोल चक्कर, स्ट्रेट माइल रोड, कीनन स्टेडियम, साक्षी बड़ा गोल चक्कर, कालीमाटी रोड होते हुए शहीद चौक, जे एन ए सी गोल चक्कर पर जाकर शाम 7:30 बजे समाप्त होगा। उन्होंने बताया कि रथ यात्रा के दौरान 4.5 किलोमीटर की दूरी तय की जाएगी एवं रास्ते में जलपान, प्रसाद एवं विभिन्न प्रकार के पेय पदार्थों से भरे स्टॉल की व्यवस्था विभिन्न सामाजिक संगठनों एवं भक्तों द्वारा की जा रही है।

# जुबली पार्क में बाइक चोरी करने के आरोप में पकड़े गए दो युवक

**PHOTON NEWS JAMSHEDPUR:** जुबली पार्क में सोमवार की सुबह बाइक चोरी करने के आरोप में दो युवकों को लोगों ने रंगे हाथों पकड़ लिया। आक्रोशित लोगों ने पहले दोनों की जमकर पिटाई की। इसके बाद आरोपियों को पुलिस बुलाकर सौंप दिया गया। मोटरसाइकिल चोरी करने के दोनों आरोपी अपनी बाइक लेकर आए थे। पुलिस दोनों आरोपियों को हिरासत में लेने के साथ बाइक को जब्त कर लिया है। हाल के कुछ दिनों में चोरी की घटनाएं बढ़ी हैं। इसको लेकर लोगों में पहले से नाराजगी है। घटना के संबंध में मौके पर मौजूद लोगों ने बताया कि दोनों आरोपी एक बाइक लेकर फरार होने का प्रयास कर रहे थे। इसी दौरान कुछ लोगों ने इन्हें देख लिया। इसके बाद दोनों को रंगे हाथ पकड़ लिया गया। बताया गया कि लोग सुबह मॉर्निंग वॉक पहुंचे हुए थे। इसी दौरान दोनों आरोपी घटना को अंजाम देने की फिराक में थे। फिलहाल पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है।

# एसडीएसएम स्कूल में सीबीएसई कैपिसिटी बिल्डिंग कार्यक्रम का हुआ आयोजन

**Jamshedpur:** एसडीएसएम स्कूल फॉर एक्सीलेंस में 18 और 19 जून को गणित कैपिसिटी बिल्डिंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कई प्रतिभागी शामिल हुए। सभी आये प्रतिभागी प्रशिक्षण कार्यक्रम का लाभ उठाया । कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप से सीओई, पटना के रिसोर्स पर्सन डिवाइन हैप्पी स्कूल के कुमार पीयूष और डीएवी नंदराज पब्लिक स्कूल, रांची के प्रसेनजीत कुमार ठाकुर उपस्थित थे। दोनों अतिथियों ने कैपिसिटी बिल्डिंग कार्यक्रम में दूर दूर से आये प्रतिभागियों को प्रारम्भिक गणित से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी साझा की।

# बामनगोड़ा में तालाब में तैरता मिला अधेड़ व्यक्ति का शव, पुलिस ने शुरू की जांच

**PHOTON NEWS JAMSHEDPUR:** परसुडीह थाना अंतर्गत बामनगोडा तालाब में एक व्यक्ति का शव तालाब में तैरता हुआ मिला है। स्थानीय लोगों ने इसकी सूचना परसुडीह पुलिस को दी। पुलिस घटनास्थल पर पहुंच कर शव को कब्जे में लेकर जांच पड़ताल में जुट गई। पुलिस की मानें तो शव की पहचान स्थानीय निवासी 55 वर्षीय बामनगोडा निवासी सुरेश सरकार के रूप में की गई है जो कि लगातार इस तालाब में नहाने आते थे और कल शाम में भी तालाब में नहाने आए थे जहां अनुमान लगाया जा रहा है कि पैर फिसल जाने की वजह से तालाब में डूब कर इनकी मौत हो गई है, सूचना पाकर परसुडीह पुलिस दलबल के साथ बामनगोडा तालाब पहुंची और शव को तालाब से बाहर निकाला, परसुडीह पुलिस पदाधिकारी ने बताया कि अज्ञात शव की सूचना परवे घटनास्थल पर पहुंचे जहां मृतक सुरेश सरकार के भतीजे ने शव की पहचान अपने चाचा सुरेश सरकार के रूप में की है। पूछताछ के क्रम में भतीजे ने बताया कि उनके चाचा की शादी नहीं हुई थी अक्सर वे तालाब में नहाने आते थे रविवार शाम में भी वे तालाब में नहाने आए थे, पुलिस पदाधिकारी ने बताया कि जांच पड़ताल की जा रही है जांच के बाद ही मृत्यु के कारण का पता चल पाएगा हालांकि शव को पुलिस ने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भिजवा दिया है। वहीं घटना की जानकारी मिलने पर बड़ी संख्या में लोग तालाब के साथ जुट गए थे।

बामनगोड़ा में तालाब के पास जुटे लोग ● फोटोन न्यूज

# एकदिवसीय रोजगार मेला 22 जून को गोलमुरी में होगा आयोजित

**PHOTON NEWS JAMSHEDPUR:** अवर प्रादेशिक नियोजनालय, जमशेदपुर, गोलमुरी कार्यालय परिसर में आगामी 22 जून को एक दिवसीय दत्तोपंत ठेंगरी रोजगार मेला का आयोजन किया जा रहा है। इस मेले में जिले एवं राज्य के बाहर के अलग-अलग नियोजकों द्वारा विभिन्न पदों के लगभग 1500 रिक्तियां उपलब्ध कराई गई है जिसमें मुख्यत टी०आर०एफ० लिमिटेड, जमशेदपुर, अलाईन्स इन्टर प्राईजेज, युवा शक्ति फाउन्डेशन, जमशेदपुर, क्वेस क्रप लिमिटेड (टाटा मोटर्स लिमिटेड), वालकारू इन्टरनेशनल प्रा० लि०, स्पर्धा प्रकाशन, कदमा, जमशेदपुर, स्ट्रीम डिजिटल सविर्सेज, डिमना, जमशेदुपर, ड्रोव सिक्यूरिटी सोलुशन प्रा० लि० एस०के० टीम्बर तथा मसकट इल्केट्रोमेक प्रा० लि० एवं अन्य नियोजक है। इस रिक्ति के लिए 18 वर्ष से अधिक आयु के बेरोजगार युवक-युवतियां, जिनकी शैक्षणिक योग्यता न्यूनतम मैट्रिक पास से लेकर अधिकतम बी.टेक योग्यताधारी आवेदक भाग ले सकते हैं। इसके लिए उम्मीदवार अपने सभी मूल प्रमाण पत्र यथा- बायोडाटा, शैक्षणिक योग्यता का प्रमाण पत्र, आधार कार्ड की छायाप्रति, जाति प्रमाण पत्र, आवासीय प्रमाण पत्र के साथ-साथ नियोजनालय का निबंधन संख्या के साथ पूर्वाहन 10.30 बजे से लेकर 01.30 बजे तक मेला स्थल पर उपस्थित होना सुनिश्चित करेंगे। उम्मीदवार पहले में निबंधित है तो उन्हें निबंधन कराने की आवश्यकता नहीं है।

# सात माह पूर्व गंगाधर की निकाल ली गई थी आंख, जांच करने एमजीएम पहुंची टीम

## न्याय को भटक रहा गंगाधर, मोतियाबिंद के आपरेशन के दौरान निकाली थी आंख

**PHOTON NEWS JAMSHEDPUR:** घाटशिला के कीताडीह निवासी बुजुर्ग गंगाधर के आंख निकालने का मामला जोर पकड़ लिया है। सोमवार को इस मामले की जांच करने के लिए सिविल सर्जन डा. जुझार माझी महात्मा गांधी मेमोरियल (एमजीएम) मेडिकल कॉलेज अस्पताल पहुंचे। इस दौरान अधीक्षक डा. रवींद्र कुमार से मिलकर इससे संबंधित सभी जानकारी ली। दरअसल, गंगाधर मोतियाबिंद रोग से ग्रस्त था। इसके बाद उसे गांव की एक सहिया की मदद से जमशेदपुर के साकची स्थित केसीसी आई हास्पिटल में आपरेशन के लिए लाया गया था। यहां पर आपरेशन कराने के बाद मरीज के आंख में इंफेक्शन हो गया। इसके बाद उसे कोलकाता ले जाया गया, जहां पर उसके असली आंख को निकाल कर आर्टिफिशियल आंख लगा दिया गया। यह मामला तब पकड़ में आया जब गंगाधर के आंख में दर्द बढ़ने लगा। इसके बाद इस मामले की जांच को लेकर एक टीम भी गठित किया गया, जिसमें एमजीएम के तीन सदस्यों को शामिल किया गया था। टीम ने भी आंख निकालने की पुष्टि कर दी है। इसके बावजूद भी अभी तक कार्रवाई नहीं होना कई सवाल खड़े करते हैं। इधर, गंगाधर न्याय पाने को लेकर दर-दर भटक रहे हैं। कभी ब्लॉक ऑफिस जाते तो कभी नेता व विधायक के पास जाते हैं, लेकिन उनकी सुनने वाला कोई नहीं है।

एमजीएम में जांच को पहुंची टीम ● फोटोन न्यूज

# कलश यात्रा के साथ साकची शीतला मंदिर में लक्ष्मी नारायण यज्ञ की हुई शुरूआत

**PHOTON NEWS JAMSHEDPUR:** विश्व कल्याण व शांति के उदेश्य से साकची स्थित शीतला मंदिर में सोमवार को लक्ष्मी नारायण महायज्ञ की शुरूआत की गई। यज्ञ का अयोजन 27 जून तक लगातार चलेगा। यज्ञ की शुरूआत भव्य कलश यात्रा के साथ शुरू हुआ। कलश यात्रा में लगभग 551 महिला पुरुष भक्त शामिल हुए। सभी भक्त साकची मानगो स्थित स्वर्णरिखा नदी घाट पहुंचे। सभी ने कलश में जल भरकर पुनः मंदिर प्रांगण में बनाये गए यज्ञ मंडप की परिक्रमा कर कलश स्थापित किए। कलश यात्रा में विशेष रूप से झारखंड के स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने यज्ञ देवता से विश्व कल्याण की कामना की। यज्ञ आयोजन समिति के धनजी पांडे ने बताया कि यज्ञ पूजा की सारी तैयारियां पहले ही कर लिया गया था। उन्होंने कहा कि यज्ञ के माध्यम से हम सभी ईश्वर से इस प्रचण्ड गर्मी से राहत के लिए वर्षा की माँग कर रहे है। उन्होंने बताया कि यज्ञ की समापन 28 जून को होगा। उस दिन महा भंडारा का आयोजन किया जायेगा। यज्ञ में मुख्य पुरोहित के रूप में पंडित शिवेंद्र स्वामी महाराज है। उन्होंने बताया कि यज्ञ में प्रतिदिन सुबह हवन, यज्ञ मंडप की फेरी के साथ वेदी पूजा, पंचांग पूजा किया जायेगा। यज्ञ में पूजा के लिए विशेष रूप से भोजपुर से पांच पंडितों को बुलाया गया है। इस अवसर पर शीतला मंदिर समिति के धनजी पांडे, विवेक पांडे, बिनोद पांडे, पीन्टू पांडे, सतीश पांडे आदि उपस्थित थे।

# मारपीट मामले में किन्नरों ने बमामाईंस थाना परिसर में जमकर किया प्रदर्शन

**PHOTON NEWS JAMSHEDPUR:** बमामाईंस थाना अंतर्गत सिदो-कान्हू बस्ती निवासी बोनी किन्नर के साथ घर में घुसकर मारपीट की गई. इस घटना के बाद किन्नर थाना पहुंचे और कार्रवाई की मांग को लेकर थाना परिसर में ही प्रदर्शन करने लगे. थाना प्रभारी अजय कुमार द्वारा कार्रवाई का आश्वासन देने के बाद मामला शांत हुआ. घटना की जानकारी देते हुए पिंकी किन्नर ने बताया कि वर्तमान समय में सिदो कान्हू बस्ती में सैकड़ों की संख्या में किन्नर किराए के मकान में रह कर अपना गुजर-बसर कर रहे हैं. सोमवार को अचानक बस्ती निवासी इदु व उसके साथी ने बोनी किन्नर के घर में घुसकर उससे पैसे की मांग की साथ ही उसके साथ जबरन दुष्कर्म करने का भी दबाव दिया. बोनी द्वारा विरोध करने पर दोनों युवकों ने लाठी डंडे से बोनी किन्नर की जमकर पिटाई कर डाली और घटनास्थल से फरार हो गए. इस घटना में बोनी किन्नर घायल हो गई. उन्होंने बताया कि लगातार क्षेत्रवासियों द्वारा परेशान किया जाता है फिर भी वे सब कुछ सहन कर अपना जीवन यापन व्यतीत करते हैं. उन्होंने कहा कि जब तक दोनों युवकों की गिरफ्तारी नहीं होगी उनका प्रदर्शन जारी रहेगा.

## जिले में बैक टू स्कूल कैंपेनिंग की हुई शुरूआत, इसके तहत ड्रापआउट बच्चों को स्कूल से जोड़ा जाएगा

# बच्चों के मानसिक, शारीरिक विकास को लेकर खेलकूद योगाभ्यास व अन्य गतिविधि भी करायें: अपर उपायुक्त

**PHOTON NEWS JAMSHEDPUR:** आंध्रा एसोसिएशन सभागार, कदमा में शिक्षा विभाग द्वारा स्कूल रुआर-2023 (Back to School Campaign) को लेकर जिला स्तरीय कार्यशाला सोमवार को आयोजित हुई। इसके तहत 15 जुलाई तक चलाये जा रहे इस कार्यक्रम के तहत 6-18 आयुवर्ग के सभी बच्चों को नामांकित करने का लक्ष्य रखा गया है। जिला शिक्षा पदाधिकारी निर्मला बरेलिया ने बताया कि विद्यालय से बाहर रह गये बच्चों का शत-प्रतिशत नामांकन, अप्रवासी, अनामांकित एवं विशेष आवश्यकता वाले बच्चे का नामांकन, पिछले वर्षों में कक्षा 1 से 11 तक के नामांकित सभी बच्चों का अगली कक्षाओं में शत-प्रतिशत नामांकन एवं उपस्थिति की पुष्टि, प्राथमिक स्तर (कक्षा १) से उच्च प्राथमिक स्तर (कक्षा १क) एवं उच्च प्राथमिक स्तर से माध्यमिक स्तर में नामांकन एवं ठहराव, सभी बच्चों की उपस्थिति ई-विद्यावाहिनी में दर्ज कराना एवं नियमित अनुश्रवण करना तथा नव-नामांकित बच्चों का शत-प्रतिशत उपस्थिति सुनिश्चित करना इस अभियान का मुख्य उद्देश्य है। अपर उपायुक्त जयदीप तिग्गा ने कहा कि जिला स्तर इस अभियान की समीक्षा की जाएगी एवं दैनिक प्रगति का अनुश्रवण करिया जाएगा, इसलिए सभी संबंधित विभाग अपनी भागीदारी सुनिश्चित करेंगे। उन्होने शिक्षा विभागीय पदाधिकारी-कर्मियों से कहा कि घर-घर सर्वे में अभिभावकों को छात्रवृत्ति तथा अन्य विभागीय योजनाओं की भी जानकारी दें। प्राचार्यों से कहा कि सिर्फ पढ़ाई ही नहीं बल्कि बच्चों के संपूर्ण शारीरिक, मानसिक विकास की दिशा में पहल करें, इसके लिए योगाभ्यास, खेलकूद व अन्य गतिविधि भी करायें। जिन विद्यालयों में अपने पोषक क्षेत्र के शत प्रतिशत बच्चों का नामांकन होगा उनके शिक्षकों को पुरस्कृत किया जाएगा। इस जिम्मेवारी को समुचित रूप से निभाने हेतु सामूहिक प्रयास विद्यालय प्रबंधन समिति, शिक्षक, पंचायत प्रतिनिधि, समाजसेवी, जन-प्रतिनिधि, शिक्षा से जुड़े कर्मी / अधिकारी की भागीदारी से प्रारम्भ करने की आवश्यकता है। इस प्रयास से प्रवासी बच्चों, विद्यालय से बाहर रह गए बच्चे एवं विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के माता-पिता/अभिभावक तक पहुँचने का प्रयास किया जाएगा एवं सुनिश्चित किया जायगा कि एक भी बच्चा विद्यालय से बाहर न रहे तथा 6-18 आयुवर्ग के सभी बच्चे विद्यालय में नामांकित हों एवं अपनी माध्यमिक शिक्षा पूर्ण करें। इस अभियान की सफलता के लिए प्रखंड स्तरीय कार्यशाला 21 जून को सभी बीडीओ की अध्यक्षता में आयोजित होगी । वहीं विद्यालय स्तर पर 22 जून को अध्यक्ष, विद्यालय प्रबंध समिति की अध्यक्षता में जनप्रतिनिधि, विद्यालय प्रबंधन/ग्राम शिक्षा समिति के सभी सदस्य, सभी अभिभावक, माता समिति, एनजीओ, बीआरपी, सीआरपी के साथ बैठक प्रस्तावित है।

# प्रतिभा सम्मान समारोह में 30 बच्चों को किया गया सम्मानित

## सीपी समिति ने मैट्रिक में उत्कृष्ट अंक लाने बच्चों को किया पुरस्कृत

**PHOTON NEWS JAMSHEDPUR:** शैक्षणिक संस्थान सीपी समिति केबुल बस्ती की ओर से जैक बोर्ड के मैट्रिक में अपना उत्कृष्ठ प्रदर्शन करने वाले बच्चों को सोमवार को प्रतिभा सम्मान से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर केबुल बस्ती, टुईलाडूंगरी, केबुल टाउन, बजरंग नगर एवं आस पास के 30 शामिल थे।

कार्यक्रम में संस्थान के अध्यक्ष दिनेश कुमार, संरक्षक खेमलाल चौधरी, महासचिव परमानंद कौशल, अमित कुमार सिंह उपस्थित थे। कार्यक्रम की शुरूआत मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित करके किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए दिनेश कुमार ने कहा कि मैट्रिक शिक्षा का आधार स्तंभ है। प्रतिभावान बच्चें अच्छे अंक प्राप्त करने के बाद अपने भविष्य उज्जवल करते है। उन्होंने बताया कि वर्तमान परिवेश प्रतिस्पर्धा का है,अब बच्चे 99।9% तक अंक ले कर आते है, इसलिए अपने आप को प्रतिस्पर्धा में बनाए रखने के लिए घर और विद्यालय के वातावरण को शिक्षा के माहौल के अनुरूप तैयार करना बहुत जरूरी है। समिति के संरक्षक खेमलाल चौधरी ने कहां की आज बच्चों पर मानसिक दबाव बहुत ज्यादा है, उनसे निजात के लिए स्वच्छ वातावरण का निर्माण बहुत जरूरी है। आगे दिनेश कुमार ने कहा की बच्चों की सफलता में माता पिता के उचित मार्गदर्शन और शिक्षकों की मेहनत से ही संभव होत है। उन्होंने बताया की बच्चों को अच्छी उच्च शिक्षा के लिए दसवीं और बारहवीं में अच्छे अंक प्राप्त करने चाहिए। कार्यक्रम में बच्चों को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम में बच्चो द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए।कार्यक्रम का संचालन गुरुपदो गोप ने और धनव्याद ज्ञापन अमित कुमार सिंह ने किया।कार्यक्रम को परमानंद कौशल, और संगीता श्रीवास्तव ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से अशोक सिंह, खेमलाल साहू, त्रिवेणी कुमार, दिनेश साहू, धर्मेंद्र साहू, आकाश साहू, नागश्री सामद, त्रिलोचन कौर, कौशिक दत्ता, अर्चना सिंह, सीमा, संगीता मेरी सुरेन, रेखा कुमारी, हीरा दास मानिकपुरी, चांद सिंह, अनुसुइया कुमारी, सुमन सिंह, तारकेश्वरी देवी, निर्मला कौर, रीता शर्मा, कुमकुम सिंह, अंजलि शर्मा आदि उपस्थित थे।

प्रतिभा सम्मान समारोह में सम्मानित बच्चे व अन्य ● फोटोन न्यूज

# संक्रमण का सच

कोरोना अभी भी रहस्य बना हुआ है और वैज्ञानिक लगातार उसके रहस्य को समझने की कोशिश में लगे हैं। अमेरिकी वैज्ञानिकों ने मिलकर शोध किया है, जिसके तहत यह समझने की कोशिश हुई है कि आखिर कोरोना फैलाने में संक्रमित लोगों या मरीजों की क्या भूमिका थी? इस वैज्ञानिक अध्ययन में डॉक्टरों ने 34 स्वस्थ युवाओं को कोरोना वायरस से संक्रमित किया। समान मात्रा में उन्हें नाक के पास वायरस उपलब्ध कराया गया। 34 में से 18 लोगों को कोरोना संक्रमण हुआ और उनमें भी मात्र दो लोग थे, जो महा-संक्रामक की भूमिका में थे। दिलचस्प यह है कि इन दोनों मरीजों में कोरोना के लक्षण बहुत सामान्य किस्म के थे। मतलब जिन लोगों को गंभीर रूप से कोरोना हुआ, वे अपेक्षाकृत कम वायरस उत्सर्जित कर रहे थे। अब वैज्ञानिकों के पास यह जानकारी है कि हर संक्रमित समान रूप से खतरनाक नहीं होता। अब आगे उन्हें यह पता लगाना है कि ऐसे संक्रमण या वायरस जनित महामारी में आखिर कौन लोग होते हैं, जो दूसरों के लिए ज्यादा खतरनाक हो जाते हैं? अगर महा-संक्रामक लोगों की पहचान हो गई, तो यह चिकित्सा विज्ञान के लिए एक बड़ी कामयाबी होगी। शोध में यह भी साफ हुआ है कि ज्यादातर उत्सर्जन हवा में होता है। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, सैन फ्रांसिस्को में संक्रामक-रोग चिकित्सक मोनिका गांधी कहती हैं, ह्यमहामारी के चरम दौर में मनुष्यों के बीच इतना अंतर था कि वायरस को नियंत्रित करना कठिन हो गया।ह्ल उनके कहने का अर्थ यह है कि ज्यादा वायरस फैला रहे लोगों की अगर पहचान हो जाती, तो महामारी को घातक होने से रोका जा सकता था। लैंसेट माइक्रोब में 9 जून को प्रकाशित अध्ययन से यह भी पता चलता है कि कोविड-19 की कुछ विसंगतियों के लिए वायरस की कम और मानव शरीर विज्ञान की ज्यादा भूमिका रही है। हर व्यक्ति का शरीर अलग-अलग प्रभाव और रोग प्रतिरोधक क्षमता वाला होता है। शोध के तहत, 18 विकसित संक्रमण शिकार लोगों को कम से कम 14 दिन अस्पताल में रखा गया। हर दिन प्रतिभागियों के नाक, गले, हवा, हाथ और कमरे में विभिन्न सतहों पर मौजूद वायरस की मात्रा का अध्ययन किया गया। ऐसे विस्तृत अध्ययन में भी दो लोग ही ज्यादा खतरनाक पाए गए। इन दो संक्रमितों ने हर स्तर पर और हवा में भी खूब वायरस उगले। वैज्ञानिकों ने वायरस उत्सर्जन संबंधी बहुत आंकड़े जुटाए हैं, और विवेचना जारी है। मोनिका गांधी इस पूरे अध्ययन को बहुत साहसिक बताती हैं, लेकिन इस अध्ययन को अनैतिक ठहरा रहे लोग भी कम नहीं हैं। कई लोगों का मानना है कि किसी स्वस्थ आदमी को रोगी बनाकर अध्ययन करना और उसकी जान मुसीबत में डालना उचित नहीं है। हालांकि, वैज्ञानिकों का कहना है कि संक्रमण पूरी तरह उनके नियंत्रण में था और जैसे ही लक्षण दिखने शुरू हुए, वैसे ही उपचार शुरू कर दिया गया। यह भी खास बात है कि समय पर उपचार शुरू होना फायदेमंद पाया गया। यह बात छिपी नहीं है कि बहुत से लोगों ने उपचार शुरू करने में देर की थी और इससे भी कोरोना महामारी को घातक होने का मौका मिल गया था। खैर, कोरोना अब काबू में आने लगा है। दुनिया भर में अब मरीजों की संख्या लगभग दो करोड़ ही है और रोजाना के मामले भी घटकर 40,000 तक पहुंच गए हैं। भारत में तो बमुश्किल 2,000 सक्रिय मामले हैं। लोग उम्मीद लगाए हुए हैं, कोरोना बिल्कुल खत्म हो और उसका पूरा सच सामने आए।

# आगजनी से सबक

राजधानी दिल्ली के मुखर्जी नगर में गुरुवार को एक कोचिंग संस्थान में लगी आग जितनी दुखद है, उतनी ही शर्मनाक भी। दुखद इसलिए कि पढ़ने गए बच्चों को जान बचाने के लिए भागना पड़ा और इस कोशिश में 60 से ज्यादा को चोटें आई हैं। शर्मनाक इसलिए कि कोचिंग संस्थान पुराने हादसों से कोई सबक नहीं ले रहे हैं। आग लगने या किसी अन्य आपदा की स्थिति में बहुमंजिला इमारतों में भी बच निकलने के वैकल्पिक मार्ग नहीं बनाए जा रहे हैं। मई 2019 में सूरत में एक कोचिंग सेंटर में आग लगी थी और 22 विद्यार्थियों की जान चली गई थी। तब भी बहुत जोर-शोर से यह बात उठी थी कि सभी शिक्षा संस्थानों को ऐसी आपदाओं से बचने के लिए तमाम तरह के उपाय कर लेने चाहिए। यह निंदनीय और आपराधिक लापरवाही है कि अभी भी ऐसे संस्थान बड़ी संख्या में धड़ल्ले से चल रहे हैं, जिन्हें बच्चों या छात्रों के जीवन की भी परवाह नहीं है। कम से कम जगह में बड़े से बड़ा संस्थान चलाकर ज्यादा से ज्यादा लागत घटाने और कमाई बढ़ाने का यह कारोबार क्या किसी साजिश से कम है? आखिर यह क्यों न माना जाए कि ऐसे संस्थान जानते-समझते हुए भी छात्रों की जान लेने की साजिश रच रहे हैं? मुखर्जी नगर आगजनी की घटना ने एक बार फिर अग्नि-सुरक्षा मानदंडों के उल्लंघन को सुर्खियों में ला दिया है। जैसी परिपाटी है, हर जिम्मेदार एजेंसी खुद को बचाने की कोशिश में जुट गई है। कोई कह रहा है कि ग्राउंड फ्लोर पर बिजली मीटर के पास शॉर्ट सर्किट के चलते यह हादसा हुआ, तो किसी का कहना है कि वातानुकूलन इकाई में आग या धुआं सबसे पहले देखा गया। ऐसा लगता है, जिम्मेदार एजेंसियां दोष से अपना दामन छुड़ाने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ेंगी। बाद में मिलकर लीपापोती होगी और मुखर्जी नगर में यथास्थिति में कोचिंग संस्थान चलते रहेंगे! बताया जा रहा है कि यह परिसर पुराना है, दशकों पहले जब यह बना होगा, तब इस पर इतना दबाव नहीं होगा।

# समग्र जीवन का उत्कर्ष है योग

ANALYSIS

गिरीश्वर मिश्र

**आज हमारे जीवन में टैगों का अम्बार लगा हुआ है और टैग से जन्मी इतनी सारी भिन्नताएं हम सब ढोते चल रहे हैं। मत, पंथ, पार्टी, जाति, उपजाति, नस्ल, भाषा, क्षेत्र, इलाका समेत जाने कितने तरह के टैग भेद का आधार बन जाते हैं और हम उसे लेकर एक दूसरे के साथ लड़ने पर उतारू हो जाते हैं। हम भूल जाते हैं कि टैग से अलग भी हम कुछ हैं और इनसे इतर हमारा कोई वजूद है। पर बाहर दिखने वाला प्रकट रूप ही सब कुछ नहीं होता। कुछ आतंरिक और सनातन स्वभाव भी हैं जो जीवन और अस्तित्व से जुड़ा होता है। ऊपरी पहचान वाली खंडित दृष्टि निरन्तर असंतोष और अभाव के टीस के साथ कचोटने वाली होती है। ऐसे में यह बात अत्यंत महत्व की हो जाती है कि हम अपने आप को किस तरह देखते और पहचानते हैं। जब हम आरोपित पहचान (या टैग) के हिसाब से चलते हैं तो हमारी आशाएं-आकांक्षाएं भी आकार लेती हैं। उन्हीं के अनुरूप हम दूसरों के साथ बर्ताव भी करते चलते हैं।**

आज के सामाजिक जीवन को देखें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि हर कोई सुख, स्वास्थ्य, शांति और समृद्धि के साथ जीवन में प्रमुदित और प्रफुल्लित अनुभव करना चाहता है। इसे ही जीवन का उद्देश्य स्वीकार कर मन में इसकी अभिलाषा लिए आत्यंतिक सुख की तलाश में सभी व्यग्र हैं और सुख है कि अक्सर दूर-दूर भागता नजर आता है। आज हम ऐसे समय में जी रहे हैं जब हर कोई किसी न किसी आरोपी पहचान की ओट में मिलता है। दुनियावी व्यवहार के लिए पहचान का टैग चाहिए पर टैग का उद्देश्य अलग-अलग चीजों के बीच अपने सामान को खोने से बचाने के लिए होता है। टैग जिस पर लगा होता है उसकी विशेषता से उसका कोई लेना-देना नहीं होता। आज हमारे जीवन में टैगों का अम्बार लगा हुआ है और टैग से जन्मी इतनी सारी भिन्नताएं हम सब ढोते चल रहे हैं। मत, पंथ, पार्टी, जाति, उपजाति, नस्ल, भाषा, क्षेत्र, इलाका समेत जाने कितने तरह के टैग भेद का आधार बन जाते हैं और हम उसे लेकर एक दूसरे के साथ लड़ने पर उतारू हो जाते हैं। हम भूल जाते हैं कि टैग से अलग भी हम कुछ हैं और इनसे इतर हमारा कोई वजूद है। पर बाहर दिखने वाला प्रकट रूप ही सब कुछ नहीं होता। कुछ आतंरिक और सनातन स्वभाव भी हैं जो जीवन और अस्तित्व से जुड़ा होता है। ऊपरी पहचान वाली खंडित दृष्टि निरन्तर असंतोष और अभाव के टीस के साथ कचोटने वाली होती है। ऐसे में यह बात अत्यंत महत्व की हो जाती है कि हम अपने आप को किस तरह देखते और पहचानते हैं। जब हम आरोपित पहचान (या टैग) के हिसाब से चलते हैं तो हमारी आशाएं-आकांक्षाएं भी आकार लेती हैं। उन्हीं के अनुरूप हम दूसरों के साथ बर्ताव भी करते चलते हैं। इस जद्दोजहद में आभासी , अस्थायी और संकुचित आधार वाली जीवन शैली अपनाते हैं और ऐसी भागमभाग वाली दौड़ में शामिल हो जाते हैं जिसके चलते घोर प्रतिस्पर्धा जन्म लेती है। एक दूसरे से आगे बढ़ने के चक्कर में हर कोई दूसरे का अतिक्रमण करने को तैयार है। इस तरह वैमनस्य की नींव पड़ती है और बड़ी जल्दी ही आक्रोश और हिंसा का रूप लेने लगती है। ऐसे में अनिश्चय, असंतोष और पारस्परिक तुलना के कारण तनाव और चिंता के भाव लगातार डेरा डाले रहते हैं। आज बड़ी संख्या में लोग अवसाद ( डिप्रेशन ) और कई तरह की दूसरी अस्वस्थ मनोदशाओं के शिकार हो कर मनोरोगियों की श्रेणी में पहुंचने लगे हैं। मानसिक विकारों की सूची लम्बी होती जा रही है और अमीर हो या गरीब सभी उसमें शामिल हो रहे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रपट के अनुसार आज विकसित और विकासशील दोनों तरह के देश इस तरह की भयावह हो रही परिस्थिति की ओर आगे बढ़ रहे हैं। गौर तलब है कि मानसिक रोगों की बहुतायत भौतिक जगत से कहीं ज्यादा हमारे मानसिक जगत की बनती-बिगड़ती बनावट और बुनावट पर निर्भर करती है। इसलिए उसकी देखभाल जरूरी लगती है। इसके लिए व्यक्ति को अपने जीवन की प्रक्रिया को सतत नियमित करते रहने की जरूरत है। सतही तौर पर देखें तो जीवन एक स्वतःचालित यांत्रिक प्रक्रिया जैसा लगता है जो किसी चाभी भरे खिलौने की तरह चलता रहता है पर यह तुलना आंशिक रूप से ही ठीक बैठती है क्योंकि जीवन का एजेंडा स्वाभाविक रूप से विकसनशील होता है। अर्थात वह पूरी तरह पूर्वनिर्धारित न हो कर देश-काल के सापेक्ष्य उत्तरोत्तर नए-नए आकार लेता चलता है। उसमें सर्जनात्मक संभावना का बीज छिपा रहता है । पर इन सबसे बड़ी बात यह है कि इस पूरी परियोजना में स्व या आत्म की भी बड़ी नियामक और निर्णायक भूमिका होती है जो स्वयं में एक सृजनशील रचना है । दुर्भाग्य से बाहर की दुनिया का प्रभाव इतना गहरा और सबको ढंक लेने वाला होता है कि वही हमारा लक्ष्य या साध्य बन जाती है और उसी से ऊर्जा पाने का भी अहसास होने लगता है । हम अपनी अंतश्चेतना को भूल बैठते हैं । और यह भी कि बाह्य चेतना और अंतश्चेतना परस्पर सम्बन्धित हैं। मनुष्य खुद को विषय और विषयी ( सब्जेक्ट और ऑब्जेक्ट ) दोनों रूपों में ग्रहण कर पाता है। मनन करने की क्षमता का माध्यम और परिणाम आत्म-नियंत्रण से जुड़ा हुआ है । भारतीय परम्परा में आत्म-नियंत्रण पाने के उपाय के रूप में अभ्यास और वैराग्य की युक्तियाँ सुझाई गई है। इसमें अभ्यास आंतरिक है वैराग्य बहिमुर्खी। अर्थात अंदर और बाहर दोनों का संतुलन होना आवश्यक है। अभ्यास का आशय योग का अभ्यास है जो हमें अपने मानसिक जगत को शांत और स्थिर रखने के लिए जरूरी है। दूसरी ओर बाह्य जगत के साथ अनुर्बंधित होने से बचाने के लिए वैराग्य ( या अनासक्ति ) भी अपनानी होगी।

वस्तुतः दोनों एक दूसरे के पूरक हैं और एक के बिना दूसरा सम्भव भी नहीं है। बाहर की दुनिया ही यदि अंदर भी भरी रहे तो अंतश्चेतना विकसित नहीं होगी । इसलिए अभ्यास (योग) वैराग्य का सहायक या अनुपूरक समझा जाना चाहिए। इसके लिए विवेक की परिपक्वता चाहिए जिसके लिए जगह बनानी होगी । आज के दौर में अन्तश्चेतना और बाह्य चेतना दोनों की ओर ध्यान देना जरूरी है । आनंद की तलाश तभी पूरी हो सकेगी जब हम अपने ऊपर नियंत्रण करें और परिवेश के साथ समर्पण के साथ उन्मुख न हों बल्कि संतुलित रूप से जुड़ें । पूर्णता अंदर और बाहर की दुनिया के बीच संतुलन बनाने में ही है। महर्षि पतंजलि यदि योग को चित्त वृत्तियों के निरोध के रूप में परिभाषित करते हैं तो उनका आशय यही है अपने आप को बाहर की दुनिया में लगातार हो रहे असंयत बदलावों को अनित्य मानते हुए अपने मूल अस्तित्व को उससे अलग करना क्योंकि वे बदलाव और ह्यटैगह्ल तो बाहर से आरोपित हैं आत्म पर आरोपित हैं न कि (वास्तविक) आत्म हैं। आदि शंकराचार्य ने इन्हें उपाधि कहा है जो आती जाती रहती है। मिथ्या किस्म की चित्त-वृत्तियाँ जिनको महर्षि पतंजलि ने क्लिष्ट चित्त-वृत्ति की श्रेणी में रखा है भ्रम और अयथार्थ को जन्म देती हैं । तब हम उनके प्रभाव में स्वयं को वही ( भ्रम रूप/टैग ! ) समझने लगते हैं। इससे बचने का उपाय योग हैं और उससे द्रष्टा अपने स्वरूप में वापस आ पाता है। योग द्वारा आत्म-नियंत्रण स्थापित होना हमारी घर वापसी की राह है । तब हम अपने में स्थित हो पाते हैं यानी स्वस्थ होते हैं । योग को अपनाना अपने समग्र अस्तित्व की तलाश है जो हमारे उत्कर्ष का का मार्ग प्रशस्त करता है।

आज तनाव, चिंता, अवसाद, हिंसा, आत्म हत्या जैसे मनोदैहिक ( साइको सोमैटिक) किस्म के मानसिक विकार तेजी से बढ रहे हैं अब ई-व्यापार , ई-प्रबंधन और ई-सीखना छाता जा रहा है। इन सब के बीच जीवन शैली का प्रश्न प्रमुख होता जा रहा है। ऐसे में उनके शरीर और मन को दृढ बनाना और रोग प्रतिरोध की क्षमता का विकास करना शिक्षा का अनिवार्य अंग बनाना जरूरी होगा। ऐसे ही प्रकृति विजय की जगह पर्यावरण की पुनःस्थापना, सहयोगी जीवन शैली, और स्वस्थ शरीर को साधन के रूप में ढालना जरूरी होगा। धन, छवि और प्रसिद्धि से मिलने वाली संतुष्टि ज्यादा दिन नहीं ठहरती और हमेशा असंतुष्टि और अभाव की पीड़ा बनी रहती है।

मन में खालीपन और बेचैनी बनी रहती है। इस पश्चिमी पूंजीवाद के विपरीत समग्रता में जीवन जीने की भारतीय दृष्टि अहंकार और मोह से परे वास्तविक स्व या आत्म की ओर चलने को प्रेरित करती है। इसमें सीमित भौतिक स्व के अहंकार की सीमाओं से छुटकारा पाने की व्यवस्था है । जैसा कि पंचकोश की सुपरिचित अवधारणा में कहा गया है मनुष्य की रचना कई स्तरों वाली है । अन्नमय कोश सबसे बाहर की सतह है जिसके बाद प्राणमय कोश आता है, विज्ञान मय कोश आता है, तब मनोमय कोश और सबके बाद है आनंदमय कोश । इन सबसे मिल कर सम्पूर्ण अस्तित्व की रचना होती है। इसमें भौतिक स्तर के जीवन का नकार या तिरस्कार नहीं है पर वही सर्वस्व भी नहीं है। हमारे बहुत सारे कष्ट इसीलिए उपजते हैं कि हम अपने को इसी शरीर के स्तर तक सीमित मान लेते हैं।

हालांकि तनिक विचार से ही यह बात स्पष्ट हो जाती है कि शरीर हमारा है पर हम शरीर मात्र नहीं हैं। मृत्यु के बाद शरीर या देह तो रहता है पर हम या देही नहीं रहता । इस तरह शरीर की सीमा को समझने से संजीदगी भी आती है और स्वयं को चैतन्य से जोड़ कर पूर्णता, व्यापकता का अहसास

# चिकित्सा शिक्षा में परिवर्तन का समय

चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में हाल ही में दो महत्वपूर्ण नीतिगत बदलाव हुए हैं। पहला देश भर में यूजी यानी एमबीबीएस प्रवेश के लिए कॉमन काउंसिलिंग होगी। दूसरा मध्य प्रदेश सरकार ने पीजी कर रहे डॉक्टरों के लिए तीन महीने ग्रामीण क्षेत्रों में एक तरह की इंटर्नशिप को अनिवार्य बना दिया है। दोनों ही निर्णय चिकित्सा शिक्षा को समावेशी बनाने में सहायक होंगे लेकिन भारत में अभी भी यह क्षेत्र कुछ बड़े निर्णय के इंतजार में है। बेशक मौजूदा केंद्र सरकार ने चिकित्सा शिक्षा के ढांचे में ऐतिहासिक बदलाव सुनिश्चित किए हैं जिसके चलते अब डॉक्टरी पेशा अभिजात्य श्रेणी से निकलकर आम भारतीय की पहुंच में आया है लेकिन जनस्वास्थ्य के मोर्चे पर आज भी देश की आबादी और सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं के बीच भरोसे का अपेक्षित रिश्ता विकसित नही है। देश में एमबीबीएस सीट की संख्या पिछले नौ सालों में 51348 से बढ़कर 101043 एवं पीजी सीटों की संख्या 31185 से बढ़ाकर करीब 65 हजार की जा चुकी हैं। देश में इस समय 654 मेडिकल कॉलेज हैं जो 2014 में 387 ही थे और सरकार एक जिला एक मेडिकल कॉलेज की परियोजना पर भी तेजी से काम कर रही है। इस बुनियादी सुधार के बाबजूद समग्र रूप में सार्वजनिक क्षेत्र की जनस्वास्थ्य सेवाओं के प्रति आम आदमी का भरोसा कमजोर ही बना हुआ है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वे की पिछली रिपोर्ट बताती है कि देश के 50 फीसद लोग बीमार होने पर सरकारी अस्पतालों में नही जाते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि सार्वजनिक अस्पताल विशेषज्ञ चिकित्सको की भारी कमी से जूझ रहे हैं। बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखंड, पंजाब,उत्तराखंड, महाराष्ट्र जैसे राज्यों की स्थिति इस मामले में सर्वाधिक खराब है। बिहार में तो 80 फीसदी और उत्तर प्रदेश में 75 प्रतिशत लोग अपने इलाज के लिए निजी डॉक्टरों या अस्पताल में जाने को विवश हैं। सवाल यह है कि आखिर सार्वजनिक सेवाओं को जनोन्मुखी कैसे बनाया जाए? इसके लिए सबसे बेहतर तरीका यही है कि विशेषज्ञ चिकित्सकों की उपलब्धता को सार्वजनिक अस्पतालों में बढ़ाना होगा। इसके लिए हमें इंग्लैंड की स्वास्थ्य सेवाओं का अध्ययन करना चाहिए जहां पीजी की पढ़ाई भारत की तरह केवल मेडिकल कॉलेजों में नहीं होती है। वहां सभी पीजी डॉक्टरों को सर्बंधित स्वास्थ्य केंद्रों पर तैनात किया जाता है और केवल थ्योरी क्लास के लिए मेडिकल कॉलेज जाना होता है। नतीजतन इंग्लैंड के सरकारी अस्पतालों में हर समय चिकित्सक उपलब्ध रहते हैं। भारत में भी इस प्रयोग को किया जाना बेहद सरल है। देश के सभी मेडिकल कॉलेजों के पीजी विद्यार्थियों को डिग्री समाप्त होने तक ग्रामीण, कस्बाई या जिला अस्पतालों में पदस्थ किया जा सकता है। इसके दो फायदे होंगे। पहला सरकारी अस्पतालों में हर समय विशेषज्ञ डॉक्टर मिल सकेंगे और पीजी डॉक्टरों को भी बेहतर अनुभव हासिल होगा। ग्रामीण स्वास्थ्य सांख्यिकीय रिपोर्ट 2022 कहती है कि देश के 6064 सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र यानी सीएचसी में सर्जन के 83 प्रतिशत, गायनिक 74 प्रतिशत, पीडियाट्रिक्स 81.6 और जनरल ड्यूटी वाले 79.1 फीसद चिकित्सक उपलब्ध ही नहीं। हालांकि यह भी तथ्य है कि 2005 की तुलना में पांच फीसदी विशेषज्ञ एवं 20 प्रतिशत जनरल ड्यूटी यानी एमबीबीएस डॉक्टर सीएचसी में बढ़े हैं लेकिन अकेले केंद्र के अधीन चलने वाले अस्पताल जिनमें 22 नए एम्स भी शामिल हैं वहां तीन हजार डॉक्टरों एवं 21 हजार पैरा मेडिकल स्टाफ की कमी भी चिंतित करने वाला पक्ष है। हमारे देश में सरकारी अस्पताल आज भी एलोपैथी डॉक्टरों को आकर्षित नहीं कर पा रहे हैं क्योंकि करीब 12 लाख कुल पंजीकृत डॉक्टरों में से मात्र 1.5 लाख डॉक्टर ही समग्र सरकारी तंत्र का हिस्सा हैं। इसमें भी आधे डॉक्टर तो आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु में पंजीकृत हैं यह राज्य पहले से ही स्वास्थ्य मानकों पर उत्तर भारत से बहुत आगे हैं। वस्तुतः मेडिकल शिक्षा का मौजूदा ढांचा अभी भी भारत में आबादी के साथ न्याय नहीं करता है। इन चार राज्यों में सर्वाधिक निजी मेडिकल कॉलेज भी हैं। जाहिर है यहां से निकलने वाले डॉक्टरों की प्राथमिकता में सरकारी सेवाएं स्वाभाविक ही नहीं रहती हैं। बेहतर होगा मेडिकल कॉलेजों की संख्या हिंदी बेल्ट में तेजी के साथ बढ़ाई जाए। मध्य प्रदेश सरकार के तीन महीने के पीजी इंटर्नशिप कार्यक्रम को तीन साल बढ़ाकर नीतिगत रूप से सार्वजनिक अस्पतालों के साथ देश भर में जोड़ा जाना चाहिए। इसके अलावा करीब डेढ़ लाख एमबीबीएस डॉक्टर हर साल पीजी डिग्री के लिए नीट की परीक्षा देते हैं लेकिन इनमें से एक लाख फैल हो जाते हैं। इसके बाद वे फिर परीक्षा की तैयारियों में जुट जाते हैंष लिहाजा उनके चिकित्सकीय कौशल का देश को कोई फायदा नहीं होता। सरकार इन सभी को सार्वजनिक अस्पताल के साथ जोड़कर अगले चरण में पीजी वेटेज दे सकती है। हाल ही में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने देश के शीर्ष निजी अस्पतालों के साथ बैठक कर उनसे एमबीबीएस और पीजी सीटों के साथ पढ़ाई कराने का आग्रह किया है, सरकार इस मामले में सख्ती के साथ विनियमन पर आगे बढ़ सकती है। यह भी डॉक्टरों की कमी को पूरा करने का एक बेहतर रास्ता हो सकता है। देशभर में अभी प्रायः हर राज्य का अपना मेडिकल परीक्षा तंत्र है जो सरकारी ढर्रे पर चल रहा है। किसी भी राज्य में समय पर मेडिकल कॉलेजों में परीक्षा नहीं हो पाती हैं। कुछ राज्यों में तो एक से डेढ़ साल तक सेमेस्टर बिलंब से चलते हैं। यह स्थिति भी अंततः देश के लिए नुकसानदेह ही है। अब समय आ गया है कि देश में एकीकृत चिकित्सा पाठ्यक्रम हो और नीट की तर्ज पर एक साथ कॉलेजों में परीक्षा का आयोजन हो ताकि समय पर डॉक्टरों की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके।

# Social Media Corner

सच के हक में...

सिमरिया विधानसभा के युवा और कर्मठ नेता श्री मनोज चंद्रा जी का अपने हजारों समर्थकों के साथ झामुमो परिवार में हार्दिक स्वागत और जोहार है। 20 वर्षों तक राज कर झारखण्ड को पिछड़ा बनाने में भाजपा-आजसू ने कोई कसर नहीं छोड़ी। आज विपक्ष में बैठकर झारखण्डी विरोधी यह बहरूपिया लोग षड्यंत्र कर रहे हैं। इनके हर षड्यंत्र का एक-एक कर जवाब दिया जाएगा।

**(सीएम हेमंत सोरेन के ट्विटर अकाउंट से)**

महिला सशक्तिकरण के लिए समर्पित भाजपा सरकार। देश की आधी आबादी यानी कि महिलाएं जिन्हें सशक्त, समृद्ध तथा आत्मनिर्भर बनाने के लिए भाजपा सरकार ने पिछले 9 वर्षों में अनेक कदम उठाए हैं। खेलों से लेकर सेना तक, स्वयंसहायता समूहों से लेकर स्टार्टअप तक, हर क्षेत्र में महिलाएं आगे बढ़ रही हैं और समाज में अपनी हिस्सेदारी को मजबूत कर रही हैं। बेटी पढ़ाओ - बेटी बचाओ अभियान देश का सफलतम अभियान है। अब लोग अपनी बेटियों को पढ़ाना चाहते हैं, उन्हें आगे बढ़ाना चाहते हैं, सशक्त बनाना चाहते हैं।

**(पूर्व सीएम बाबूलाल मरांडी के ट्विटर अकाउंट से)**

# समय की मांग है समान नागरिक संहिता

कानून निजी नहीं हो सकते। किसी पंथनिरपेक्ष राष्ट्र में विश्वास आधारित सांप्रदायिक समूहों के लिए निजी कानूनों का कोई औचित्य नहीं है। संविधान निमार्ताओं ने प्रत्येक नागरिक के लिए समान नागरिक संहिता का कर्तव्य राष्ट्र राज्य को सौंपा है। राष्ट्र राज्य का यह कर्तव्य संविधान के नीति निदेशक तत्वों में है। नीति निदेशक तत्व न्यायालयों द्वारा प्रवर्तनीय नहीं हैं। ऐसी संहिता राष्ट्रीय एकता के लिए भी अनिवार्य है। विधि आयोग ने हाल में समान नागरिक संहिता के संबंध में देश के सामाजिक एवं धार्मिक संगठनों से सुझाव मांगे हैं। विधि आयोग का यह कार्य प्रशंसनीय है, पर कांग्रेस ने इसका विरोध करते हुए इसे मोदी सरकार का ध्रुवीकरण एजेंडा बताया। जबकि तुष्टीकरण कांग्रेस की अपनी नीति है। ध्रुवीकरण का आरोप इसी का विस्तार है। कांग्रेस दीर्घ काल तक सत्तारूढ़ रही है। उसे बताना चाहिए कि उसने समान नागरिक संहिता लागू करने के संवैधानिक कर्तव्य पालन की दिशा में क्या कदम उठाए? समान नागरिक संहिता बहुत पहले से राष्ट्र का स्वप्न रही है। सांप्रदायिक निजी कानून महिला अधिकारों और सशक्तीकरण में बाधा हैं। स्वाधीनता संग्राम के समय राष्ट्रवादी नेता वैकल्पिक सरकार और उसके संचालन के लिए नए संविधान को लेकर सजग थे। तब देश का संचालन भारत शासन अधिनियम, 1919 से होता था। ब्रिटिश सरकार ने नवंबर, 1927 में इस अधिनियम की उपयोगिता और प्रभाव पर रिपोर्ट देने के लिए ह्यसाइमन कमीशन बनाया था। आयोग में कोई भी भारतीय नहीं था। राष्ट्रवादी आंदोलनकारी इससे क्षुब्ध थे। ब्रिटिश सत्ता ने इस असंतोष को दूर करने के बजाय आंदोलनकारियों से पूछा कि, क्या वे अपने देश के लिए कोई संविधान बना सकते हैं? यही सवाल 1925 में भारत सचिव विरकेनहेड ने इंग्लैंड की लार्ड सभा में उठाया था। राष्ट्रवादी नेताओं ने चुनौती स्वीकार की। कांग्रेस के मद्रास सम्मेलन में एक सर्वदलीय सम्मेलन को वैकल्पिक संविधान बनाने का काम सौंपा गया। सम्मेलन ने मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक समिति गठित की, जिसमें पंडित जवाहरलाल नेहरू, अली इमाम, तेज बहादुर सप्रू और सुभाष चंद्र बोस सहित नौ वरिष्ठ नेता थे। इसे ह्यनेहरू समितिह्ल कहते हैं। समिति ने 19 मौलिक अधिकार बनाए। इनमें महिलाओं को समान अधिकार देने का मौलिक अधिकार चर्चित था। राज्य को मजहब-रिलीजन से मुक्त रखने की बात भी थी। नेहरू रिपोर्ट के तमाम अंश समान नागरिक संहिता से भी जुड़े हैं। कांग्रेसी नेतागण अपने वरिष्ठों की भावनाओं के भी विरोधी हैं। राष्ट्रवादी आंदोलन का मौलिक विचार जाति, पंथ, लिंग और मजहब के भेद का विरोधी था। संविधान सभा का भी केंद्रीय विचार यही था। 23 नवंबर, 1948 को सभा में समान नागरिक संहिता पर तीखी बहस हुई थी। मोहम्मद इस्माइल ने कहा कि, ह्यदेश में समन्वय के लिए यह अपेक्षित नहीं है कि लोगों को उनके निजी कानून छोड़ने के लिए बाध्य किया जाए। नजीरुद्दीन अहमद ने कहा कि, ह्यप्रत्येक धार्मिक समुदाय के विशेष धार्मिक कानून एवं विशेष व्यवहार विषयक कानून भी होते हैं। धार्मिक विश्वासों एवं आचरण से उनका संबंध होता है। एक विधि बनाते समय इन धार्मिक कानूनों की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। संप्रदाय विशेष के धार्मिक कानूनों को उस संप्रदाय की सहमति के बिना नहीं बदला जा सकता। महमूद अली बेग ने कहा कि, ह्यहिंदुओं में विवाह एक संस्कार होता है। यूरोप में यह स्थिति भिन्न है। मुसलमानों में कुरान के अनुसार संविदा जरूरी है। ऐसा नहीं किया जाता तो विवाह वैध नहीं होगा। मुसलमान 1350 वर्षों से इस कानून पर चलते रहे हैं। यदि विवाह की कोई अन्य प्रणाली बनाई जाए तो हम उसे मानने से इन्कार कर देंगे।

## I WANT TO SAY...

देश में समान नागरिक संहिता के लिए चल रही कवायद के बीच समर्थन और विरोध भी जारी है। समान नागरिक संहिता समय की जरूरत है। वहीं इसका विरोध करनेवालों के अपने-अपने तर्क हैं। विरोध करनेवाले बुद्धिजीवी यह मानते हैं कि भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष देश के लिए समान नागरिक संहिता ठीक नहीं है। उनका तर्क है कि भारत में विभिन्न समुदायों ईसाई, यहूदी, मुस्लिम एवं जनजातियां आदि के अपने व्यक्तिगत कानून हैं और उनकी सामाजिक व्यवस्था इनके द्वारा ही शासित होती हैं। भारत के 705 आदिवासी समुदाय ऐसे हैं जो देश में अनुसूचित जनजाति के रूप में सूचीबद्ध हैं और कई तो ऐसे भी हैं जिन्हें अभी तक सूची में शामिल नहीं किया गया है। आदिवासी समुदाय अपने विवाह, तलाक, विभाजन, उत्तराधिकार, विरासत, गोद लेने के मामलों में प्रथागत, रूढ़ि विधि से संचालित है। बहुतायत में ये अलिखित और मौखिक रूप में लोक आचरण में है। यहां तक इनका समाज जातिविहीन होने की साथ जन्म से मृत्यु तक की रीति रिवाज हिन्दू और अन्य जातीय समुदायों से भिन्न हैं। फलस्वरूप, हिंदू कानून भी आदिवासियों पर लागू नहीं होते। उनके अपने प्रथागत कानून हैं, जो संविधान के तहत संरक्षित हैं। इसलिए समान नागरिक संहिता लागू होने से देश में सभी जनजातियों के प्रथागत कानून समाप्त हो जाएंगे। इन मुद्दों को लेकर आदिवासी बुद्धिजीवी ने विधि आयोग को अपना प्रतिवेदन देने पर भी विचार किया है। होना यह चाहिए कि समान नागरिक संहिता को कुछ इसतरह लागू किया जाए जिसमें सभी के हित सुरक्षित भी रहें।

**दयानंद मिश्रा, अध्यक्ष क्षेत्रीय जनविकास परिषद।**

Printed and Published by Fahim Akhtar on behalf of MAA MEDIA VENTURE and Printed at SHIVA SAI PUBLICATION PRIVATE LIMITED, Kathitand, Near Tender Bagicha, P.O.+P.S.- Ratu, Dist.-Ranchi, Jharkhand-835222, and Published at Roshpa Tower, 5th Floor, Main Road, Ranchi, Jharkhand-834001.Editor-Fahim Akhtar. E-mail : thephotonnewsjharkhand@gmail.com

# मंगल कालिंदी ने किया ग्राम प्रधान संघ भवन के निर्माण का शिलान्यास

## प्रधानों की बहुप्रतीक्षित मांग हुई पूरी

भवन का शिलान्यास करते विधायक मंगल कालिंदी ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR:

पटमदा के बेलटांड़ बिरसा चौक स्थित जर्जर हो चुके तहसील कचहरी भवन को तोड़कर विधायक निधि से भव्य ग्राम प्रधान संघ भवन पटमदा का निर्माण होगा। सोमवार को जुगसलाई विधायक मंगल कालिंदी ने प्रखंड के सभी ग्राम प्रधानों की उपस्थिति में नारियल फोड़कर विधिवत रूप से शिलान्यास किया। ग्राम प्रधान संघ के अध्यक्ष बृंदावन दास जी ने प्रसन्नता से कहा कि झारखंड में पहली बार मंगल कालिंदी ने प्रधान लोगों को सम्मान देने का काम किया है। सचिव मृत्युंजय महतो ने कहा कि जो काम मंगल कालिंदी ने कर दिखाया है ऐसा किसी ने न किया है और ना कर सकता है। सुधीर चंद्र माझी ने कहा कि मंगल कालिंदी ही एक ऐसे विधायक हैं जिन्होंने ग्राम प्रधानों की बहुप्रतीक्षित मांग को पूरा करने का काम किया है। कहा कि ग्राम प्रधानों का सभी प्रकार के कार्य अब इस भवन से निष्पादित होंगे। जेई विजय भूषण ने बताया कि भवन का निर्माण 15 लाख रुपये से कम में में होगा। इस दौरान ग्राम प्रधान संघ के अध्यक्ष बृंदावन दास, सचिव मृत्युंजय महतो, सुधीर चंद्र माझी, संदीप मिश्रा, मुची राम कुंभकार, विधायक प्रतिनिधि चंद्रशेखर टुडू, सुभाष कर्मकार, अश्विनी महतो, अश्विनी दास आदि मौजूद थे।

# INTER में नामांकन शुरू कराने को लेकर शिक्षकों व शिक्षकेत्तर कर्मचारियों ने दिया धरना

## कोल्हान के 550 व राज्य के करीब 5 हजार शिक्षक व शिक्षकेत्तर कर्मचारी बेरोजगार

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR:

झारखंड के डिग्री कॉलेजों में इंटरमीडिएट की पढ़ाई बंद किए जाने के बाद कोल्हान के 550 व राज्य के करीब 5 हजार शिक्षक व शिक्षकेत्तर कर्मचारी बेरोजगार हो गए हैं। ऐसे में इसके विरोध में सोमवार को झारखंड अंगीभूत कॉलेज के शिक्षक कर्मचारी मोर्चा के लगभग सभी प्रतिभागी राजभवन के समक्ष एक दिवसीय धरना दिया।

राजभवन के समक्ष धरना देते इंटर के शिक्षक व शिक्षकेतर कर्मचारी ● फोटोन न्यूज

शिक्षक और शिक्षकेतर कर्मचारी ने बताया कि उन लोगों आश्वासन दिया गया था। कि जल्द उनके भविष्य को लेकर फैसला होगा लेकिन इसके बावजूद अभी तक कॉलेजों में छात्रों के इंटर में नामांकन पर रोक लगा दी गयी है। उनका कहना है कि जून माह खत्म होने को है। अगर इस माह में कोई व्यवस्था नहीं हुई तो जुलाई में कॉलेज खुलने पर पूर्णतः भयावह स्थिति उत्पन्न हो जायेगी। उन्होंने कहा कि उनकी राहत के लिए नामांकन वैकल्पिक रोजगार के लिए आवश्यक आदेश जल्द से जल्द जारी किया। या उन्हें कही समायोजित किया जाएगा। उनका कहना है कि वर्षों से इन कॉलेजों में इंटर शिक्षक के रूप में सेवा दे रहे हैं। ऐसे में अचानक इस प्रकार से उन्हें बाहर कैसे किया जा सकता है। इस धरना प्रदर्शन में सैकड़ों की संख्या में शिक्षक शामिल हुए।

# प्रधानमंत्री आवास योजना : दिवाली तक पूरा हो जायेगा घर का सपना, अलग-अलग चरणों में आवंटन

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR:

जमशेदपुर अधिसूचित क्षेत्र समिति अंतर्गत प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के घटक-3 के तहत बिरसानगर जमशेदपुर में बन रहे किफायती आवास परियोजना G+8 संरचना के अनुरूप 32 ब्लॉक में कुल 9592 आवासों का निर्माण किया जाना है।

जिसमे अबतक कुल 7372 आवास का निर्माण कार्य प्रारंभ किया जा चुका है, जिसके प्रथम चरण मे 3836 लाभुकों, दूसरे चरण में कुल 834 लाभुकों तथा तीसरे चरण मे 696 लाभुकों का आवास आवंटन उपायुक्त, पूर्वी सिंहभूम, जमशेदपुर की अध्यक्षता मे किया जा चुका है। निदेशक, नगरीय प्रशासन निदेशालय द्वारा प्राप्त निदेश के आलोक मे वर्तमान में 1500 आवास पूर्ण करना है, जिसमें वैसे लाभुक जिनका प्रथम 20000/- रुपये एवं द्वितीय किश्त 101500/- रुपये प्राप्त हो गया को दिवाली से पहले शिफ्ट किया जायेगा, अतः सभी लाभुक अपना प्रथम एवं द्वितीय किश्त जल्द से जल्द जमा करे ताकि जल्द ही उनका गृह प्रवेश कराया जा सके।

# सुनील कुमार दे को मिला डॉ. राम सेवक विकल स्मृति व राष्ट्रीय कीर्ति वेदश्री सम्मान

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR:

पोटका के नुआग्राम निवासी सह माताजी आश्रम के संचालक साहित्यकार सुनील कुमार डे को डॉक्टर रामसेवक साहित्य कला संगम सेवा ट्रस्ट बलिया,उत्तरप्रदेश की ओर से डॉ. राम सेवक विकल स्मृति व राष्ट्रीय कीर्ति वेदश्री सम्मान से सम्मानित किया गया. सम्मान समारोह का आयोजन गोलमुरी स्थित सिंहभूम जिला भोजपुरी साहित्य परिषद भवन में किया गया. कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्यकार अरविंद विद्रोही ने की. इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में वरिष्ठ साहित्यकार हरि बल्लव सिंह आरसी तथा विशिष्ट अतिथि रूप में प्रख्यात साहित्यकार दिनेश्वर प्रसाद सिंह उपस्थित थे. स्वर्गीय विकल की प्रतिकृति पर पुष्पांजलि देकर कार्यक्रम की शुरू की गई. स्वागत भाषण विकल जी के छोटे पुत्र राधेश्याम शर्मा ने दिया. उसके बाद विकल जी की लिखी

सुनील कुमार डे को सम्मानित करते अतिथि ● फोटोन न्यूज

गई भोजपुरी में भगवत गीता का दूसरा संस्करण का विमोचन किया गया. उसके बाद विकल जी के बड़े पुत्र डॉक्टर आदित्य कुमार अंशु ने कुल 11 प्रसिद्ध साहित्यकारों को डॉक्टर राम सेवक विकल स्मृति पुरस्कार और डॉक्टर विकल राष्ट्रीय कीर्ति विदश्री सम्मान से सम्मानित किया. सम्मान स्वरूप माला, शॉल, स्मृति चिन्ह और प्रशस्ति पत्र दिया गया. सुनील कुमार दे को इस प्रतिष्ठित सम्मान पाने के लिए समाज के प्रबुद्ध जनों ने बधाई दी है. उनमें से सुधांशु शेखर मिश्र, बीथिका मंडल, मृणाल पाल, तुषार दे, भवतारन मंडल, उज्ज्वल मंडल, राजकुमार साहू, हेम चंद्र पात्र, बलराम गोप, अमल बिश्वास, डॉक्टर अरविंद कुमार लाल, कमलेश मिश्रा, संजय साहू, मृत्युंजय गोप, विष्णु पद गोप, दुलाल चंद्र दास, पूजा महतो, राजेश राय, सुबोध गोराई, रीना मंडल, रिता मंडल, सुदीप मुखर्जी, अनुपम भकत, डॉक्टर विकाश चंद्र भकत, दिनेश सरदार, कुमार मंडल, मिथुन साहू, शिव कुमार सिंह, राकेश मिश्रा, अजित कुम्भकार, रघुनंदन बनर्जी, बिमल चक्रवर्ती, रवि महतो आदि शामिल हैं.

# जेएमएम के धालभूमगढ़ प्रखंड अध्यक्ष धरना-प्रदर्शन में हुए शामिल, दिया समर्थन

## झारखंड श्रमिक संघ का धरना-प्रदर्शन छठे दिन भी जारी

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR:

झारखंड श्रमिक संघ का धरना प्रदर्शन छठे दिन सोमवार को भी जारी रहा. झारखंड मुक्ति मोर्चा के धालभूमगढ़ प्रखंड अध्यक्ष अर्जुन चंद्र हांसदा ने अपना समर्थन श्रमिक संघ को दिया. हांसदा ने धरनृ-प्रदर्शन को संबोधित करते हुए कहा कि झारखंड श्रमिक संघ के समर्थन में झारखंड मुक्ति मोर्चा भी शामिल हो गया है. उन्होंने कहा कि एक तरफ झारखंड सरकार मजदूरों के लिए सुविधा दे रही है. मजदूरों का श्रम कार्ड बना रही है और रोजगार के लिए लोन दे रही है. वहीं दूसरी तरफ आईसीसी कंपनी प्रबंधक इस तरह का रवैया हमारे मजदूर के साथ कर रही है जिसे झारखंड मुक्ति मोर्चा बर्दाश्त नहीं करेगा.

धरना-प्रदर्शन करती झारखंड श्रमिक संघ ● फोटोन न्यूज

उन्होंने ने कहा कि आईसीसी कंपनी के अस्थायी ठेका कर्मी झारखंड श्रमिक संघ के प्रखंड अध्यक्ष काजल, सचिव फेबियन तिर्की के नेतृत्व में अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन इस प्रचंड गर्मी में परिवार के साथ कर रही है जो काफी संघर्षपूर्ण है. क्योंकि मजदूर भाई अपना हक और अधिकार की मांग कर रहे है. प्रबंधन द्वारा सकारात्मक पहल नहीं होती है तो श्रमिक संघ अनिश्चितकाल के लिए हुड़का जाम करने की तैयारी में है. जिसका समर्थन झारखंड मुक्ति मोर्चा पूर्ण रूप से करेगा. धरना-प्रदर्शन में काफी संख्या में महिला पुरुष शामिल थे.

## BRIEF NEWS

### आदिवासी भूमिज समाज के रीति रिवाज से संपन्न हुआ जगत सिंह के साथ सोमवारी का विवाह

**Jamshedpur :** आदिवासी भूमिज समाज, एमजीएम संगठन के सक्रिय सदस्य सह मालियांता गांव के पारंपरिक लाया शंभू सिंह भूमिज के द्वारा उक्त गांव निवासी स्व. भीम सिंह की सुपुत्री सोमबारी सिंह का विवाह सोभादा गांव के निवासी जगत सिंह के साथ आदिवासी भूमिज समाज की रीति रिवाज के अनुसार संपन्न कराया। साथ ही संगठन के सक्रिय सदस्य हरीपदो सिंह ने बताया कि हमारे आदिवासी भूमिज समाज में बाभुन (ब्राह्मणों द्वारा) विवाह संपन्न कराए जाने की कोई परंपरा नहीं है। हलाकि कालांतर में कुछ लोग बाहरी संस्कृति के संपर्क में आकर अपने संस्कृति से दूर होते जा रहे थे। लेकिन आदिवासी भूमिज समाज के द्वारा भूमिज समाज के बिच में एकबार फिर से पुनरजागरण का दौर आदिवासी भूमिज समाज के द्वारा चलाया जा रहा है। हमारे समाज में भूमिज विवाह की मान्यता है। भूमिज विवाह यानि जो गांव के पारंपरिक लाया द्वारा सम्पन्न किया जाता है। एमजीएम संगठन के सभी सक्रिय सदस्यों ने मिलकर उक्त भूमिज विवाह के समर्थन में आर्थिक सहयोग किया। मौके पर संगठन के सक्रिय सदस्य रथु सिंह, सतीश सिंह, हरिपदो सिंह, धनंजय सिंह, घासीराम सिंह, इत्यादि उपस्थित थे।

### डुमरिया में आंधी से घर का छप्पर उड़ा व सोलर जल मीनार का पैनल टूटा

**Dumaria :** डुमरिया प्रखंड में रविवार रात को आई आंधी से आस्ताकोवाली पंचायत अंतर्गत चायडिहा निवासी लखीपदो सिंह के एस्बेस्टस का छप्पर उड़ गया। इससे किसान लखीपदो सिंह को हजारों का नुकसान पहुंचा है। प्रखंड की खैरबनी पंचायत अंतर्गत गांव दामुडीह में रविवार की आंधी से पीएचईडी विभाग के तहत निर्मित जल मीनार का सोलर पैनल उड़ गया। ग्रामीणों ने मुखिया सुरेंद्रनाथ हेंब्रम को इसकी सूचना दी। मुखिया ने ग्रामीण से कहा कि पीएचडी विभाग से बात कर समस्या को दूर किया जाएगा। जल मीनार के पैनल के उड़ जाने से पेयजल आपूर्ति बंद हो गई है और ग्रामीणों को पेयजल के लिए परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

### मुख्यमंत्री पशुधन विकास योजना के तहत लाभुकों के बीच बत्तख चूजा का वितरण

**Chakulia :** चाकुलिया प्रखंड कार्यालय में सोमवार को पशुपालन विभाग द्वारा मुख्यमंत्री पशुधन विकास योजना से स्वीकृत बत्तख का चूजा वितरण समारोह आयोजित कर किया गया. मुख्य अतिथि विधायक समीर महंती ने 48 लाभुकों के बीच 15-15 बत्तख चूजा का वितरण किया. विधायक ने कहा कि हेमंत सरकार ने ग्रामीणों को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने के लिए और स्वालंबी बनाने के लिए विभिन्न योजनाएं पारित की है. ग्रामीण उक्त योजनाओं का लाभ लेकर आर्थिक रूप से मजबूत बनें. उन्होंने कहा कि सरकार हर परिवार को नौकरी नहीं दे सकती है. सरकार ग्रामीणों को विभिन्न प्रकार की योजनाओं के तहत लाभ देकर रोजगार देने का काम कर रही है. उन्होंने कहा कि ग्रामीण उन योजनाओं का लाभ लेकर स्वावलंबी बनें. विधायक ने सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं की जानकारी देकर लोगों को जागरूक किया.

## विश्व योग दिवस को लेकर 21 जून को आयोजित कार्यक्रम को सफल बनाने को जोर-शोर से चल रही तैयारी, स्कूल से लेकर स्वास्थ्य केंद्र तक में कराया जाएगा योग

# YOG दिवस की तैयारी में जुटा विभाग, गांव से लेकर शहर तक होगा अनुलोम-विलोम

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR:

पूर्वी सिंहभूम जिले में योग दिवस को लेकर तैयारी तेज हो गई है। शहर से लेकर गांव तक योग दिवस मनाया जाएगा। इसे लेकर स्वास्थ्य कर्मियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। 21 जून को परसुडीह स्थित सदर अस्पताल सहित सभी हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर, शहरी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, योग ग्राम सहित तमाम संगठनों द्वारा योग दिवस मनाया जाएगा। वहीं, स्कूलों में भी योग दिवस मनेगा। इसे सफल बनाने को लेकर विभाग के अपर मुख्य सचिव अरुण कुमार सिंह ने जिला स्वास्थ्य विभाग को विशेष दिशा-निर्देश दिया गया है। सिविल सर्जन डा. जुझार माझी ने इसे गंभीरता से लेते हुए सभी प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारियों को पत्र लिखा है। ताकि सभी जगहों पर तैयारी पुख्ता रहें। सिविल सर्जन ने बहरागोड़ा, चाकुलिया, धालभूमगढ़, पटमदा, जुगसलाई, पोटका, मुसाबनी, डुमरिया व घाटशिला के चिकित्सा पदाधिकारियों को तैयार रहने को कहा है। हेल्थ एंड वेलनेस सेंटरों पर कम्युनिटी हेल्थ आफिसर या फिर योग शिक्षक योग कराएंगे। वहीं, सदर अस्पताल में सिविल सर्जन खुद योग करेंग। कार्यक्रम का समय सुबह 6.30 बजे से लेकर 10 बजे तक तय किया गया है।

### ● योग का कोई साइड इफेक्ट नहीं, कई गंभीर बीमारियां हो जाती ठीक

## निरोग रहना है तो करें योग, प्रिया ने योग से सैकड़ों लोगों को बनाया स्वस्थ

कल विश्व योग दिवस है। इसका उद्देश्य योग का प्रचार-प्रसार करना है, ताकि इसका लाभ आम लोगों को भी मिल सके। जमशेदपुर की प्रिया भट्टाचार्या भी योग की शिक्षा दे लोगों को स्वस्थ बनाने की मुहीम में जुटी हुइ हैं।

जमशेदपुरः योग का हमारे जीवन में बहुत बड़ा महत्व है। योग निश्चित रूप से सबको अधिक जिम्मेदार बनाता है, क्योंकि योग से आपके भीतर ऊर्जा एवं उत्साह का संचार होता है। साथ ही थकान और तनाव को दूर करने में मदद करता है। योग हमारे देश के प्राचीन विधाओं में से एक है। आज पूरा विश्व योग को अपना रहा है। योग के महत्व को देखते हुए 21 जून को पूरे विश्व में योग दिवस मनाया जाता है। योग दिवस के आयोजन को लेकर पूरे देश भर तैयारी चल रही है। इसी क्रम में लौहनगरी की प्रिया भट्टाचार्य ने योग के माध्यम से लोगों को स्वस्थ करने का बिड़ा उठाया है। प्रिया भट्टाचार्य परसुडीह स्थित अपने आवास पर लोगों को निःशुल्क रूप से योग सिखाती हैं। अबतक उन्होंने सैकड़ों लोगों का योग के जरिये उपचार कर चुकी हैं। उन्होंने इसके लिए 2020 में चैरिटी शुरू किया था। द फोटोन न्यूज से बातचीत में प्रिया भट्टाचार्य ने बताया कि उन्होंने यह चैरिटी जरूरतमंद बच्चों के लिए फ्री ऑफ कॉस्ट योग शिक्षा देने के लिए शुरू किया है। उन्होंने बताया कि योग शिक्षा, योगासन, प्राणायाम ब्रीडिंग टेक्निक्स सिखाई जाती है। उन्होंने बताया कि वो स्वयं योग एजुकेटर के रूप में बच्चों को योग की शिक्षा देती हैं। उन्होंने बताया कि योग एक संधि है, बहुत ही सरल और पवित्र चीज है। उन्होंने बताया कि ब्रह्मांड का रहस्य योग है। उन्होंने कहा कि योग को हर व्यक्ति को अपने जीवन में लाना चाहिए। शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए योग बहुत जरूरी है। बातचीत में उन्होंने बताया कि योग हमें जीवन का मार्गदर्शन करता है। स्लो ब्रीडिंग प्राणायाम के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि ब्रीडिंग प्राणायाम हर बीमारी के लिए रामबाण इलाज है। इसके अलावा अनुलोम-विलोम, भ्रामरी प्राणायाम, ओमकार का उच्चारण वशिष्ठ प्राणायाम लाभकारी होता है। उन्होंने बताया कि फेफड़ों को मजबूत करने के लिए भुजंगासन, उष्ट्रासन, पेट के लिए नौकासन लाभकारी होता है। उन्होंने बताया कि सूर्य नमस्कार शरीर के सभी अंगो के लिए लाभकारी होता है।

5 वर्ष के आयु में जुड़ी योग से प्रिया भट्टाचार्य ने बताया कि जब वो 5 साल की की थी तब से वो योग साधना में जुड़ी हुई हैं। शुरूआत में भक्ति योग और डांस से शुरूआत की। उन्होंने बताया कि योग के साथ डांस में 13 बार ईस्ट चैंपियन बनी। इससे पहले उन्हें झारखंड कल्चरल एसोसिएशन से योग साइंस का कोर्स करने के लिए ऑफर मिला। उन्होंने कोर्स करने के बाद सोचा कि क्यों न इस विधा को जरूरमंदों को सिखाया जाये। आगे उन्होंने बताया कि 2016 में पेट से सबंधित गंभीर बीमारी से ग्रस्त हो गयी थी, उस समय योग व डांस से बहुत दूर हो गयी थी। लेकिन उस समय हार नहीं मानी वो योग को गंभीरता से लेते हुए रिसर्च किया। योग से होने वाला लाभ को बारीकी से समझा और इसे आजमाया। सही टेक्निक और धैर्य से योग प्राणायाम करने से जल्द ही परिणाम देखने को मिलने लगे। उन्होंने बताया कि स्वयं की शरीरिक समस्या को देखते हुए दूसरे के स्वास्थ्य लाभ के लिए उन्होंने चैरिटी की शुरूआत की। उन्होंने बताया कि ऐसे बच्चें जो शारीरिक रूप से कमजोर है या किसी अन्य बीमारी से पीड़ित हैं उनके लिए योग चैरिटी बहुत लाभकारी साबित हो रहा है।

## योग से कई गंभीर बीमारियां हो जाती ठीक

योग शिक्षक अरविंद प्रसाद

शहर के जाने-माने योग शिक्षक अरविंद प्रसाद ने बताया कि योग एक पूर्ण चिकित्सा पद्धति है, जिससे दुनिया की सारी बीमारियों को ठीक किया जा सकता है। शर्तें केवल एक ही है कि नियमित और सही विधि से योगाभ्यास होना चाहिए। योग का शरीर पर शत प्रतिशत लाभ तभी होगा जब आप सही विधि से योगाभ्यास कर रहें है। ऐसे तो योग से फायदा तो होगा ही, इसका कोई साइड इफेक्ट नहीं है, लेकिन यह भी समझना जरूरी है कि बीमारी की दृष्टि से क्या क्या करना चाहिए। इसलिए सही योगगुरु होना चाहिए, केवल हाथ पैर हिला देने से योग नहीं हो जाता। योग के बारे में बोला जाता है - न तस्य रोगो न जरा मृत्यु, मतलब योग से रोग तो दूर होगा ही, इसमें किंतु परंतु नहीं। साथ ही उसे बुढ़ापा और मृत्यु का भय भी नहीं होगा। योगाभ्यास नियमित करने से आचार, विचार, व्यवहार, खान पान आदि में स्वतः परिवर्तन होता है, अगर परिवर्तन नहीं हो रहा है, तो इसका सीधा मतलब है कि योग करने की सही विधि नहीं है। अतः योग नियमित और सही विधि से मन लगाकर किया जाय तो, दुनिया का ऐसा कोई रोग नहीं,जो ठीक नहीं हो सकता है। अरविंद प्रसाद ने बताया कि मैं सुबह शाम नियमित जेआरडी स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में योग कराता हूं और मैं अनगिनत लोगों के बीमारियों को ठीक किया हूं। मेरा केवल एक ही शर्त रहता है कि मेरे साथ,मेरे सानिध्य में नियमित और मन लगाकर करना होगा।

# निमरत कौर ने पूरी की सेक्शन 84

## अमिताभ के साथ को प्रकृति की शक्ति बताया

अभिनेत्री निमरत कौर ने अमिताभ बच्चन अभिनीत फिल्म सेक्शन 84 की शूटिंग पूरी कर ली है। शूटिंग खत्म होने पर उन्होंने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर फोटो शेयर करने के साथ ही सेक्शन 84 की टीम के लिए एक इमोशनल नोट भी लिखा है।
मेरी दो सबसे पसंदीदा ध्वनियों – एक्शन और कट के पहले, बीच और बाद में मैंने जो महसूस किया, उसे समझाने के लिए कोई भी शब्द कभी भी पर्याप्त नहीं होगा, आज से ठीक 2 महीने पहले सेक्शन 84 के सेट पर कॉल किया गया था। अपने कैप्शन में, उसने इसकी तुलना एक मनोरम पुस्तक के अंतिम पृष्ठ पर पहुंचने की भावना से की, जिसे कोई कभी समाप्त नहीं करना चाहता। निमरत ने कृतज्ञता, आजीवन सबक, अलगाव की चिंता, और महान अमिताभ बच्चन के साथ स्क्रीन साझा करने का अनूठा अनुभव का वर्णन किया, जिसे उन्होंने प्रकृति की शक्ति के रूप में संदर्भित किया। एयरलिफ्ट अभिनेत्री ने आगे स्वीकार किया कि अनुभव के कुछ पहलुओं को शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता है और अपने दिल में हमेशा के लिए यादों को संजोने का इरादा व्यक्त किया। निम्रत ने निर्देशक रिभु दासगुप्ता के प्रति भी आभार व्यक्त किया कि उन्होंने उन्हें इस चमत्कारिक और रहस्यमय साहसिक कार्य का हिस्सा बनने का अवसर दिया और इसे अपने करियर में एक मील का पत्थर बताया। उन्होंने ज़ोया के चरित्र को सौंपने के लिए रिभु दासगुप्ता को अपना शाश्वत आभार और प्यार व्यक्त किया। उसने यह कहते हुए नोट को समाप्त किया, इस प्रक्रिया को संभव बनाने वाले हर एक व्यक्ति को एक बहुत बड़ा धन्यवाद, सुचारू रूप से, सावधानी से सोचा गया, और कोई फर्क नहीं पड़ता कि सेट के लिए हमेशा एक शांत, खुश, खुशहाल जगह है !!! 41 वर्षीय अभिनेत्री को हाल ही में डिज्नी+ हॉटस्टार सीरीज़ स्कूल ऑफ़ लाइज़ में देखा गया था। सेक्शन 84 के अलावा, उनके पास मैडॉक फिल्म्स की एक फिल्म भी है, जो इस साल शिक्षक दिवस के अवसर पर रिलीज होने वाली है।

# सनी लियोनी बिग बॉस ओटीटी सीजन 2 में आएंगी नजर

बॉलीवुड एक्ट्रेस सनी लियोनी, जिनकी फिल्म केनेडी ने हाल ही में कान फिल्म फेस्टिवल में धमाल मचाया, बिग बॉस ओटीटी सीजन 2 में नजर आने वाली हैं। एक्ट्रेस शो के 5वें सीजन के दौरान टीवी काउंटरपार्ट में एक कंटेस्टेंट थीं, जहां से उन्होंने अपनी बॉलीवुड जर्नी शुरू की थी। बिग बॉस में अपनी एंट्री को लेकर सनी लियोन ने कहा, बिग बॉस ओटीटी में आना मेरे लिए घर वापसी जैसा होगा। यह मेरे करियर के महत्वपूर्ण मोड़ में से एक है। मैं शो को करीब से देख रही हूं और इसे अगले लेवल पर ले जाने के लिए पूरी तरह से तैयार हूं। तो, इंतजार करें और देखें, मौसम बदलने वाला है। बिग बॉस सीजन 5 में आने के बाद, सनी ने कुछ गानों और फिल्मों में काम किया। शो के फैंस अनुमान लगा रहे हैं कि क्या सनी लियोनी सरप्राइज कंटेस्टेंट के तौर पर शो में एंट्री कर रही हैं या वह सिर्फ बॉलीवुड सुपरस्टार सलमान खान के साथ को-होस्ट होंगी।

# फिल्मों और कॉमेडी शो के साथ कपिल शर्मा ने शुरू किया ये नया काम

कॉमेडी किंग कपिल शर्मा अपनी मजेदार बातों से हर किसी के चेहरे पर मुस्कान ले आते हैं, दर्शक उनके हर अदांज को बेहद पसंद करते हैं। कॉमेडी शो के साथ कपिल शर्मा को फैंस फिल्मों में भी देख चुके हैं, वहीं अब कपिल ने अपना एक और नया काम शुरू कर दिया है। हाल ही में कपिल शर्मा ने अपना पहला व्लॉग शेयर किया है, जिसमें उन्होने अपने दिन की शुरूआत से लेकर फिल्म सिटी जाने के बारे में बताया है। इर दौरान एक्टर कहते हैं कि मैंने व्लॉग बनाना इसीलिए शुरू किया है क्योंकि खर्चे पूरे नहीं हो रहे हैं।

### कॉमेडी के साथ कपिल शर्मा ने शुरू किया ये काम

बता दें कि कपिल शर्मा ने अपने पहले व्लॉग में फिल्म सिटी से लेकर अपने शो तक की झलक शेयर की है। जिसमें वह विक्की कौशल और सारा अली खान के साथ शूटिंग कर रहे हैं। ऐसे में कपिल ने अपने शो द कपिल शर्मा शो के बैक स्टेज वर्क के बारे में भी बताया है। अपने शो का सेट दिखाने के बाद कपिल ने बताया कि विक्की और सारा ने उनके शो की शूटिंग लेट करवा दी थी। कपिल के इस व्लॉग को फैंस भी काफी पसंद कर रहे हैं और जमकर अपने रिएक्शन दे रहे है। एक यूजर ने लिखा हाहा सुपर्ब पाजी, ऐसे ही व्लॉग हमें और चाहिए। वहीं एक दूसरे यूजर ने लिखा कि अक्षय तो यूं ही बदनाम हैं पैसे तो ये बना रहे हैं। एक अन्य यूजर ने लिखा 15 साल की धक्का मुक्की, एक व्लॉग में।

# शरमन जोशी के कफस का टीजर हुआ रिलीज

बॉलीवुड के दिग्गज अभिनेता शरमन जोशी अपने अभिनय के अलावा अपनी फिल्मों को लेकर भी खूब सुर्खियां बटोरते हैं। इन दिनों अभिनेता अपने अपकमिंग प्रोजेक्ट को लेकर चर्चा में चल रहे हैं। शरमन की आगामी वेब सीरीज 'कफस' का टीजर रिलीज हो चुका है। रिलीज होने के बाद से ही अभिनेता की वेब सीरीज का यह टीजर सोशल मीडिया पर तहलका मचा रहा है। वेब सीरीज 'कफस' में शरमन के अलावा मोना सिंह भी मुख्य भूमिका में नजर आने वाली हैं। शरमन स्टारर इस वेब सीरीज का टीजर बेहद अलग तरीके से रिलीज किया गया है। शरमन ने अपने सोशल मीडिया प्रोफाइल पर एक मिनट का वीडियो पोस्ट करते हुए सभी के होश उड़ा दिए हैं। इस टीजर के लॉन्च होने के बाद फैंस वेब सीरीज के रिलीज होने का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। अभिनेता शरमन के अलावा इस वेब सीरीज की लीड एक्ट्रेस मोना ने भी अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर एक वीडियो पोस्ट किया है। इस वीडियो में अभिनेत्री काफी ज्यादा घबराई नजर आ रही हैं। अभिनेत्री ने वीडियो को साझा करते हुए इसके कैप्शन में लिखा, 'मुझे चुप रहने के पैसे दिए गए हैं। मैं आपको कुछ बताना चाहती हूं। पर मुझे माफ कर दीजिए। मैंने चुप रहने के पैसे लिए हैं। बता दें कि टीजर की शुरुआत में मोना काफी डरी हुई नजर आती है। वह किचन में काम करती हैं और उनके चेहरे पर घबराहट साफ तौर पर देखी जा सकती है। इस सीन के खत्म होने के बाद मोना कहती है, 'अब नहीं होगा। अब नहीं होगा सॉरी।' इतना कहने के तुरंत बाद ही मोना अपने मुंह पर टेप लगा लेती हैं। एक मिनट के इस टीजर में फुल सस्पेंस रखा गया है। ऑडियंस भी अब वेब सीरीज को देखने का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। शरमन के इस वेब सीरीज के टीजर के बाद अब फैंस इस सस्पेंस फुल वेब सीरीज को देखने का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। कफस के टीजर को उर्फी जावेद और शहरान गिल समेत कई बॉलीवुड सेलेब्स और सोशल मीडिया इंफ्लुएंसर्स ने अपनी स्टोरी में पोस्ट किया है।



# साहिर लुधियानवी बनेंगे अभिषेक बच्चन

अभिषेक बच्चन जहां एक ओर ऐश्वर्या राय बच्चन और बेटी अराध्या के साथ वेकेशन पर रवाना हुए हैं, वहीं संजय लीला भंसाली से साफ शब्दों में कहा है कि महान शायर साहिर लुधियानवी की बोयापिक में वह सिर्फ और सिर्फ अभिषेक बच्चन को ही अपने साहिर के रूप में देखते हैं। बीते करीब तीन साल से यह चर्चा है कि संजय लीला भंसाली हिंदी और उर्दू के महान शायर-गीतकार साहिर लुधियानवी पर बायोपिक बना रहे हैं। इस फिल्म का आइडिया भंसाली के दिमाग में बीते 9 साल से कौंध रहा है। इस बायोपिक में लीड रोल के लिए शाहरुख खान से लेकर दिवंगत इरफान अभिषेक बच्चन और फरहान अख्तर तक का नाम सामने आया। फिर बीते दिनों यह भी खबर आई कि यह फिल्म डिब्बाबंद हो गई है। लेकिन अब संजय लीला भंसाली ने साफ कर दिया है कि इस प्रोजेक्ट को शेल्व नहीं किया गया है। इतना ही नहीं, अपने परफेक्शन के लिए मशहूर भंसाली ने साफ शब्दों में यह कहा है कि यदि कोई पर्दे पर उनके लिए साहिर लुधियानवी बन सकता है, तो वो सिर्फ अभिषेक बच्चन ही हैं। भंसाली ने बताया है कि वह 2023 में इस फिल्म की शूटिंग शुरू करेंगे। उन्होंने कहा, साहिर पर फिल्म सिर्फ और सिर्फ अभिषेक बच्चन के साथ ही बनेगी, और दूसरा कोई एक्टर नहीं। भंसाली की साहिर लुधियानवी बायोपिक में अमृता प्रीतम के किरदार को लेकर प्रियंका चोपड़ा का नाम सामने आया था। प्रियंका को यह रोल ऑफर भी किया गया, लेकिन बताया जाता है कि एक्ट्रेस ने लीड रोल में अभिषेक बच्चन के अलावा दूसरे किसी एक्टर को कास्ट करने की सलाह दी। लेकिन अब भंसाली की बातों से स्पष्ट है कि हर बार की तरह ही इस बार भी वह अपनी फिल्म की कास्टिंग से कोई समझौता नहीं करने वाले हैं। वैसे, प्रियंका चोपड़ा के अलावा फिल्म में अमृता प्रीतम का किरदार निभाने के लिए करीना कपूर और तापसी पन्नू के नाम की भी चर्चा है। फिल्म की कहानी अमृता प्रीतम और साहिर लुधियानवी के मोहब्बत की दास्तान होगी। उम्मीद यही है कि संजय लीला भंसाली जल्द ही अपनी इस नई बायोपिक फिल्म की कास्ट के बारे में बाकी ऐलान करेंगे। वैसे, संजय लीला भंसाली की आखिरी फिल्म गंगूबाई काठियावाड़ी भी बायोपिक थी। इस फिल्म में आलिया भट्ट ने लीड रोल प्ले किया था और यह बॉक्स ऑफिस पर 100 करोड़ क्लब में शामिल हुई थी।

# मैं शादी करना चाहती हूं : कंगना

एक्ट्रेस कंगना रनौत बॉलीवुड की दमदार एक्ट्रेसेस में से एक हैं। वह 36 साल की हो गई हैं, लेकिन अभी तक एक्ट्रेस ने शादी नहीं की। अब हाल ही धाकड़ गर्ल ने अपनी अपमकिंग फिल्म टीकू वेड्स शेरू के प्रमोशन के बीच अपनी शादी की प्लानिंग के बारे में खुलकर बात की। कंगना रनौत ने कहा, हर चीज का एक समय होता है और अगर वह समय मेरी जिंदगी में आना है तो आएगा। मैं शादी करना चाहती हूं और मेरा अपना परिवार है... लेकिन, यह सही समय पर होगा। कंगना ने बताया कि उन्हें लाइफ पार्टनर की बहुत ज्यादा कमी फील नहीं होती। 100 में से सिर्फ पांच प्रतिशत ही उन्हें कमी महसूस होती है। कंगना ने अपने बचपन के एक किस्से को शेयर करते हुए कहा कि उनकी मां ने बचपन से ही उन पर शादी का प्रेशर डाल रखा था। उनकी मां तो यह तक कह देती थीं कि अगर तुम यह फिल्में और मॉडलिंग वगैरह करोगी तो तुमसे शादी कौन करेगा। लड़का मिलना काफी मुश्किल हो जाएगा। लाइफ पार्टनर को लेकर कंगना ने अपनी इच्छा जाहिर करते हुए कहा कि वह एक ऐसा लाइफ पार्टनर चाहती हैं, जो उनकी पर्सनालिटी को निखारे, जो उन्हें कमतर महसूस न कराए और उनके आउटस्पोकन अंदाज को और खास बनाए। काम की बात करें तो कंगना रनौत के प्रोडक्शन हाउस में बन रही फिल्म 'टीकू वेड्स शेरू' 23 जून को ओटीटी प्लेटफॉर्म पर रिलीज होगी। साई कबीर श्रीवास्तव द्वारा निर्देशित इस फिल्म में नवाजुद्दीन सिद्दीकी और अवनीत कौर मुख्य भूमिकाओं में हैं।

# बॉलीवुड में होने वाले भेदभाव से परेशान हैं तापसी?

अभिनेत्री तापसी पन्नू की पहली हिंदी फिल्म साल 2013 में चश्मे बद्दूर आई थी। इस फिल्म के रिलीज के बाद से अभिनेत्री ने अब हिंदी सिनेमा में अपने 10 साल पूरे कर लिए हैं। उन्होंने पिंक, थप्पड़ और मुल्क जैसे फिल्मों के जरिए दर्शकों का मनोरंजन किया। बॉलीवुड में एक आउटसाइडर होने के नाते अभिनेत्री ने अब बॉलीवुड शिविरों के बारे में बात की है और बताया है कि वह क्यों उनके खिलाफ कोई शिकायत नहीं रखती हैं। हाल ही में दिए इंटरव्यू में अभिनेत्री ने कहा कि हां, बॉलीवुड शिविर ऐसा कुछ नहीं है, जिसके बारे में लोग नहीं जानते हैं। यह हमेशा से वहां रहा है। यह एक कलाकार के मित्र मंडली, एक निश्चित एजेंसी या समूह के आधार पर हो सकता है कि वे एक हैं। इसका एक हिस्सा और लोगों की वफादारी, इसके आधार पर अलग-अलग होती है। हर किसी को यह अधिकार होना चाहिए कि वह जिसके साथ काम करना चाहते हैं या अपनी फिल्मों को करना चाहते हैं तो वह कर सकते हैं। मैं उन्हें अपने करियर के बारे में सोचने के लिए दोष नहीं दे सकती। बॉलीवुड में अपनी यात्रा को याद करते हुए अभिनेत्री ने कहा कि मैं कभी भी इस दृष्टिकोण के साथ नहीं आई कि फिल्म उद्योग में सब कुछ उचित होगा। मुझे हमेशा से पता था कि यह पक्षपातपूर्ण होने वाला है तो अब इसके बारे में क्यों शिकायत करें? मेरे लिए खेल का नियम यह है कि यह अनुचित ही होने जा रहा है। माहौल ज्यादातर समय आपके खिलाफ होगा और अगर उसके बाद भी आप अभी भी इस उद्योग का हिस्सा बनने का फैसला करते हैं तो यह आपकी पसंद है और आप इसके बारे में बाद में शिकायत नहीं कर सकते।